राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ८६

मुंहता नैणसी कृत

मुंहता नैणसी री ख्यात

भाग ४



प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—डाक्टर फतहसिंह

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ८६

मुंहता नैणसी री ख्यात

[चारों भागों की सम्पूर्ण विषय-सूची, भूमिका, मुंहता नैणसी और महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम का संक्षिप्त परिचय, उनके प्राचीन चित्र और तीनों भागों की बृहत् नामानुक्रमणिका, विशिष्ट पुरुषों की जन्म-कुंडलियां, पद-विरुदादि की सार्थ-नामावली और शुद्धिपत्र आदि महत्वपूर्ण विषयों के छः परिशिष्टों सहित ख्यात का परिशिष्ट भाग]

भाग ४

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

डाक्टर फतहसिंह
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

ग्रन्थाङ्क ८६

मुंहता नैणसी री ख्यात

भाग ४

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

मुंहता नैणसी री ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम के दीवान मुंहता नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान और उससे संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्यभारत आदि स्थित भूतपूर्व राज्यों का मध्यकालीन मूल इतिहास]

भाग ४

सम्पादक

आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२४	भारतराष्ट्रिय शकाब्द	खिस्ताब्द १९६७
प्रथमावृत्ति ७५०	१८८९	मूल्य ८.७५ पै०

मुद्रक – श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA—No. 86

Published by the Government of Rajasthan

A Series devoted to the publication of Saṁskrit, Prakrit, Apabhraṁsa, Old Rajasthani, Gujarati and Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

General Editor
Dr. FATAH SINGH
M.A., D. Litt.

MUNHATA NAINSI RI KHYAT

PART IV

Edited with various appendices
by
ACHARYA BADRIPRASAD SACARIYA

Published under the orders of the Government of Rajasthan.

By
The Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
[RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE]
JODHPUR (Rajasthan)

V.S. 2024] All Rights Reserved [1967 A.D.

सञ्चालकीय वक्तव्य

मेरे लिए यह सौभाग्य और हर्ष का विषय है कि आज मेरा सम्बन्ध अनायास ही राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान की उस महत्त्वपूर्ण साधना की पूर्ति से हो रहा है जो अब से सात वर्ष पूर्व, स्वनामधन्य मुनि जिनविजय की अध्यक्षता में, आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया ने प्रारम्भ की थी। १९६४ ई० तक इस ग्रन्थ का मूलभाग एक सहस्र से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित होकर, तीन भागों में पाठकों के सामने आ चुका है। प्रस्तुत चतुर्थ भाग में बयालीस पृष्ठीय भूमिका के साथ कुल २०८ पृष्ठों में ६ परिशिष्ट दिये गये हैं। कुल मिलाकर १२०० से भी अधिक पृष्ठों में समाप्त होने वाली यह "मुंहता नैणसीरी ख्यात" आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया के उस अथक परिश्रम, अदम्य उत्साह एवं अनुपम धैर्य का प्रतीक है जिसने विघ्न-बाधाओं के सामने कभी हार मानना नहीं सीखा।

खेद है कि सम्पादक महोदय के 'एक ख्याति-इच्छुक मित्र' १९३४ ई० में इस ग्रंथ की प्रेस-कापी उठा ले गये जिसके फलस्वरूप इसका प्रकाशन उस समय न हो सका। अस्तु, संपूर्ण ग्रंथ में साकरिया जी के अगाध पाण्डित्य, एवं गम्भीर अध्ययन की जो छाप दिखाई पड़ती है, उसको ध्यान में रखने से १९३४ से १९६० तक का व्यवधान कुछ सह्य हो जाता है।

इस गौरव ग्रंथ को सुसम्पादित करके आचार्य बदरीप्रसाद ने हिन्द और हिन्दी के समस्त प्रेमियों पर असीम कृपा की है; अतः इस महान् कार्य के लिए सम्पादक महोदय को समाज और देश जो सम्मान प्रदान करे वह थोड़ा है। ग्रंथ का महत्त्व उसके कलेवर में नहीं, अपितु उस लौकिकता एवं अर्थपरायणता में है जिसको इस ग्रंथ में प्रमुखता दी गई है और जो हमारे विचारकों एवं मनीषियों की दृष्टि में उससे पूर्व गौण हा नहीं प्रायः उपेक्षित हो गई थी। "सुखस्य मूलम् अर्थः" को भुलाकर धर्म और मोक्ष की उपासना असम्भव है।

ग्रंथ के अन्त में जो लम्बा शुद्धि-पत्र देना आवश्यक हो गया है उसके लिए मैं प्रेस, प्रूफ-रीडर और प्रकाशक की ओर से सम्पादक और पाठक से क्षमा-याचना करता हूँ।

सम्पादक महोदय ने कई प्रतियों से मिलान करके ग्रन्थ का वर्तमान पाठ निर्धारित किया है। यदि पाद-टिप्पणियों में पाठान्तरों का समावेश होसकता, तो वर्तमान संस्करण का मूल्य और अधिक बढ़ जाता, परन्तु अब अतीत पर पश्चाताप करना व्यर्थ है।

आशा है कि लौकिक जीवन के अध्ययन में रुचि रखने वाले व्यक्ति इससे प्रेरणा ग्रहण करके हमारी वर्तमान आर्थिक समस्याओं का, उसी तत्परता और लगन से अध्ययन करेंगे जिससे इतिहास, समाजशास्त्र, भाषाविज्ञान आदि के विद्यार्थी "मुंहता नैणसीरी ख्यात" का उपयोग अपने-अपने विषय के लिए करेंगे।

जय हिन्द; जय हिन्दी

गुरु पूर्णिमा, २०२४
जोधपुर.

फतहसिंह
एम.ए., डी.लिट्.

विषयानुक्रमणिका

—०—

मुंहता नैणसी री ख्यात के चारों भागों की संपूर्ण विषय - सूची

भाग १

२. बूंदी रा धणियां री ख्यात

३. वात सिरोही रा धणियां री

४. भायलां रजपूतां री ख्यात

५. कछवाहां री ख्यात

६. सोढां री ख्यात

भाग २

७. ख्यात भाटियां री

८. राठोड़ां री ख्यात

भाग २

राठोड़ां री ख्यात (द्वि. भा. सूं चालू)

[चौथे भाग की विषय-सूची के लिए
कृपया पृष्ठ उलटिये]

भाग ४

॥ ॐ शिव ॥

भूमिका

राजस्थान वीरों और सतियों का देश है। इसकी मिट्टी का कण-कण जीवनी-शक्ति का स्रोत है। सहस्रों अप्रतिम शूरवीरों के ओजस्वित रक्त की असंख्य भावनाओं और अनगिनत सतियों के जौहर की पावन भस्म के योग से उसमें वह जीवनी-शक्ति समाई हुई है कि जिसके दर्शन मात्र से मुर्दा दिलों में शूरत्व उत्पन्न हो जाता है। वह जीवन की सार्थकता और अनोखे जीवट की एक संजीवनी है। उसमें जीवन की निस्पृहता, सहनशीलता, दृढ़ता और कठोरता के साथ भावोद्रेकता और मानवीय संवेदना की सुषमा ओतप्रोत है। राजस्थान की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इसका इतिहास स्वयं युद्ध-कला के विशारद मातृभक्त वीरों ने खड्ग-लेखनी की नोक से अपनी रक्त-मसि द्वारा चित्रित किया है। यह असंख्य सती वीरांगनाओं के जौहर-यज्ञों और वीरों के मरणोत्सवों (अभूतपूर्व और अगणित नारी और नरमेधों) का इतिहास है। जीना है मरने के लिये और मरना है जीने के लिये—इस रहस्यमय जीवन-मरण विज्ञान के नित्य व्यवहार और प्रत्यक्ष उदाहरणों की अनुभूति राजस्थान का इतिहास है। वीरों के समान ही युग-युगों तक आत्मज्ञानोपदेश और पथप्रदर्शन करने वाले अनेकों ज्ञानी-भक्त और कवि-कुसुम यहाँ प्रफुल्लित हुए हैं, जिनकी मधुर सुवास विश्व-साहित्य में अजोड़ है। ऐसे वीरों, भक्तों और कवियों का राजस्थानी साहित्य प्रत्येक दिशा में आगे बढ़ा हुआ है। राजस्थानी साहित्य गद्य (ख्यात, वात, हकीकत, वचनिका इत्यादि) और पद्य की अनेक शैलियां अपनी मौलिकता के लिये प्रसिद्ध हैं। इन सभी परंपराओं में अनेक उत्कृष्ट कोटि की रचनाओं का सृजन हुआ है। अनेक विद्वानों ने इस भाषा की सम्पन्नता व साहित्य के वैशिष्ट्य पर अनूठे उद्गार प्रकट किये हैं[१]।

---

१. (अ) Rajasthani is the language of a brave and heroic people. Rajasthani literature is a literature of chivalry. Its place among the literatures of the world is unique. Its study should be made compulsory for the youth of modern India. The work of the

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख भाषा मारवाड़ी है, जिसका प्राचीन नाम मरुभाषा है[२]। इसी मारवाड़ी भाषा में लिखा गया अपरिमित गद्य-पद्यमय साहित्य राजस्थान का ही नहीं, अपितु समस्त भारत का मौलिक और गौरवपूर्ण साहित्य है। इसमें ख्यात साहित्य अपना विशिष्ट स्थान रखता है। ख्यात-

---

revival of the soul-inspiring literature and its language is absolutely necessary. ......I am eagerly looking for the day when a ful-fledged department of Rajasthani will be established at the Benares Hindu University where complete facilities will be provided for teaching and research work in Rajasthani literature.

—Pandit Madan Mohan Malaviya

(आ) They are the natural out-burst of the people. I regard them as superior even to the Sant poetry. How nice it would be if they were published ? Any language and literature of the world could well be proud of them. God willing I shall have them published from the Hindi Bhawan of Shanti Niketan. I shall try my best to place Rajasthani literature before the Indian public through the Hindi Bhawan.

—Rabindra Nath Tagore

(इ) The area which Rajasthani is spoken is bigger than that of any other Indian language except Hindi. It is bigger, too, than many countries of the world such as Great Britain, Eire, Romania, Poland, Greece, Norway, Iraq and Italy.

—Sir G.A. Grierson

(ई) The number of people who speak Rajasthani is nearly two crores. It has got more speakers than many important language of India and the world such as Gujarati, Kanarese, Assamese, Oriya, Malayalam, Sindhi, Pashto, Burmese, Siamese, Singhali, Greek, Turkish and Iranian.

—Hindustan Year Book for 1943, p. 159

२. आठवीं शती के प्रसिद्ध प्राकृत ग्रंथ कुवलयमाला में भारत की १८ भाषाओं में मरुभाषा को भी गिनाया गया है। अबुलफजल ने भी अपने इतिहास ग्रंथ आइन-इ-अकबरी में मारवाड़ी भाषा का स्थान अपने समय की समस्त भाषाओं में महत्वपूर्ण बताया है। अपभ्रंश की परम्पराओं का सीधा संबंध इसी भाषा में सुरक्षित मिलता है।

साहित्य ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है, किन्तु साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी इन ख्यातों का महत्त्व बहुत अधिक है।

'ख्यात' शब्द

राजस्थानी में 'ख्यात' शब्द प्राय: इतिहास के पर्याय के रूप में ही प्रयुक्त होता रहा है। 'ख्यात' मूलतया संस्कृत भाषा का शब्द है। यह 'ख्या'-प्रकथने धातु से 'क्त' प्रत्यय होने पर निष्पन्न होता है। संस्कृत भाषा में मुख्यत: इस शब्द के ये अर्थ प्राप्त हैं—

१. ख्यातिप्राप्त या लब्धनाम।
२. आहूत या आवाहित।
३. विदित या परिज्ञात।
४. कीर्त्तिमान या सुप्रसिद्ध।
५. उक्त या ज्ञप्त।
६. अभिहित या नाम दिया हुआ। और
७. प्रख्यात या लोक-विश्रुत आदि[3]।

किन्तु उत्तर मध्य-कालीन राजस्थान के इतिहास के लेखकों ने 'ख्यात' शब्द को ही और अधिक विस्तृत अर्थ का व्यंजक बना कर प्रयुक्त किया है। उन्होंने इसे इतिहास (इति+ह+आस=पिछली घटनाओं का परम्परागत विवरण),

---

३. देखिये संस्कृत, हिन्दी, गुजराती और मराठी शब्दकोश—

(१) मोनियर विलियम्स	:	संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी, न्यू एडीशन
(२) जे०टी० मोलेस्वर्थ	:	मराठी-इंगलिश डिक्शनरी, दूसरा संस्करण १८५७ ई०
(३) एन०वी० रानाडे	:	" " १९११ ई०
(४) द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी	:	संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ
(५) गि०शं० महता	:	संस्कृत गुजराती शब्दादर्श १९२९ ई०
(६) पन्यास मुक्तिविजयजी	:	शब्द रत्न महोदधि संवत् १९९३
(७) अमरकोश		
(८) अभिधान चिन्तामणि कोश		

हिन्दी शब्दकोशों में 'ख्यात' शब्द के अर्थ—१. प्रसिद्ध २. कथित ३. वह कविता जिसमें योद्धाओं का यशोगान हो आदि आदि।

गुजराती कोशों में—१. कथन २. कथा ३. घोषणा ४. कहेलुं ५. जाणीतुं आदि।

मराठी कोशों में—१. पराक्रम २. कीर्त्ति ३. प्रसिद्धि आदि, और

प्राकृत कोशों में—विश्रुत, प्रसिध्द आदि।

ऐतिह्य (पौराणिक वृत्तांत), और इतिवृत्त (= विशिष्ट घटनाएं) आदि का व्यंजक माना और तदनुकूल 'ख्यात' शब्द का प्रयोग किया।

ख्यात शब्द का आधुनिक इतिहासकारों ने इतना व्यापक अर्थ न लेकर, इसके स्थान पर 'इतिहास' शब्द को ही अपना लिया, फलतः वह तत्कालीन राजस्थान के इतिहास-लेखकों की अपनी ही वस्तु रह गई। फिर भी इस 'ख्यात' शब्द को लेकर जो ऐतिहासिक साहित्य रचा गया है, उसका इतिहास-कारों की दृष्टि में महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है, और वह उनके लिये शोध की अमूल्य निधि है।

ख्यात-साहित्य का महत्व

यद्यपि देश के इतिहास और उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं को आज एक नये दृष्टिकोण से सोचने और विचारने की आवश्यकता है। केवल राजाओं और नवाबों आदि शासकों के माध्यम से देश के इतिहास को लिखने और उस परम्परा-दृष्टि से उस पर विचार करने का अब उतना महत्व नहीं रहा, तथापि उनके काल में जो इतिहास निर्माण हुआ है, वह एक अभूतपूर्व संक्रान्ति काल का इतिहास है। देश की राजनीति और सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराओं पर उसका अमिट प्रभाव है। वह अत्यन्त महत्वपूर्ण और चिरस्मरणीय काल था। इसके कारण देश में एक नया मोड़ आया, अतएव इस काल में घटी घटनाओं को किसी भी प्रकार आंखों से ओझल नहीं किया जा सकता। ख्यात साहित्य में वर्णित ये सभी घटनाएँ हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक चेतना को वर्तमान और आने वाले युग के अनुकूल बनाये रखने के लिये नितान्त उपयोगी हैं।

सामन्तशाही की कुत्सित भावनाओं के कुछेक वर्णनों और घटनाओं को यदि हम उस काल के इतिहास में मुजरा करके देखें तो तत्कालीन सामन्त व उनके साथ के इतर वर्ग की देश-भक्ति, त्याग, ऐश्वर्य और उज्वल चरित्र आदि मानव-आदर्श और उनके काल की अनुपम वास्तु-कला, संगीत, शिल्प और विज्ञान आदि की प्रगति के वर्णन हमें अपनी संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत की पुनरावृत्ति कराते हुए दिखाई पड़ते हैं। तभी हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि सांस्कृतिक निधि की यह अमूल्य ऐतिहासिक सामग्री हमारी परम्परा के अनुकूल नव-इतिहास-निर्माण का एक आवश्यक आधार है।

हमारी सभ्यता और संस्कृति का मूलाधार हमारा अद्वितीय सरस्वती-भण्डार, जो संसार में सभ्यता का एक मात्र भण्डार और बीज रूप था—उसके

लिये एक घोर संवर्तक-काल आया और उसे अमानवीय कृत्यों और तरीकों द्वारा नष्ट किया गया। आज उसका सहस्रांश भी शेष नहीं है। किन्तु जो कुछ जितना, जैसी भी अवस्था में और जिस किसी भी प्रकार बचा रह गया, उसी के कारण हम और हमारी शताब्दियों से लड़खड़ाती हुई संस्कृति आज भी जीवित है।[४] उसे अब तत्वज्ञ और मनीषियों की संजीवनी वाणी और लेखनी द्वारा नवजीवन प्रदान करने के अनेकत्र प्रयत्न किये जाने लगे हैं।

अनेक शोध और प्रकाशक संस्थाएँ इस क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य सम्पादन में लगी हैं। उनमें प्रमुख राजस्थान सरकार द्वारा महान् पुरातत्वाचार्य पद्मश्री मुनि श्री जिनविजयजी के निर्देशन में संस्थापित 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर' है। इस संस्था ने अपने शैशव काल में ही अनुपलक्षित साहित्य-निधि के अनेक रत्नों को प्रकाशित किया है और प्रकाशित करने में तत्पर है। उन्हीं प्रकाशनों में ख्यात-साहित्य का सर्वोपरि ग्रन्थ—राजस्थान, मालवा, गुजरात, सोराष्ट्र, कच्छ और सिन्ध आदि का लोक-विश्रुत इतिहास और अन्य विविध विषयों से युक्त यह 'मुंहता नैणसी री ख्यात' नामक साहित्य है।

इस ख्यात का महत्व

'मुंहता नैणसी री ख्यात[५]' जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान और ओसवाल जाति के प्रसिद्ध मोहणोत वंश के विख्यात मुंहता नैणसी जयमलोत द्वारा रचा गया राजस्थान की प्रसिद्ध मारवाड़ी भाषा का अपनी कोटि का अनूठा मध्यकालीन इतिहास-ग्रंथ है। राजस्थान के भूतपूर्व देशी

---

४. 'दीपै वांरो देस, ज्यांरो साहित जगमगै।' [जिनका साहित्य सर्वतोमुखी प्रकाशमान है, उन्हीं का देश अपनी संस्कृति की परंपरा को सदा उन्नत बनाये रह कर संसार में शोभा पाता है।]

—स्व० श्री उदयराज उज्ज्वल

५. 'मुंहता नैणसी री ख्यात' इस ग्रंथाभिधान का अर्थ यद्यपि इस भूमिका को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है, तथापि इसकी 'री' विभक्ति के इस प्रकार के अन्य ख्यात ग्रन्थों के नामों की तुलना में इस ग्रन्थ के नाम की 'री' विभक्ति का औचित्य और संगति किस प्रकार है, स्पष्ट करने की आवश्यकता है। 'राठोड़ां री ख्यात'=राठोड़ वंश की ख्यात या इतिहास, 'मेवाड़ री ख्यात' मेवाड़ राज्य का इतिहास' में 'री' विभक्ति का अर्थ 'की' या 'संबंधित' है। पर यहां इस 'री' विभक्ति का अर्थ 'की' या 'संबंधित' न होकर 'के द्वारा लिखी गई' होता है। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' = 'मुंहता नैणसी द्वारा लिखी हुई ख्यात या इतिहास ग्रन्थ' होता है।

राज्यों में ख्यात के नाम से अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं, उन सब में 'मुंहता नैणसी री ख्यात' बहुत महत्व की है[६]। इतिहास के सभी विद्वान् अन्य ख्यातों की अपेक्षा इसे अधिक विश्वस्त मानते हैं। स्व० म० म० रायबहादुर गौरीशंकर ही० ओझा ने अपने इतिहास-ग्रन्थों में और स्व० रामनारायण दूगड़ द्वारा किये गये इसके हिन्दी अनुवाद के दोनों खण्डों की भूमिकाओं में ठौर-ठौर इस ख्यात की प्रशंसा की है और राजस्थान का पिछला इतिहास लिखने के लिये इसे बहुत महत्त्वपूर्ण और विश्वस्त बतलाया है।[७] मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ ने तो नैणसी को 'राजस्थान का अबुलफजल' और उनकी लिखी हुई इस ख्यात को 'आईन-इ-अकबरी' की कोटि का इतिहास-ग्रन्थ कहा है[८]।

---

६. इस ख्यात के महत्व का इसी से पता लग जाता है कि इस संस्करण के पूर्व इसके दो संस्करण और प्रकाशित हो चुके हैं। एक संस्करण स्व० श्री रामकर्णजी आसोपा द्वारा मूल रूप में उनके निज के रामश्याम प्रेस में मुद्रित होकर उन्हीं की ओर से प्रकाशित किया जा रहा था, परन्तु वह सम्पूर्ण नहीं हो सका था। दूसरा संस्करण स्व० श्री रामनारायणजी दूगड़ का हिन्दी अनुवाद है, जो स्व० श्री गौ० ही० ओझा द्वारा सम्पादित होकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से दो भागों में प्रकाशित हुआ है। पहला भाग सं० १९८२ वि० में और दूसरा इसके ९ वर्ष बाद सम्वत् १९९१ में प्रकाशित हुआ है।

इनसे भी अधिक महत्व की बात यह है कि नैणसी के बाद की लिखी हुई ख्यातों का आधार भी प्राय: नैणसी री ख्यात ही रही हुई मालूम होता है। उनमें अनेक प्रसंग नैणसी री ख्यात के यों के यों उद्धृत कर लिये हैं। उदाहरण के तौर पर दयाळदास री ख्यात, जिसके प्रकाशित संस्करण दू. भाग [पहला भाग प्रकाशित नहीं हुआ] के अनेक स्थलों में से दो एक प्रसंगों की ओर संकेत करना काफी होगा।

नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ० १३ और दयालदास री ख्यात पृ० ८
,, ,, ,, ३ ,, ९४ ,, ,, ,, ,, ६५
,, ,, ,, ३ ,, १२०-१२१ ,, ,, ८२, २६८ इत्यादि।

७. वि. सं. १३०० के आसपास से लगा कर उसके लिखे जाने के समय तक के इतिहास के लिये नैणसी का ग्रन्थ अनुपम वस्तु है। ... ... यदि नैणसी की ख्यात देखे बिना कोई राजपूताने का इतिहास लिखने का साहस करे तो उसका ग्रन्थ कभी संतोषदायक नहीं हो सकता।

—ओझा निबंध संग्रह, तृतीय भाग, पृ. ७५

८. स्व० मुंशी देवीप्रसादजी तो नैणसी को राजपूताने का अबुलफजल कहा करते थे और उसके इतिहास पर बड़े मुग्ध थे। मुंशीजी ने अगस्त १९१६ की सरस्वती में राजस्थान-इतिहासज्ञ मूंता नैणसी की ख्यात के विषय में एक लेख छपा कर उसके महत्व का परिचय दिया था।

—ओझा निबंध संग्रह, तृतीय भाग, पृ० ७४

प्रस्तुत ख्यात का सर्वाधिक महत्त्व इस बात में भी है कि नैणसी ने ख्यात में प्राप्त समस्त सामग्री साभार स्वीकार की है। उन्होंने लिखने वाले, भेजने वाले, सुनाने और लिखने वालों के नाम ही नहीं लिखे, अपितु कहीं-कहीं तो उनका पूरा परिचय, सम्वत्, मिती और स्थान आदि के नाम भी दे दिये हैं। उनमें कई प्रसिद्ध डिंगल-कवि और चारणजन हैं[९]।

---

९. (१) पोकरणा ब्राह्मण कवीसर जसवंत रो भाई जोशी महेशदास।
(२) मुंहतो लखो, सं० १७०० माह वदी ९ मेड़ते में जैसलमेर रो हाल लिखायो।
(३) आढो महेसदास छत्राळा भाटियां री वात, सं० १७०६ फागण सुदी १५ री लिखाई, सं० १७२१ माह मांहे लिख मेली।
(४) मुंहते नरसिंघदास जैमलोत (नैणसी रो भाई) डूंगरपुर में रावळ पूंजा रै करायोड़ो देहरा री प्रशस्ति लिख मेली, संमत १७०७ में।
(५) बूंदेला सुभकरण रै चाकर चक्रसेन मंडाई, सं० १७१०।
(६) चारण आसियो गिरधर सं० १७१९ रा भादवा सुदी ९।
(७) चारण झूलै रुद्रदास भांण रै सांइया झूला रे पोतरै कही, संमत १७१९ रा चैत मांहे।
(८) सं० १७२१ रा जेठ मांहे रा० रामचन्द्र जगनाथोत मंडाई।
(९) खिड़ियो खींवराज सिसोदियां री चूण्डावत साखा रो वृत्तान्त लिखायो सं० १९२२ रा पोह वदी ५।
(१०) वात एक वीठू झांझण कही।
(११) दधवाड़ियो खींवराज, वात पठांण हाजीखान रांणै उदैसिंघ वेढ हुई तिणरी लिख मेली। संमत १७१४ रा वैसाख मांहे।
(१२) देवड़ो अमरो चंदावत रो परधांन बाघेलो रांमसिंघ नूं अमरै नैणसी कनै मेलियो, उण कही।
(१३) मुंहणोत सुंदरदास जाळोर थकां लिख मेली।
(१४) रतनूं गोकुळ पीढियां मंडाई। गोकळ रतनूं कह्यो।
(१५) चारण चांदण खिड़ियो।
(१६) भाट खंगार नोलिया रो पड़ियारां री साखां लिखाई।
(१७) भाट राजपांण उदैहीरो, पीढी कछवाहां री मंडाई।
(१८) वात १ जीवै रतनूं धरमदासांणी कही नै पहला सुणी थी तिका तो लिखी हीज हुती। वात जाड़ेचा साहिब री नै झाला रायसिंघ री फेर लिखी।
(१९) भाखड़ी रावळ भीम री आसियो पीरो कहै।
(२०) राव नींबो महेसोत सवणी।
(२१) गाडण पसायत।
(२२) बारहठ खींदो।

नैणसी ने अपनी ख्यात में लगभग ६ शताब्दियों के जीवन और साहित्य का महत्त्वपूर्ण परिचय दिया है। अपभ्रंश भाषा की परम्परा से प्रभावित मारवाड़ी भाषा में लिखा गया यह विवरण विक्रम सम्वत् १३०० से १७०० तक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी प्रकार की गतिविधियों का विस्तृत आलेखन है। यद्यपि पहले का जितना वृत्तान्त है, वह सभी प्राय: जनश्रुतियों या चारण-भाटों की बहियों से प्राप्त किया गया है, तथापि १६वीं शती से १८वीं शती तक का विवरण प्राय: शंकाओं से परे और विश्वसनीय है।

ख्यात की भाषा

इस ख्यात की भाषा लगभग तीन सौ वर्ष की पुरानी मारवाड़ी भाषा है। यद्यपि यह भाषा उतनी कठिन नहीं है तथापि हिन्दी के विद्वान् इसका सही-सही समझना उतना सुलभ नहीं समझते। फिर डिंगल के गीत, छप्पय, दोहे आदि को समझना तो उनकी दृष्टि में और भी कठिन है[10]।

इस ग्रंथ की मारवाड़ी भाषा भारतीय आर्य भाषाओं की अपभ्रंश परंपरा की निकटतम शाखा के प्रौढ़ गद्य का उत्कृष्ट रूप है जो राजस्थान की सभी

---

(२३) चारण वीरधवळ दूहा कहै।
(२४) गाडण सहजपाळ।
(२५) सांवळसुध रोहड़ियो।
(२६) भांणों मीसण, वडो आखरां रो कहणहार।
(२७) ढाढी............। इत्यादि।

इनके अतिरिक्त बारहठ ईसरदास, दुरसो आढो, केशवदास, रतनूं नवलो, बारठ वीठू, आसराव रतनूं, आसियो दलो, लल्ल भाट और चारण चांदो आदि डिंगल के प्रसिद्ध कवि और कुछ वात या हालात, जिनके सुनाने या लिखाने वालों का नाम स्मरण नहीं रहा—नैणसी ने 'एक वात यूं सुणी' या 'संमत १७२२ आसोज मांहै परबतसर मांहै लिखी' इस प्रकार से उनका आभार माना है।

१०. नैणसी की अनुपम ख्यात २७५ वर्ष पूर्व की मारवाड़ी भाषा में लिखी हुई है, जिससे राजपूताने का रहने वाला हरएक आदमी सहसा ठीक-ठीक समझ नहीं सकता। राजाओं, सरदारों आदि के पुराने गीत, दोहे आदि भी उसमें कई जगह उद्धृत किये गये हैं, जिनका ठीक-ठीक समझना तो और भी कठिन काम है।

—ओझा निबंध-संग्रह, तृ. भाग

बोलियों से अधिक विकसित और मान्य 'पश्चिमी मारवाड़ी'[११] की परंपरा का प्राचीन और प्रधान रूप है। आधुनिक राजस्थानी और गुजराती के रूपों में विकसित होने वाले अंकुरों का (विभक्तियों, प्रत्ययों आदि के योग से) देश-कालिक निकटतम भेद बताने वाला एक सांगोपांग नमूना है[१२]। अन्य भारतीय भाषाओं की समकालीन परंपराओं की तुलना में इसकी परम्परा अपने विकास में अग्रणी, परिपक्व और अधिक प्राचीन गद्य-शैली का रूप है। इसमें पुष्ट गद्य-साहित्य के सभी रूप ख्यात[१३], वात, वारता, विगत, विरतंत, हकीकत, याद, आदिदास्त, हाल, प्रस्ताव, हवालो, सिंघावलोकनी, मिसाल, साख, परियावली, वंसावली, पीढियां आदि सभी प्रचुर परिमाण में विद्यमान हैं। इन सब में ख्यात साहित्य प्रमुख है। वात, हकीकत, विगत आदि के भी अनेक छोटे-मोटे हस्त-लिखित इतिहास-ग्रंथ प्राप्त हैं, जो ख्यात के आवश्यक अंग होने के साथ उसका

---

११. आधुनिक शोध विद्वानों ने इसका नाम 'प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी' रखा है जबकि गुजरात के विद्वानों ने 'जूनी गुजराती' अथवा 'मारू-गुर्जर भाषा' अभिहित किया है।

१२. Rajasthani dialects form a group among themselves differenciated from Western Hindi on one hand and from Gujrati on the other hand. They are entitled to the dignity of being classed as together forming a separate independant language. They differ much more widely from Western Hindi than does, for instance, Punjabi. Under any circumstances they cannot be classed as dialects of Western Hindi. If they are to be considered dialects of some hitherto acknowledged language, than they are dialects of Gujarati.

—Dr. Sir G. A. Grierson
Linguistic Survey of India, Vol. IX part II pages 15

१३. ख्यात की प्राचीनता के सम्बन्ध में पीटरसन, दूसरी रिपोर्ट में अनघंराघव नाटक के कर्त्ता मुरारि कवि का यह श्लोक द्रष्टव्य है। मुरारि कवि का समय ८वीं-९वीं शताब्दि माना जाता है।

चर्चाभिश्चारणानां क्षितिरमण ! परांप्राप्यसंमोद लोलां
मा कीर्तेः सौविदल्लानवगणय कवि प्रात(?) वाणी विलासात्।
गीतं *ख्यातं* च नाम्ना किमपि रघुपतेरद्य यावत्प्रासा–
द्वाल्मीके रेव धात्रीं धवलयति यशो(दा?) मुद्रया रामचन्द्रः॥

—परम्परा : भाग ११ और १५-१६ तथा
ना. प्र. पत्रिका, भाग १ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का 'चारण' नामक लेख।

विकसित परिमार्जित और प्रौढ़ रूप है। किन्तु स्वतन्त्र रूप से भी इनका महत्त्व ख्यातों से कम नहीं है। ख्यात के आवश्यक अंग-रूप इन शब्दों का अर्थ अपने साधारण अर्थों से कुछ भिन्न होने के कारण यहाँ संक्षेप में प्रत्येक की जानकारी देना अप्रासंगिक नहीं होगा, जिससे कि उनके महत्व को समझा जा सके—

ख्यात

मोटे रूप में ख्यात इतिहास को कहते हैं जिसमें युद्ध आदि प्रसिद्ध घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया हुआ होता है। अध्याय के रूप में भी ख्यात शीर्षक देकर वर्णन या वृत्तान्त के रूप में ख्यात ग्रंथ का विभाजन किया हुआ होता है। 'नैणसी री ख्यात' में ऐसे अनेक विभाग हैं। जैसे—'अथ सीसोदियां री ख्यात लिख्यते', 'अथ ख्यात भाटियां री लिख्यते' इत्यादि। वात, हकीकत आदि इसके अनेक पेटा विभाग हैं।

वात, वारता

वर्णनार्थक 'ख्यात' शीर्षक में किसी वंश या व्यक्ति आदि की प्रसिद्ध घटनाओं का विवरण प्रायः 'वात' शीर्षक से विभक्त किया हुआ होता है। स्वतंत्र ऐतिहासिक वात-साहित्य की बातें बड़ी होती हैं[१४]।

हकीकत

स्थान विशेष की स्थिति का वर्णन प्रायः हकीकत कहलाता है। यह ख्यात के समान बड़े ग्रंथ के रूप में भी होती है जैसे—'जोधपुर री हकीकत'।

पीढी

ख्यात का एक आवश्यक अंग है। इसमें वंशानुक्रम के साथ विशिष्ट व्यक्ति के जीवन की विशेष घटनाओं का उल्लेख भी किया हुआ रहता है।

साख

(१) विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर वंश-वृक्ष में से प्रस्फुटित शाखा वाले वंश को साख कहते हैं, जैसे—ऊदावत, जेसा-भाटी इत्यादि इसे वंसावली भी कह देते हैं। (२) घटना विशेष और स्थान के नाम से भी 'साख' प्रस्फुटित होती है, जैसे—झाला, छात्राळा और महेवचा, बाड़मेरा आदि। (३) किसी बात की साक्षी के रूप में उद्धृत छंद भी 'साख' कहलाता है, जैसे—साख रा दूहा।

---

१४. 'वात परगने जोधपुर री' (हस्तलिखित) में जोधपुर, जोधपुर के परगने और जोधपुर के राजाओं से संबंधित प्रसंगवशात् सभी विषयों का विस्तृत विवरण दिया हुआ है। यह बात पृ. १८४ महाराजा जसवंतसिंह प्रथम (अपूर्ण) तक है। इसमें कई स्थानों पर नैणसी का उल्लेख महत्व के तथ्यों के साथ हुआ है। सुंदरसी का भी उल्लेख हुआ है। यह बात हमारे संग्रह में है।—सम्पादक

विगत

किसी वंश या स्थान के सम्पूर्ण और क्रमबद्ध ब्यौरे को विगत कहा जाता है।

याद, याददास्त, आदिदास्त

किसी बात या घटना को विस्तृत रूप से लिखने के लिये याद के तौर पर लिखा हुआ उसका संक्षिप्त रूप। बड़ी बात का संकेत-लेखन या नोट्स।

प्रस्ताव

प्रासंगिक रूप में कही जाने वाली बात के लिये प्रारंभिक संकेत, जैसे— एकदा प्रस्ताव।

हवालो

प्रमाण के लिये किया हुआ किसी बात या घटना का उल्लेख।

सिंघावलोकनी बात

पूर्वोल्लिखित बात या घटना पर दृष्टिपात करते हुए किया गया विशेष वर्णन।

पश्यावली, वंसावळी

देखें पीढी और साख (१) और (२)

स्थानस्थिति के वास्तविक निर्देशन के लिये आठ दिशाओं के अतिरिक्त इस ख्यात में १६ दिशाओं के नामों का उल्लेख इसके (गद्य और पद्य) साहित्य की प्रौढ़ता का एक अन्यतम उदाहरण है। ऐसा उदाहरण अपभ्रंश पारंपरीण तात्कालिक किसी भी भाषा के विज्ञान में और आधुनिक किसी भी साहित्य में प्राप्त नहीं है।[१५]

क्रीड़ा, कृषि, वाणिज्य, युद्ध और शासन आदि से संबंधित अपने अर्थों में सशक्त अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग राजस्थानी भाषा की प्राञ्जलता और व्यापकता के द्योतक हैं, जिनमें से अनेकों के पर्याय हिंदी में नहीं मिलते। डिंगल एवं राजस्थानी गद्य साहित्य के अध्ययन के लिये इस ख्यात का शब्द-भण्डार बहुत ही मूल्यवान है।[१६]

---

१५. राजस्थानी साहित्य में १६ दिशाओं का उल्लेख मिलता है—

'दिसि खोज भम्यो खट-पंच-दूण, जुड़ियो नह थापण अम्म जूण'।

सोलह दिशाओं में जिन आठ विशेष दिशाओं के नामों का उल्लेख किया जाता है, उनमें से इंद्र, तहड़, खरक, भरहेर, रूपारास और पंचाद आदि के नाम इस ख्यात में प्राप्त हैं।

१६. वल्लभविद्यानगर, वी. पी. महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और रिसर्च स्कॉलर प्रो० भूपतिराम साकरिया के सह-सम्पादन में राजस्थानी-हिन्दी का एक कोश शोधार्थियों के लिये (सर्व-सुलभ आवृत्ति) तैयार किया गया है, जिसमें 'नैणसी री ख्यात' के भी तीन-चार हजार शब्द लिये गये हैं। कोश प्रकाशनाधीन है।

भाषा की प्रौढ़ता और अर्थ-बोधकता के इसके मुहावरों और रूढ़ि-प्रयोगों में भी प्रचुरता से देखने में आती है। क्रियापद, सर्वनाम और विशेषणों के रूप तो इतने प्रचुर हैं कि उन पर एक पृथक् प्रबन्ध लिखा जा सकता है। प्रत्यय, परसर्ग और विभक्तियों के अनेक कारक-रूप और प्रकार एवं उनके प्रयोग भाषा की प्रौढ़ता और सम्पन्नता के अन्यतम उदाहरण हैं।[१७] सहस्रों स्त्री-पुरुषों और नगरों आदि के नाम अपभ्रंश भाषा के अध्ययन के लिये बहुमूल्य सामग्री उपस्थित करते हैं, जो भाषा की दृष्टि से ही नहीं, पुरातत्व और इतिहास की दृष्टि से भी शोध का एक मनोरंजक और स्वतंत्र विषय है। हमारी संस्कृति के साथ भी इनका घनिष्ठ संबंध है।

विविध विषय

प्रस्तुत ख्यात समाज और संस्कृति का जीता-जागता चित्र है। इसमें संक्षेप से गुजरात, काठियावाड़ (सौराष्ट्र), कच्छ, बघेलखंड, बुंदेलखंड, मालवा और मध्यभारत का इतिहास है और मेवाड़ के शिशोदिये, जैसलमेर के भाटी, ढूंढाड़ के कछवाहे और मारवाड़ (जोधपुर और बीकानेर) के राठौड़ राजपूतों का विस्तृत विवरण है। अजमेर-मेरवाड़ा, कोटा, बूंदी, झालावाड़, जयपुर-शेखावाटी, सिरोही, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, रामपुरा, किशनगढ़, खेड़-पाटण और पारकर आदि राजस्थान की अन्य समस्त रियासतों और इन रियासतों के अनेक जागीरी ठिकानों का एवं दक्षिण, गुजरात, मालवा, दिल्ली और आगरा आदि की बादशाहतों के साथ हुए युद्धों का वृत्तान्त भी संकलित हो गया हुआ है।[१८]

---

१७. सम्बन्ध-सूचक परसर्ग और विभक्तियों के कुछ रूप जिनका प्रयोग इस ख्यात के पद्य और गद्य के विभिन्न स्थलों में हुआ है—

१. रा, री, रो, रै
२. तण, तणा, तणी, तणो, तणं, तणउ
३. केर, केरा, केरी, केरो, केरउ, केरै
४. संदा, संदी, संदियां, संदो, संदउ, संदै
५. हंदा, हंदी, हंदियां, हंदो, हंदउ, हंदै
६. नो, नी, ना, नउ
७. चा, ची, चो, चै
८. कउ, की, को, के इत्यादि

१८. नैणसी की ख्यात में चौहानों, राठौड़ों, कछवाहों और भाटियों का इतिहास तो इतने विस्तार के साथ दिया है और वंशावलियों का इतना अपूर्व संग्रह है कि अन्य साधनों से

अनेकविध युद्ध और घटनाओं आदि के विवरणों से संकलित यह ख्यात विषय की दृष्टि से एक छोटा महाभारत है। मानव जीवन के उदाहरण रूप उच्च और उज्ज्वल पक्ष के अनेक जगह जहाँ इसमें दर्शन होते हैं, वहाँ इसके विरुद्ध, अनुचित आचरण वालों की अपकीर्ति और भर्त्सना के प्रसंग भी इसमें चित्रित मिलेंगे। इनके अतिरिक्त कृषि और उसकी उपज, वाणिज्य और माप-तौल, दुकाल और सुकाल, सेना और आक्रमण, अस्त्र और शस्त्र, शरणागत-रक्षा; वदान्यता, वचन-पालन, गौरव-रक्षा, मान-मर्यादा, शासन और दण्ड, खिराज और कर; विवाह-सम्बन्ध और दूसरे राज्यों के परस्पर सैनिक और राजनैतिक सम्बन्ध; दान, भेंट, सासण (भूमिदान), पसाव, सिरोपाव, रीझ-मौज आदि के वर्णन; पद, मनसब और खिताब, टँकसाल और सिक्के; वीरगीत और गर्वोक्तियाँ, गुण-प्रशंसा और दुर्गुण-निंदा; लोक-वार्ताएँ और वीर-गाथाएँ, शाखायें और वंशावलियाँ, परम्पराएँ और रीति-रिवाज; राजदरबार, सवारियें, तीर्थाटन, पर्व, विवाह, स्वागत-सत्कार, शिकार और जबादि; जलहर (जलक्रीड़ा) जाति-निर्माण और धर्म-परिवर्तन, जौहर और साका, सतीत्व और स्त्री-चरित्र; आभूषण, वेशभूषा और संस्कार, खान-पान और रहन-सहन; बादशाहों को तसलीम करने के ढंग; शत्रुता और मित्रता; पहाड़ और नदियाँ, नगर और गाँव; जंत्र-मंत्र और वैद्यक, शकुन और नक्षत्र-ज्ञान; चोरों की कला; दुर्ग-प्रासाद-जलाशय, कूप आदि का निर्माण; देवी-देवताओं की पूजा और यात्रा, कुलदेवी-देवताओं का विवरण; उद्धरण और साख (साक्षी) रूप में अनेक प्रकार के काव्य इत्यादि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, वास्तुकला (स्थापत्य कला) संबंधी और अन्य विभिन्न विषयों के न्यूनाधिक वर्णन इस ख्यात साहित्य (ग्रन्थ) में उल्लिखित हैं।

अनुशीलन सूत्र

जैसा कि ख्यात के विविध विषयों से प्रगट है, प्रस्तुत ख्यात में अनुशीलन के लिये पर्याप्त सूत्र वर्तमान हैं। किसी भी विषय का अन्वेषक इसमें कुछ न कुछ न्यूनाधिक अपने शोध के लिये सामग्री प्राप्त कर सकता है। निम्न अनुशीलन सूत्र विशेष रूप से शोधनीय है—

वैसा अब मिल नहीं सकता। इस ग्रन्थ में कई लड़ाइयों तथा कई वीर पुरुषों के मारे जाने के सम्वत् एवं उनकी जागीरों का जो विवेचन दिया है, वह भी कम महत्व का नहीं। उसने राजपूताने के इतिहास को बहुत कुछ सुरक्षित किया है। इतना ही नहीं, गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, बुंदेलखंड आदि के इतिहास लिखने वालों को भी इसमें बहुत कुछ सामग्री मिल सकती है। —ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ, ती. भा; पृ. ७४

१. राजपूत जाति और राजस्थान, मध्यभारत, सौराष्ट्र, गुजरात, मालवा, कच्छ एवं पारकर (धाट-[१९]सिंध) का इतिहास।

(नैणसी की ख्यात में अधिकतर राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य-भारत आदि राजपूत जाति के शासन और शासकों का विस्तृत विवरण है; अतः उस विवरण से सभी राज्यों की राजपूत जातियों और उन राज्यों के पृथक्-पृथक् इतिहास पर शोध किया जा सकता है।)

२. प्रत्येक समाज और देश में समय-समय पर महापुरुष उत्पन्न होते रहते हैं। कोई अपनी वीरता और बलिदान के कारण, कोई परोपकार या धर्म-परायणता से, कोई अपनी दानशीलता और सेवा-परायणता से और कोई अपनी राजनीति और न्यायपरायणता से सुविख्यात होते हैं तो कोई अपने दुष्कृत्यों से ही विख्यात या कुविख्यात हो जाते हैं। नैणसी ने प्रकारान्तर से ऐसे अनेक जीवन-चरित्र चित्रित किये हैं। इन पर शोध करके अनेक मानवीय भावनाओं को समाज और संस्कृति के लिये प्रकाश में लाया जा सकता है।

३. शासन और युद्धनीति

राजपूतों का मध्यकालीन इतिहास पारस्परिक वैमनस्य और स्पर्द्धा से हुए युद्धों का विवरण है। राजपूत राजा शासन करने में प्राय: निरंकुश रहे हैं; फिर भी कई राजा और कई राजाओं के मंत्री बड़े नीति-कुशल और प्रजासेवी हुए हैं। अतः नैणसी की ख्यात शासन-व्यवस्था और युद्धनीति के लिये पर्याप्त रूप से शोध की वस्तु है।

४. वाणिज्य, माप-तौल, सिक्के और राजकर[२०]।

ख्यात-लेखक की एक दूसरी कृति मारवाड़ राज्य का सर्वसंग्रह (गजेटियर)

---

१९. धाट-थरपारकर का विस्तृत प्रदेश (गडड़ा, मिट्ठी, छोर, नगरपारकर, नौकोट और उमर-कोट के सोढाए खंड का भू-भाग) मारवाड़ राज्य का अंग था। अंग्रेजों ने नाम मात्र की खिराज के बदले में जोधपुर राज्य से कुछ वर्षों की शर्त से उधार लेकर सिंध का एक जिला बना लिया था और सिंध गवर्नर के शासन में दे दिया था। उधार-अवधि पाकिस्तान बनने की राजनैतिक चालों के समय समाप्त हो गई थी। अंग्रेजों ने यह प्रदेश मारवाड़ को वापिस नहीं लौटाया। सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से मारवाड़ का यह अविभाज्य प्रदेश हिन्दू-बहुल होते हुए भी पाकिस्तान को दे दिया गया। आज भारतवर्ष और पश्चिमी पाकिस्तान के बीच पाकिस्तान का सीमाप्रदेश बना हुआ है।

२०. दुगांणी (दुगाणी), फदियो, टको, दोकड़ो, जनादी, छकड़, दांम, ढबू, सोनइयो, रुपियो, महमूंदी, फिरोजी (पीरोजी, पेरोजी, पीरोजसाही), जलालसाही (जलाला, जलाली) आदि

है, जो कि तात्कालिक जन-गणना रिपोर्ट का अनुपम उदाहरण है। प्रस्तुत ख्यात भी उसी लेखक की कृति होने से अनायास ही वाणिज्य, माप-तोल, विभिन्न सिक्कों में खिराज और राजकर की अदायगी, माल लाने-लेजाने के साधन आदि के विषयों से समाहित हो गई है। एतद्विषयक शोधकर्त्ताओं के लिये यह ख्यात बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करती है।

५. देवपूजन और शकुन-शास्त्र

प्रत्येक राजपूत राजवंश की अपनी-अपनी कुलदेवियां और कुलदेवता होते हैं। उन्हीं के आराधन व संतुष्टि से युद्धों में विजय और राज्यों की प्राप्ति व संस्थिति होती है। नैणसी ने इस प्रकार के अनेक देवी-देवताओं और साधु-सन्यासियों की भक्ति, आराधना और सेवा और उन्हें अपने अनुकूल बनाये रखने के लिये किये गये प्रयत्नों का प्रासंगिक वर्णन किया है। आराधना और पूजार्चना के हेतु मंदिरों का निर्माण, मूर्त्ति-स्थापन, दानादि से उनकी व्यवस्था के उल्लेख-धर्म और भक्ति-भावना और संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। पशु-पक्षियों के शकुनों के आधार पर कार्य-सिद्धि और जय-पराजय आदि का और लोक-परंपरा और शकुन-शास्त्र के अंतर्गत आने वाले कई शाकुन-प्रसंगों का वर्णन इसमें खूब सरस भाँति से हुआ है।

नक्षत्र-विज्ञान पर आधारित राजस्थानी साहित्य के शकुन-शास्त्र की १६ दिशाओं ने किस प्रकार इस ख्यात में दिशाओं और उपदिशाओं के मध्य दिशा-वकाश प्राप्त कर विशेष दिशाओं के नाम से अपना महत्त्व स्थापित किया है। शकुन और दिशा-विज्ञान दोनों में दिक्साधन संबंधी विज्ञान की शोध वस्तु है। अतः इस दृष्टि से भी यह ख्यात मननीय है।

६. पुरातत्व संबंधी अवशेषों का परिचय

राजपूत राजाओं का वास्तुकला-प्रेम प्रसिद्ध है। अनेक राजा और ठाकुरों

कई सिक्कों के नाम और उनके चलन का विवरण है, जो कई सदियों से १८ वीं, १९ वीं सदी तक विभिन्न राज्यों में प्रचलित थे।

इसी प्रकार मंगळीक, वधामणा, गुळ, सूंखड़ी, वळ, भेट, सलार, बाब, पेसकस, दंडबराड़, दांण, वहतीवांण, पाघबराड़, तुलावट, मळबो, लांचो, हासल, भोग, हळ (हळगत), मोम, मोम, पूंछी, घोड़ाचारण, ढोर-चराई, वाडी री लाग, काजी री लाग, कोटवाळी लाग इत्यादि अनेक प्रकार के कर और उनका प्रचलन तथा मण, सेर, टांक आदि तोल और मण, मांणो, मूंणो, सई, भर, भारो आदि धान्यादि के मापों के नाम और उनके चलन का विवरण इत्यादि।

ने अपने नाम से नगर, दुर्ग, प्रासाद, तालाब, मंदिर और कीर्त्ति-स्मारकों का निर्माण करवाया है। प्रस्तुत ख्यात में ऐसे कई पुरातत्व सम्बन्धी अवशेषों का निर्माण-संवत्, प्रयोजन और उनके निर्माताओं का विवरण दिया गया है। अतएव पुरातत्व विभाग के लिये इसमें अमूल्य सामग्री सुरक्षित है।

७. शाखायें और वंशावलियां

राजपूत जाति के इतिहास को समझने के लिये उसकी शाखा-प्रशाखाएँ और वशावलियां सबसे बड़ा आधार हैं। वीरता की वहां पूजा है; अतः राजपूतों में यदि एक व्यक्ति के पांचों पुत्र वीरता में अपना व्यक्तित्व बना लेते हैं तो वे पांचों ही पांच पृथक् शाखाओं के मूल पुरुष बन जायेंगे। दानशीलता, धर्मपरायणता और बौद्धिक क्षेत्र में भी ऐसे शाखा-पुरुषों का वर्णन पाया जाता है। नैणसी ने राजपूतों की इस प्रकार से बनी उनकी शाखाओं, वंशावलियों और पीढ़ियों की विस्तृत सूचियां दी हैं, जिनका अन्यत्र प्राप्त होना असम्भव है। पीढ़ियों में विशेष व्यक्तियों के विशेष कार्य, सेवायें, युद्ध और जागीर पाने और तागीर होने के कारण और उनकी संवत्-तिथि, जन्म और मृत्यु-तिथि आदि आवश्यक वातों का साथ का साथ ही संक्षिप्त विवरण दिया हुआ रहता है।

८. जाति और धर्म परिवर्तन

काल के घूर्णित चक्र ने कई व्यक्तियों और जातियों को अपना नाम, धर्म और देश परिवर्तन करने को विवश किया है। नैणसी ने अपनी ख्यात में ऐसे कई अवसरों का वर्णन किया है, जबकि अनेकों की संख्या में हिंदू मुसलमान बन गये या बना लिये गये। ब्राह्मण क्षत्रियों में और क्षत्रिय कृषि-कर्म में प्रवर्त कृषक जाति में तथा शूद्रों में परिवर्तित हो गये। कई ब्राह्मण और क्षत्री वैश्य और शिल्पियों में बदल गये। अनेक जातियों के प्रादुर्भाव की बातें इस ख्यात में वर्णित हैं।

९. लोक-साहित्य

इस ख्यात में इतिहास से जुड़ी हुई अनेक छोटी-मोटी सरस और महत्वपूर्ण सामाजिक घटनाएँ उद्धृत हैं, जो जन-जीवन में लोक-साहित्य बन कर लोकवार्ताओं के रूप में सामने आई हैं। जगमाल मालावत, लांजो विजैराव, लाखो फूलाणी, हुरड़ वनो, हेमो सीमाळोत, सिद्धराज सोलंकी, खाफरो चोर, विक्रमाजीत आदि ऐसी पचासों बातें हैं जो आज लोकवार्ताओं के नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

लोक-साहित्य पर शोध करने वालों के लिये विविध प्रकार की सामग्री यह ख्यात प्रचुर परिमाण में उपस्थित करती है।

१०. भाषा

'नैणसी री ख्यात' भाषा-वैज्ञानिकों के लिये जो शोध-सामग्री उपस्थित करती है, वह सब से अधिक महत्वपूर्ण है। इसकी भाषा पश्चिमी राजस्थानी का विशिष्ट रूप है जो राजस्थान की सब से अधिक सशक्त और विकसित भाषा है। तत्कालीन अन्य भारतीय अपभ्रंश भाषाओं की परम्परा में इसकी परम्परा अपने विकास में अग्रणी, परिपक्व और अधिक प्राचीन गद्य-शैली का रूप है[२१]।

पश्चिमी राजस्थानी उपनाम मारवाड़ी भाषा (मरु भाषा) में प्राप्त गद्य-साहित्य के विविध रूप, कहावतों और रूढ़ प्रयोगों की प्रचुरता विभिन्न पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग, कारकों की विभक्तियों[२२] के अनेक प्रकार और रूपों का प्रयोग, प्रत्यय और उपसर्ग आदि के विभिन्न रूप, क्रियापद, सर्वनाम और विशेषणों के सैकड़ों रूप, भौगोलिक स्थानों की वास्तविक स्थिति-निर्देशन के लिये विशेष-दिशाओं[२३] के नामों का प्रयोग, अनेक संज्ञाओं के ऐसे भेद जिनके पर्याय हिंदी में नहीं मिलते और जिनका व्यक्तिकरण व्याख्या द्वारा करना पड़ता है इत्यादि बातें इसकी प्रौढ़ता, व्यापकता और अर्थबोधकता के स्पष्ट उदाहरण हैं। नैणसी की ख्यात में सहस्रों स्त्री-पुरुषों एवं नगरों आदि के नाम अपभ्रंश भाषा की परम्परा के अध्ययन की मूल्यवान सामग्री है। उदाहरण के लिये 'ऊदल' पुरुष नाम को लें। यह उदयसिंह का अपभ्रंश रूप है। उदयसिंह के उत्तर पद के 'सिंह' का लोप होकर उसके स्थान पर 'ळ' प्रत्यय रूप में आ जाने से 'उदय' का 'ऊद' आदेश होकर 'ऊदळ' रूप बन गया। इसी प्रकार अक्खो,

---

२१. भाषा और प्राचीन इतिहास के विद्वान् डॉ० दशरथ शर्मा डी० लिट्० 'दयाळदासरी ख्यात' के इन्ट्रोडक्शन में उक्त ख्यात और 'नैणसी री ख्यात' की भाषा के सम्बन्ध में तुलना करते हुए लिखते हैं—

Dayaldas Sindhayach was an erudite scholar. He was an accomplished rhetorician, a writer of excellent Marwari, only a little inferior to that of Nainsi Muhnot."

२२. दे० टिप्पणी सं० १४, इस ख्यात में मात्र सम्बन्ध-सूचक षष्ठी विभक्ति के लिये ७ या ८ विभिन्न रूप प्रयुक्त हुए हैं।

२३. दे० टिप्पणी सं० १३, विशेष-दिशाओं के नामों के लिये।

अरहड़, अळधरो, आसथांन, गैपो, छाहड़, पाबू, पेथड़, वैरड़ बाहड़, सीयक हड़बू आदि सहस्राधिक पुरुष नाम अपभ्रंश प्रभावित हैं।

नामों को इस प्रकार (अपभ्रंश परंपरा के अनुसार) छोटा करने में जहाँ एक ओर गर्वोक्ति और स्वमान त्याग की भावना काम करती है, वहाँ दूसरी ओर आत्मीयता और स्नेह-भावना भी परिलक्षित होती है। 'राणो रूपड़ो', 'राव तीडो' आदि राजाओं के ऊनता-सूचक नामों में यही भावना काम करती हुई दिखाई पड़ती है, तुच्छता की बोधक नहीं है।

ख्यात में ऐसे अपभ्रंश-प्रभावित नाम सभी क्षेत्रो में दिखाई पड़ते हैं। आवड़, ईहड़, गायड़, जसमादे, लाछां, हुरड़ आदि स्त्री नाम; कमधज किराड़ खेड़ेचा, चीबा, पोकरणा, विसनोई आदि जाति नाम; और अटाळ, अणदोर, अरणोद, आफूड़ी, ईकुरड़ी, किराड़ू और कूड़ी आदि गाँवों के नाम—एसे सहस्रों नाम हैं जो अपभ्रंश भाषा से प्रभावित हैं।

मध्यकालीन पुरुष नामों में, यद्यपि भाषा से इस बात का कोई सम्बंध नहीं है, तथापि राजनैतिक दबाव और चापलूसी के कारण कई क्षत्रियों ने अपने नामों का (हिन्दू धर्म में रहते हुए भी) मुसलमानीकरण कर दिया था। तातारखां, लाडखां, अलखां, महमंद और भाखरखां आदि हिन्दुओं के पचासों मुसलमानो नाम मध्यकालीन समाज और इतिहास की एक उल्लेखनीय घटना है। जबकि क्षत्राणियों ने क्षत्रियों (अपने पिता, पति और भाई आदि) का अनुसरण करके ऐसा एक भी उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया है।

११. राजस्थान की मध्यकालीन सती-प्रथा

ख्यात में सैकड़ों सतियों का विवरण उल्लिखित है। इसमें ऐसी अनेक वीरांगना और पतिव्रता सतियों का वर्णन है, जिन्होंने राजस्थान का मुख उज्ज्वल किया है। उनमें सतीत्व की सच्ची भावना के दर्शन होते हैं। उन्होंने नारी समाज के सामने पतिव्रत और सतीत्व-धर्म का एक आदर्श पेश किया है। वे अवश्य पूजनीय हैं। परंतु दूसरी ओर इस प्रथा का एक रोमांचक पक्ष भी है, जिसमें इस जाति के साथ बड़ी निर्दयता से अत्याचार हुआ है। मृत पुरुष की लाश के साथ स्त्री को चिता में बिठाये बिना जलाना समाज और उस पुरुष का अपमान समझा जाता था।[२४] एक पुरुष की उसकी अनेक पत्नियों के सिवाय

---

२४. 'ताहरां अै असवार पाछा गया। आयनै देखै तो सगरो तोरण नीचै पड़ियो छै। ताहरां कह्यो—'जी, सती हुवो सगरै नूं लेनै। सती नूं कह्यो जु बाहिर आवै ज्युं सगरै नूं दाग

अनेक वेश्याएँ, दासियाँ, नौकरानियाँ, गायिकाओं और गोलियाँ आदि को उसकी चिता में पड़कर जलना पड़ता था[२५]। कितना हृदय-विदारक दृश्य होगा वह ? ये सभी भोग्या-स्त्रियाँ सती हुई कहलाती थीं और अधिक स्त्रियाँ साथ में जलने से उस पुरुष का अधिक सम्मान समझा जाता था। कहाँ वह दैवी-दृश्य जिसमें एक समाधीष्ट योगी के समान प्राण विसर्जन करके अथवा स्वयं योगाग्नि प्रज्वलित करके परलोक में भी साथ ही में रहने की भावना से पति का सहगमन किया जाता था। यही नहीं, किन्तु पुत्र के लिये माता ने और भाई के लिये बहिन ने, इसी प्रकार अपने प्राणों का विसर्जन करके अपनी स्नेहा-कुल और नारी-सुलभ कोमल एवं पवित्र भावनाओं का उच्च आदर्श उपस्थित किया था और कहां यह घोर नरमेघ का नारकीय दृश्य ?

सती प्रथा का प्रारंभ, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से नारी-समाज के ऊपर उसका प्रभाव, नारी समाज की स्वेच्छा या पुरुष समाज की जबरदस्ती अथवा रिवाज आदि वर्तित व्यवहार, प्रथा का कानूनन निर्मूलन के बाद की स्थिति, जबरदस्ती और रिवाज के कारण हुई सतियों और वास्तविक सतियों के विवरण, सतियों के सम्बन्ध का शिष्ट और लोक साहित्य आदि सभी बातें शोध का महत्वपूर्ण विषय है।

देवां।' ताहरां वींदणी नूं भीतर जाय कहियो। ताहरां वींदणी कह्यो—'खेतसीह मारियो हुवै तो हूं सती न हवूं। सगरै नूं घींसनै नांख देवो।' पाछै आयनै कहियो—'जी, संभै नहीं।' ताहरां कहियो—'जी, म्हे एकलै ही सगरै नूं बाळां ?' तो कह्यो—'म्हे अणसंभाही ही सती करां ?' ताहरां कह्यो—'आवो बारै।' ताहरां जांनी ही सिलह पहरै छै, मांढी ही सिलह पहरै छै। बेहुं हथियार बांधै छै, सिलह पैहरीजै छै। ताहरां वींदणी दीठो अर मा अर बाप नै कहियो—'हे ठाकुरां-रजपूतां ! हूं बैर खेतसीह री छूं, अर एकली रै वास्तै घणा जीव मरै छै, तै हूं सगरे साथ बळीस।' वींदणी बाहिर आयनें सगरै साथै बळी।

—नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ० ४७-४८

२५. बीकानेर महाराजा जोरावरसिंह की मृत्यु पर दो रानियां, एक खवास, बारह पातरियां (वेश्याएँ), दो खालसा, एक बडारण, एक सहेली, दो सहेली पातरियों की और एक पातरियों की रसोईदार ब्राह्मणी=कुल २२ स्त्रियां साथ में जली थीं।

—ख्यात, भाग ३, पृ० २११

जोधपुर महाराजा अजीतसिंह के साथ ६ रानियां, २० दासियां, ९ उर्दाबेंगनियां, २० गायनें और २ हजूर-बेंगनियां=कुल ५७ स्त्रियां जलकर मरीं थी।

—नैणसी री ख्यात, भा. ३, पृ. २१३ की टिप्पणी
और श्री आसोपा का 'मारवाड़ का मूल इतिहास', पृ. २२३

१२. देश-द्रोही और स्वामी-द्रोही

प्रसिद्ध देश-द्रोही जयचंद की परम्परा को जीवित रखने वाले अनेक स्वामी-द्रोही और देश-द्रोहियों का वर्णन ख्यात में आया है। पावागढ़ के पताई रावळ (यशवंतसिंह) के विरुद्ध सईया वांकलिया का, अणहलपुर-पाटण के कर्ण गहलड़े के विरुद्ध नागर-ब्राह्मण माधव का, सिवाना के चौहान सातल और सोम के विरुद्ध भायल सजन का, सिवाना के राव कल्लाजी राठोड़ के विरुद्ध पोलिया नाई का, खेड़-पाटण के गोहिलों के विरुद्ध उनके मंत्री डाभियों का और जालोर के वीर कान्हड़दे के विरुद्ध वीका दहिये इत्यादि का देश-द्रोह। इन देश-द्रोहियों के संबंध में बहुत कुछ लिखे जाने की सामग्री इस ख्यात में प्राप्त है।

जिन्होंने ऐसा द्रोह किया है, उनके राजनैतिक और व्यक्तिगत कारण, वास्तविकता और अवास्तविकता की दृष्टि से शोध का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इनके कारण हुए अनेक युद्ध, राज्यों का पतन, नये राज्यों का जन्म और उत्थान और जातियों का पलायन और निर्मूलन, राज्यों की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक स्थिति और जिन कारणों से अपने समझे जाने वाले और विश्वासपात्र व्यक्तियों ने विश्वासघात करके देश-द्रोह या स्वामी। द्रोह किया उनकी दशा कैसी रही, इत्यादि शोध के अनेक उपयोगी अंग इस ख्यात में प्राप्त हैं।

ख्यात का प्रस्तुत संस्करण

प्रस्तुत 'नैणसी री ख्यात' के सम्पादन की भी एक घटना है। सन् १९३४ की बात है। मैं जोधपुर के भूतपूर्व और उदयपुर के तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर स्व० पंडित सर सुकदेवप्रसाद के द्वारा तैयार करवाये जा रहे राजस्थानी भाषा के बृहत् डिंगल-कोश के सम्पादन का काम पावटा लाइन्स के उनके उम्मेद-भवन में करता था। तभी एक दिन मातृ-भाषा के परम सेवक मेरे विद्वान् मित्र स्व० श्री रामयश गुप्त इस ख्यात की एक प्रति मेरे पास लाये और इच्छा प्रगट की कि मैं इसका सम्पादन कर दूं। प्रकाशन आदि का व्यय वे स्वयं वहन कर लेंगे। इस पर रात-दिन बड़े परिश्रम के साथ हम दोनों मित्रों ने लगभग एक हजार पृष्ठों में प्रेस-कापी के रूप में इसकी प्रतिलिपि तैयार कर ली और २८४ पृष्ठों तक की शब्दार्थ और व्याख्या आदि की टिप्पणियां देकर पूरी प्रेस कापी भी तैयार करली। एक ख्याति-इच्छुक मित्र भी इसका सम्पादन करना चाहते थे। उनके पास भी इस ख्यात की दो अशुद्ध और त्रुटित प्रतियां थीं। तब तक उन्हें हमें प्राप्त प्रति के जैसी शुद्ध और सुवाच्य प्रति कोई प्राप्त नहीं हुई थी।

एक दिन अवसर पाकर वे हमारी अनुपस्थिति में हमारी तैयार प्रेस-कापी के २८४ पृष्ठ, ४०७ से ४८६ तक के ८० और ६०५ से ६३४ तक के ३० पृष्ठ—कुल ३७४ पत्रों को, 'रतनरासो' और संपादित 'हरिरस' की पाण्डुलिपियों के साथ उठा ले गये। बहुत अनुनय-विनय करने पर भी उन्होंने इन्हें वापिस देने की कृपा नहीं की।

'रतनरासो' की उस प्रति के कोई २० वर्ष बाद बीकानेर में श्री अगरचंदजी नाहटा के यहां अकस्मात दर्शन हुए जो उनको महाराज-कुमार डॉ० श्री रघुवीर-सिंहजी ने श्री काशीराम शर्मा से सम्पादित करवाने को कई अन्य प्रतियों के साथ भेजा था। मेरे हाथ से लिखी हुई मेरी प्रति के ऊपर महाराज-कुमार के हाथ से लिखा हुआ था—'महाराज श्री मांधातासिंहजी बीकानेर से प्राप्त।' नाहटाजी को इस घटना का जिक्र पहले किया जा चुका था। अतः इस प्रति को देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। प्रति ने न जाने कहां-कहां की यात्रा करके एक सरपरस्त और बहुत ही विश्रुत विद्वान् की शरण ली। आश्चर्य के साथ प्रसन्नता भी हुई। हरिरस और ख्यात के पत्रों का आज तक कोई पता नहीं लगा।

गारासणी ठाकुर स्व० श्री भीमसिंहजी के अनुरोध से मैंने हरिरस का दूसरी बार हिंदी टीका सहित सम्पादन किया था। किन्तु श्री नाथूदानजी महियारिया की 'वीर सतसई' का जोधपुर के राजकीय गैस्ट हाउस में कई महीनों तक सम्पादन करने के फलस्वरूप जो धोखा खाना पड़ा और हानि उठानी पड़ी, इस हरिरस के द्वितीय संस्करण के संबंध में भी ऐसा ही हुआ। अन्य सम्पादकों के नाम से ये दोनों ग्रंथ प्रकाशित हो गये। वीर सतसई के सम्पादन में और हानि उठाने में श्री सीतारामजी लालस भी साथ में थे।

हरिरस का आज तक प्राप्त प्रतियों से सब से पुरानी और शुद्ध एवं विषय-विभाजित प्रति से तीसरी बार भक्ति-ज्ञानामृत भावार्थ-दीपिका, शब्द कोश, कथा कोश, प्रक्षिप्त पाठ आदि महत्वपूर्ण विषयों के साथ पुनः सम्पादन किया गया है जिसे सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट, बीकानेर ने प्रकाशित कर दिया है।

ख्यात के चुराए गए उन त्रुटित पत्रों की पूर्ति के लिए बहुत लम्बे समय तक कोई सुवाच्य और शुद्ध प्रति हाथ नहीं लगी। जिस प्रति से पहले प्रतिलिपि की गई थी वह श्री गुप्त के गूंगा गांव के उनके एक सम्बन्धी के प्रयत्नों से प्राप्त हुई थी, उसके लिए भी उन्होंने कोशिश बहुत की, परन्तु वह फिर हाथ नहीं लगी।

इधर मुहणोत श्री मांगीमलजी एडवोकेट ने नैणसी के सीधे वंशज मुहणोत सुधराजजी के यहाँ की प्रति के लिए भरसक कोशिश की परन्तु उन्हें भी निराश होना पड़ा। बहुत दिनों के बाद स्व० पं० श्री विश्वेश्वरनाथजी रेऊ के सौजन्य से दो प्रतियें प्राप्त हुईं। यद्यपि ये प्रतियां इतनी शुद्ध और सुवाच्य नहीं थीं, फिर भी उनसे खासा काम लिया जा सका था। एक बहीनुमा प्रति सुन्दर मारवाड़ी शिकस्ता लिपि की स्व० पं० रामकर्णजी आसोपा से प्राप्त हुई थी जिससे मिलान करने में अच्छी सहायता मिली थी, परन्तु इसमें भिन्न-भिन्न जगहों के दो तीन पत्र त्रुटित थे। इसलिए अन्य शुद्ध और सम्पूर्ण प्रति को प्राप्त करने के प्रयत्न बहुत समय तक चलते रहे। अन्त में एक बहुत सुन्दर प्रति चि. भूपति-राम के अथक प्रयत्नों से कई हाथों में होकर इन्हें प्राप्त हुई, जो अपेक्षाकृत सुवाच्य और शुद्ध थी जिससे पदच्छेद और पाठों को शुद्ध करने एवं त्रुटित अंश की पूर्त्ति करने में बड़ी सहायता मिली। बीकानेर में प्रो० नरोत्तमदासजी की एक प्रति से पाठों का मिलान करने में सहायता ली गई। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी बीकानेर की प्रति बीकानेर महाराजा करणीसिंहजी द्वारा उस पर शोध-निबंध तैयार करने के कारण दूसरा भाग लगभग आधा छप जाने के बाद हाथ लगी। यह प्रति भी शुद्ध लिखी हुई सीहथल के वीठू पन्ना के हाथ की मूल प्रति है। अधिकांश प्रतियें इसीकी प्रतिलिपियें मालूम होती हैं, क्योंकि उनमें भी वीठू पन्ना का नाम अनेक बातों के अंत में यों का यों उल्लिखित है। प्रस्तुत संस्करण को तैयार करने में इन सभी प्रतियों के आधार से पाठों का मिलान करने और शुद्ध करने में बड़ी सहायता मिली।

मैं जब बीकानेर में था तब मुनि श्री जिनविजयजी महाराज का बीकानेर पधारना हुआ था। उस समय श्री नाहटाजी के द्वारा ख्यात की प्रेस कॉपी दिखाने पर मुनीजी ने इसे पुरातत्वान्वेषण मंदिर, जयपुर (वर्तमान नाम 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) से प्रकाशित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। उनकी कृपा के फलस्वरूप इस ख्यात के ये चारों भाग पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं।

समस्त ख्यात-ग्रंथ तीन भागों में सम्पूर्ण हुआ है। चौथा भाग इस वृहत् ग्रंथ का महत्वपूर्ण परिशिष्ट भाग है। इसमें चारों भागों की विस्तृत विषय-सूची, भूमिका, नैणसी और महाराजा जसवन्तसिंह के सम्बन्ध की आवश्यक जानकारी और वैयक्तिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक नामों के तीन विभागों के सात उप-विभागों में इस ख्यात की वृहत् नामानुक्रमणिका पृष्ठांकों के साथ दी

गई है। इस नामानुक्रमणिका में १०००० हजार से अधिक नामों का संकलन हुआ है। नामों की इतनी बड़ी संख्या दूसरे ख्यात ग्रन्थों में शायद ही आ सकी होगी। इनके अतिरिक्त पद, विरुद और उपाधि आदि ख्यात में प्रयुक्त विशिष्ट संज्ञाओं की विशिष्ट अर्थों के साथ नामावली, ख्यात में प्रयुक्त पुत्र-संज्ञक ५३ और पौत्र-संज्ञक १७ पर्यायवाची शब्दों की सूची, कुछ विशेष व्यक्तियों का जन्म-समय और जन्म-कुण्डलियें (जो केवल अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर की प्रति में ही प्राप्त हैं,) नामानुक्रमणिका की सम्पूर्ति और शुद्धि-पत्र आदि ख्यात से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण और उपयोगी विषय इस चौथे भाग में दिए गए हैं।

ख्यात के इस संस्करण को तैयार करने में मुझे जिन महानुभावों की सहायता प्राप्त हुई है, उनमें इसके आदि प्रेरक मेरे परम मित्र और सहपाठी स्व० श्री रामयश गुप्त का नाम चिरस्मरणीय है। इसके प्रकाशन से उनकी आत्मा को अपनी उत्कट साहित्यानुरागिता के एक अंश की पूर्ति होने के रूप में शांति मिलेगी।

महामहोपाध्याय स्वर्गीय पंडित विश्वेश्वरनाथजी रेउ, महामहाध्यापक स्व. पं. रामकर्णजी आसोपा और विद्यामहोदधि श्री नरोत्तमदासजी स्वामी तथा दो वे महानुभाव जिनके नाम ज्ञात नहीं हो सके हैं, जिन्होंने अपनी हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग करने की सहायता की, बहुत आभारी हूं।

श्री अगरचन्दजी नाहटा का सहयोग, प्रकाशनार्थ प्रयत्न और प्रेरणा के कारण इनका बड़ा भारी आभारी हूं।

जोधपुर के श्री मांगीमलजी मुहणोत एडवोकेट ने अपनी वंश-परम्परा में स्वनाम-धन्य नैणसी की शाखा से सीधा सम्बन्ध रखने वाले श्री सुधराजजी मुहणोत से 'नैणसी री ख्यात' प्राप्त करने के लिए कई बार प्रयत्न किए पर इन्हें भी अन्यों की भाँति निराश ही होना पड़ा। इनकी इस सहृदयता के लिए मैं इनका बहुत कृतज्ञ हूं।

आचार्य श्री परमेश्वरलाल सोलंकी ने अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की प्रति प्राप्त करने और उससे पाठों का मिलान करने, नोट्स तैयार करने आदि की अमूल्य सहायता के लिए इनका बड़ा आभारी हूं।

चि. भूपतिराम की सहायता और उस प्रति को प्राप्त करने के प्रयत्न, जिसके फलस्वरूप प्रति प्राप्त हुई और रुका हुआ काम आगे चला, अपनी पितृ-

सेवा की निर्मल भावना और कर्त्तव्य-पालन के उपलक्ष्य में आयुष्मान्, श्रीवृद्धि और सफल जीवन के अनंत आशीर्वादों के निरन्तर अधिकारी हैं।

ख्यात के प्रथम दो भागों का प्रूफ-रीडिंग प्रायः प्रतिष्ठान के वरिष्ठ शोध-सहायक श्री पुरुषोत्तमलालजी मेनारिया ने किया है। इनका भी मैं आभारी हूं।

साधना प्रेस, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का बहुत आभारी हूं जिन्होंने इस सुंदर रूप से ग्रंथ का मुद्रण ही नहीं किया, अपितु बहुत सावधानी से और बार-बार प्रूफ की भूलों को सुधारने में अमूल्य सहायता की है।

अन्त में राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सम्मानीय संचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी महाराज का इसके प्रकाशन के लिए अत्यंत आभारी हूँ, जिनकी कृपा के फलस्वरूप यह महत्वपूर्ण ग्रंथ इस सुन्दर रूप में प्रकाशित हो सका है। और इसी प्रकार प्रतिष्ठान के उप-संचालक पण्डित गोपालनारायणजी बहुरा का आभारी हूँ जिनका मधुर व्यवहार और प्रकाशन के लिए हर संभव प्रयत्न सदा प्राप्त होता रहा है।

साकरिया - सदन
वल्लभ-विद्यानगर
रामनौमि, २०२४ वि.

आ. बदरीप्रसाद साकरिया

मुंहता नैणसी



[नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'मुंहणोत नैणसी की ख्यात' से सधन्यवाद पुनर्मुद्रित]

जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम के दीवान प्रसिद्ध ख्यात-लेखक मुंहता नैणसी

भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के मालाणी परगने के इतिहास-प्रसिद्ध खेड़-पाटण नगर में गोहिल क्षत्रियों[1] के राज्य को नष्ट कर मारवाड़ में राठोड़ राज्य की सर्व प्रथम नींव डालने वाले राव सीहा और उनके पुत्र राव आसथान हुए। राव आसथान के पौत्र राव रायपाल हुए। रायपाल के चौदह पुत्रों में से सब से बड़ा खेड़-पाटण का स्वामी राव कनपाल हुआ, जिसके एक भाई का नाम मोहण था। मोहण ने जैसलमेर में श्री जिनचंद्रसूरिजी से जैन-धर्म स्वीकार कर लिया[2]।

---

१. राव सीहा के पुत्र राव आसथान ने इतिहास-प्रसिद्ध खेड-पाटण के स्वामी गोहिल और उनके मन्त्रियों को भगाकर राठोड़-राज्य की स्थापना इस नगर में सर्व प्रथम की। (इसीलिये राठोड़ों की मूल शाखा खेड़ेचा कहलाई)। गोहिल और डाभी आसथान के आतंक से भाग कर सौराष्ट्र में चले गये और वहां अपने राज्य कायम किये। ओझाजी ने लिखा है कि खेड़ या खेड़पुर 'क्षीरपुर' का अपभ्रंश रूप होना चाहिये। इस समय यह नगर खंडरों का ढेर है। केवल दो-एक पुराने मन्दिर शेष हैं। बड़े मन्दिर में श्री रणछोड़राय की बड़ी भव्य और कलापूर्ण मूर्त्ति दर्शनीय है। मूर्त्ति की चौकी पर सं० १२३२ फाल्गुन सुदि २ सोमवार का लेख अङ्कित है। कुछ समय पूर्व श्रीऋषभदेव के मंदिर का एक तोरण प्राप्त हुआ है जिस पर सं० १२३७ में विजयसिंहसूरि द्वारा इस तोरण की प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है। एक मत के अनुसार मोहणोत शाखा के प्रवर्त्तक मोहणजी ने यहां ही जैनधर्म स्वीकार किया था।

२. भाटों की ख्यातों में मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि एक बार मोहनजी शिकार करने गये। उनके हाथ से एक गर्भवती हरिणी का शिकार हुआ। उसे मरते देख मोहनजी का चित्त व्याकुल होगया और वे खेड़ ग्राम की बावड़ी के पास आकर खड़े हुए। इतने में ही उसी रास्ते से जैन यतिवर्य शिवसेनजी आ पहुँचे। उन्होंने मोहनजी को छळ छान पानी पिलाने को कहा। मोहनजी ने पानी पिलाया और हरिणी को जीवत दान देने के लिए यति महाराज से प्रार्थना की। यतिजी ने उसे जीवनदान दिया। मोहनजी ने उनको अपना गुरु माना और वि० सं० १३५१ कार्तिक सुदि १३ को खेड़ ग्राम में उनके द्वारा जैन-धर्म अंगीकार किया। इससे मोहनजी के परिवार वाले मुहणोत कहलाए।

—'हिन्दुस्तानी' पृ० २६७, मुहणोत नैणसी और उनके वंशज' नामक श्रीहजारीमल बांठिया का लेख और 'ओसवाल जाति का इतिहास' के 'ओसवाल जाति के प्रसिद्ध घराने' नामक खण्ड में 'मुहणोत' उपखंड पृ० ४६ एवं 'महाजन वंश मुक्तावली।'

अतः इनके वंशज भी जैन-धर्मावलंबी ही बने रहे और जैन-धर्म को मानने वाली प्रधान जाति ओसवालों में मिलकर अपने पुरखा मोहणजी के नाम से मोहणोत (मुहणोत) शाखा के ओसवाल कहलाये।

ओसवाल जाति में परिवर्तित होने पर भी आत्मीयता के कारण अपने राठोड़ वंश से मोहणोतों का कई पीढ़ियों तक राज्य-प्रबन्ध और संचालन-विषयक सम्बन्ध बना रहा।

मोहणजी से २०वीं या २१वीं पीढ़ी में नैणसी के पिता मुंहता जयमल हुए। जयमल ने महाराजा सूरसिंह और महाराजा गजसिंह के काल में मारवाड़ के जागीरी ठिकानों और राज्य के उच्च पदों पर रह कर मारवाड़ की बड़ी सेवाएँ की थीं[३]। महाराजा गजसिंह के समय वि. सं. १६८६ में यह मारवाड़ राज्य के दीवान बन गये थे[४]। यह बड़े दानी[५] और धार्मिक प्रकृति के होने पर भी बड़े वीर थे। इन्होंने फलोदी और जालोर आदि परगनों को मारवाड़ राज्य में पुनः मिलाने के लिये सेनाओं का संचालन किया था और विजय प्राप्त की थी।

मुंहता जयमल के पांच पुत्रों में नैणसी सब से बड़े थे। इनका जन्म जयमल की प्रथम पत्नी सरूपदे की कोख से वि. सं. १६६७ मिगसर शु. ४ शुक्रवार को

---

३. माधोदास केसोदासोत भलो रजपूत हुवो। सं० १६९४ रावळा थी गांव भवराणी गांवां १० सूं दीवी हुती। इणरा चाकर जैमल मुहणोत खानाजंगी कीवी जद भवराणी छोड़ सं० १६८८ मोहबतखां रैं वसियो। पछै अमरसिंघजी रैं। पछै राजा जैंसिंघजी रैं वसियो माधोदास।

—बांकीदास री ख्यात, बात सं० १८१४

४. मुहणोत श्री मांगीमल एडवोकेट, तथा श्री गोविन्दनारायण मोहणोत एडवोकेट द्वारा प्राप्त– 'Brief family history of Mohnots' में दीवान बनने का सम्वत् १६९० दिया है।

५. जयमलजी का नित्य साधुओं को जलेबी बांटने का नियम था। जब उनका देहान्त हो गया तो साधुओं को जलेबी मिलनी बंद हो गई। तब किसी कवि ने कहा कि—

परालब्ध पलटया परा, दीजै किणनै दोस।
जैमल जळेबी ले गयो, साधां करो संतोस॥

—विश्वमित्र, पूजा दीपावली अंक, १९६३, श्रीरामनारायण मोहणोत, कलकत्ता के 'प्रशासक व इतिहासकार नैणसी' नामक लेख से।

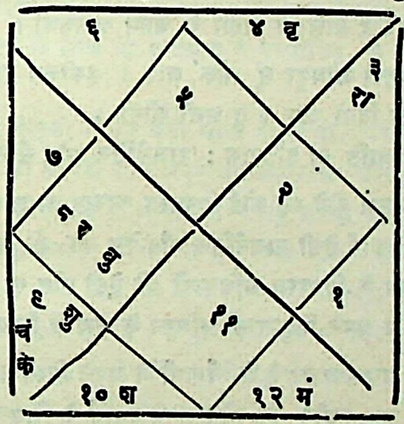
बांकीदास ने भी अपनी ख्यात की बात सं० २१०३ में अनेक दाताओं के नामों के साथ मुहणोत जैमल, जालोर का नाम भी अच्छे दाताओं में गिनाया है।

हुआ था[६]। नैणसी अपने पिता की भाँति वीर और कुशल कार्यकर्त्ता तथा प्रबन्धक थे। इन्होंने महाराजा गजसिंह और जसवन्तसिंह-प्रथम के काल में कई लड़ाइयों का संचालन किया था। सम्वत् १६९४–९५ में बलोचों से फलोदी की लड़ाई, सं. १७०० में राड़धरा की लड़ाई हुई जिनमें विजय प्राप्त की। सं. १७०६ में पोकरण का परगना बादशाह शाहजहाँ ने महाराजा जसवन्तसिंह को इनायत किया; पर उस पर जैसलमेर वालों का अधिकार था। महाराजा के कार-बारियों के पहुँचने पर रावल रामचंद्र ने अपना अधिकार छोड़ना स्वीकार नहीं किया। इस पर महाराजा जसवंतसिंह ने राठौड़ वीर सैनिकों और नैणसी को सेना देकर भेजा[७]। लड़ाई के पश्चात् राठौड़ी सेना का पोकरण पर अधिकार हो गया। इधर रावळ मनोहरदास के बाद भी महाराजा ने नैणसी के साथ सवलसिंह की सहायतार्थ सेना भेजकर रावल रामचंद्र को जैसलमेर से भगा दिया और सबलसिंह को जैसलमेर का स्वामी बना दिया। इस प्रकार कई लड़ाइयों में नैणसी ने अपने अद्भुत साहस और युद्ध-कुशलता का परिचय दिया था।

नैणसी विद्यारसिक, कवि और इतिहास लिखने के शौकीन थे।

---

६. संवत १६६७ मिगसर सुद ४ वार शुक्र, उ० ४२। गतांश ९ मु० श्रीनैणसीजी जनम



—हमारे निज के संग्रह 'विगत' में से और श्री मदनराज दौलतराम मेहता, जोधपुर के संग्रह में – 'संवत १७६२ रा मिती असाढ सुद ६ मुंहणोत अमरसिंघजी री पोथी सूं'।

७ सं० १७०६ रा असाढ वद ३ जोधपुर सूं फौज पोहकरण माथै विदा कीवी। राठोड़ गोपाळदास सुंदरदासोत मेड़तियो १, राठोड़ वीठळदास सुंदरदासोत मेड़तियो २, वीठळ-दास गोपाळदासोत चांपो ३, नारखान राजसिंघोत कूंपो ४, भंडारी जगनाथ ५, मुणोयत नैणसी ६, सिंगवी प्रताप ७।　　　—बांकीदास री ख्यात, बात सं० ३२१

सम्वत् १७१४ में महाराजा जसवंतसिंह ने नैणसी की सेवाओं से प्रसन्न होकर मियां फरासतखां की जगह इन्हें अपने मारवाड़ राज्य का दीवान बना दिया। सं. १७२३ तक इस महत्वपूर्ण पद पर इन्होंने बड़ी योग्यता से काम किया।

महाराजा जसवंतसिंह को औरंगजेब की आज्ञा से प्रायः जोधपुर से बाहर रहना पड़ता था। उस समय राज्य के अपने सारे कार्य-भार को सम्हालने का अधिकार नैणसी को दिया हुआ था। राज्य की अच्छी सेवाएँ करने वाले को इन्हें गांव बख्शिश कर देने तक का अधिकार था। महाराजा ने अपनी अनुपस्थिति में महाराजकुमार की देख-भाल का काम भी इन्हीं को सौंप रखा था[८]।

कहा जाता है कि बाद में महाराजा इन पर खूब अप्रसन्न हो गये थे[९]।

---

८ दीवानगी के काम में नैणसी कितना विश्वस्त, सच्चा और ईमानदार था इस बात का पता महाराजा की ओर से लिखे गये पत्र से मालूम हो जाता है—

'सिधश्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री जसवंतसिंघजी वचनातु॥ मु॥ नैणसी दिसे सुप्रसाद वांचिजो। अठारा समंचार भला छै। थांहरा देजो। लोक, महाजन रैत री दिलासा कीजो। कोई किण ही सौं जोर ज्यादती करण न पावै। कांठां-कोरां रो जापतो कीजो। कंवर रै डील रा पांणी रा जतन करावजो।

अरजदास थांहरी जोधपुर सूं फेरूं आई। हकीकत मालुम करी। थे रुगनाथ लखमीदासोत नूं पटो दियो गांव ३ सु भलो कीनो।

—ओसवाल जाति का इतिहास : 'राजनैतिक और सैनिक महत्व' खंड, पृ० ४६.

९ नैणसी के ऊपर अप्रसन्न होने का कोई विश्वस्त कारण तो ज्ञात नहीं हो सका है; पर बात है यह सच्ची। कोई ऐसी राजनैतिक दांव-पेच की ही बात होनी चाहिए जिसके कारण इतने ऊंचे पद के विश्वस्त अधिकारी को ऐसी मौत का कारण बनना पड़े। श्री हजारीमल बांठिया ने अपने हिंदुस्तानी पत्रिका के लेख में लिखा है कि—

'जनश्रुति से पाया जाता है कि नैणसी ने अपने रिश्तेदारों को बड़े-बड़े पदों पर नियत कर दिया था, और वे लोग अपने स्वार्थ के लिए प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। और इसी कारण महाराजा ने नैणसी तथा सुंदरसी दोनों बंधुओं को माघ वदि ९ (ता० २९ दिसंबर) को कैद कर दिया।'

श्री अगरचंद नाहटा ने 'वरदा' वर्ष ३ अंक १ में 'अपूर्व स्वामीभक्त राजसिंह खींवावत की ऐतिहासिक बात' में लिखा है कि—

'महाराजा जसवंतसिंह का नैणसी के ऊपर नाराज हो जाने का कारण प्रजा पर अत्यधिक हासल (कृषि-कर) वृद्धि कर देने के कारण प्रजा का राज्य छोड़ कर अन्यत्र चले जाना और जिससे गांवों का उजड़ जाना एवं जिसके कारण सात वर्षों में अठारह

महाराजा जसवंतसिंह छत्रपति शिवाजी को दबाने के लिये औरंगजेब की

लाख रुपयों की हानि होना बताया है। इन अठारह लाख रुपयों को नैणसी से दंड के रूप में वसूल करने की महाराजा ने आज्ञा करदी। नैणसी किसी भी प्रकार से रुपये देने को तैयार नहीं था। उसने तो एक पाई भी खाई नहीं थी। तब राजसिंह ने महाराजा से बहुत आग्रहपूर्वक प्रार्थना करके यह दंड तो माफ करा दिया, परन्तु महाराजा ने उसी समय नैणसी को दीवानगीरी से हटाकर उसकी जगह मिनै भंडारी को रख दिया और यह आज्ञा करदी कि भविष्य में मेरी कोई भी संतान किसी भी मुंहणोत को राज्य-सेवा में नहीं रखेगी; ये देश और राज्य का बुरा चाहने वाले हैं।'

श्री रामनारायण मुहणोत कलकत्ता ने 'विश्वमित्र' दीपावली विशेषांक, १९६३ में इसके संबंध में बड़ी महत्वपूर्ण दो घटनाओं का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं—

(१) महाराजा जसवंतसिंह के बड़े पुत्र पृथ्वीसिंह की वीरता पर महाराजा को गर्व था। गर्व का परिणाम मजाक ही मजाक में यह हुआ कि पृथ्वीसिंह और बादशाह के एक जंगली सिंह की लड़ाई का खेल बादशाह ने देखना चाहा। प्रोग्राम बनाया गया। कुश्ती हुई, पृथ्वीसिंह ने बिना हथियार के शेर को चीर डाला। इससे पृथ्वीसिंह की वीरता की शोहरत और भी अधिक फैल गई। लेकिन औरंगजेब को बड़ी बेचैनी और ईर्षा हुई। पृथ्वीसिंह की इस वीरता के संबंध में कवियों ने बहुत कुछ कहा है। पृथ्वीसिंह के शिक्षक नैणसी थे। अतः पृथ्वीसिंह के साथ नैणसी भी बादशाह की आंखों में खटकने लगे। नैणसी के लिए भी बादशाह ने पृथ्वीसिंह के साथ ही साथ जाल बिछाना शुरू किया।

(२) एक बार नैणसी ने एक बड़ी भारी दावत दी, जिसमें महाराजा जसवंतसिंह भी आये। दावत की तैयारी और अद्भुतता महाराजा और औरंगजेब के दरबारी देख कर दंग रह गये। औरंगजेब के आदमियों ने यह अच्छा मौका देखा। उन्होंने महाराजा के कान भरे। महाराजा ने नैणसी से एक लाख रुपये की कबूलात के रूप में मांग की। नैणसी ने उस लाख रुपये की मांग को अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल और अपनी सेवाओं पर पानी फिराने वाला समझा। उन्होंने इनकार कर दिया और कह दिया कि—

लाख लखारां नीपजे, बड़ पीपळ री साख।
नटियो मूंतो नैणसी, तांबो देण तलाक॥

(कबूलात उस प्रथा का नाम था जिसके अन्तर्गत राजा उसके राज्य के किसी भी जागीरदार अथवा प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपनी मनचाही रकम मांग सकता था और वह उसे चुकानी ही पड़ती थी।)

नैणसी के कबूलात देने से इनकार कर देने के बाद उन्होंने जोधपुर में रहना उचित नहीं समझा और वह गुजरात की ओर चले गये तथा मार्ग में ही उनका देहान्त हो गया। उसी समय औरंगजेब ने महाराजा को गवर्नर नियुक्त करके काबुल भेज दिया और पृथ्वीसिंह को युवराज बना दिया। युवराज पद के उत्सव के समय औरंगजेब ने

आज्ञा से औरंगाबाद के थाने में नियत थे तब वि. सं. १७२३ में नैणसी और इनका भाई सुंदरसी भी महाराजा के साथ औरंगाबाद में गये हुए थे, वहां इन दोनों को कैद कर दिया और सं. १७२५ में दोनों भाइयों पर एक लाख रुपये दंड के लेने का निर्णय कर छोड़ दिया। परंतु इन्होंने दंड का एक पैसा भी देना स्वीकार नहीं कर के कैद में रहना ही उचित समझा। जब इन्होंने किसी भी प्रकार दंड देना स्वीकार नहीं किया तो महाराजा ने कैदी की ही हालत में इन्हें जोधपुर ले जाने की आज्ञा कर दी। देश में कैदी की हालत में लेजाने का यह अपमान इन्हें सहन नहीं हुआ और इससे भी अधिक मार्ग में महाराजा के मनुष्यों द्वारा तिरस्कार और कठोरतापूर्ण व्यवहार से इन्हें जीवन से ग्लानि हो गई। इसलिये ऐसे अपमानजनक जीवन से इन्होंने मरना अच्छा समझा। जन्मभूमि में पहुंचने के पहले मार्ग में फूलमरी गांव के पास वि. सं. १७२७ की भादों वदि १३ को दोनों भाइयों ने कटारें खाकर अपनी जीवनलीला समाप्त करदी[१०]।

नैणसी और सुंदरसी के दंड नहीं देने की इस घटना ने नट जाने की मनोवृत्ति वाले लोगों के लिये एक लोकोक्ति का रूप धारण कर लिया और जिसके कारण नैणसी जन-जीवन में अमर हो गये। जन-जन के जीवन में स्थान पाया हुआ लोकोक्ति का वह दोहा इस प्रकार प्रसिद्ध है—

लाख लखारां नीपजै, वड़ पीपळ री साख।
नटियो मूंतो नैणसी, तांबो देण तलाक[११]॥

पृथ्वीसिंह को विशेष प्रकार की पोशाकें पहनाईं जिनके पहिनते ही पृथ्वीराज का काम तमाम हो गया। पृथ्वीसिंह की मृत्यु के समाचार से दुखी होने के कारण जसवंतसिंह की भी काबुल में मृत्यु होगई। नैणसी के कार्यों से प्रेरणा प्राप्त कर फिर वीर दुर्गादास ने जसवंतसिंह के परिवार और मारवाड़ को औरंगजेब के हाथों से बचाया।

१०. देखिये रामनारायण दूगड़ द्वारा अनुवादित 'मुहणोत नैणसी की ख्यात, द्वितीय खंड में ओझाजी द्वारा लिखित मुंहणोत नैणसी का वंश-परिचय' पृ० ३। हिन्दुस्तानी में 'मुहणोत नैणसी और उनके वंशज' लेखक श्री हजारीमल बांठिया, पृ० २७६ और 'ओसवाल जाति का इतिहास' के 'ओसवाल जाति के प्रसिद्ध घराने' नामक खंड में 'मुहणोत' उपखंड।

११. दोहे का भावार्थ इस प्रकार है—

'लाख लखारों के यहाँ मिलती है या वट और पीपल वृक्षों की शाखाओं में उत्पन्न होती है। यहाँ तो वह भी नहीं है। लाख रुपये दण्ड के रूप में की जो बात कही है—उसके

कहा जाता है कि नैणसी और सुंदरसी दोनों भाइयों ने जेल में अपनी ऐसी स्थिति से दुखी होकर परस्पर एक दूसरे को संबोधन करके वेदना-काव्य की रचना की थी, उसमें से दो दोहे प्रस्तुत हैं—

नैणसी—वहाड़ो जितरै देव, वहाड़ं बिन नहीं देव है।
सुर नर करता सेव, (अब) नेड़ा न आवै नैणसी ॥

सुंदरसी—नर रै नर आवे नहीं, आवै धन रै पास।
सो दिन आज पिछाणिये कहवै सुंदरदास ॥

नैणसी जिस प्रकार एक राजनैतिक, ऐतिहासिक और वीर पुरुष थे, उसी प्रकार वे एक अच्छे भक्त-कवि भी थे। इनके रचे हुए कई गीत और छंद जानने में आये हैं। यहां ईश्वर-स्तुति का एक डिंगल गीत दिया जा रहा है। गीत के भावों से पता लगता है कि यह रचना भी उनके बंदी-जीवन के समय की ही होगी[१२]।

गीत जाती गोरव मेहता नैणसीजी रो कह्यौ

सदा श्रीनाथ जिण नाम असरण-सरण, तारिया गयंद जळ मांझ तारण-तरण।
हाथ मत छोड़ियो जेण वेळां हुरण, तो गिरधरण गिरधरण गिरधरण गिरधरण ॥१॥

जास री आस जीवत सगळो जगत, प्रथी आकास पाताळ मांझी प्रवत।
थिरपियो अटळ ध्रूमंडळ वेखो थिकत, तो दीनपत दीनपत दीनपत दीनपत ॥२॥

मार मध कीट पहळाव जीतो समर, काज पहळाद हिरणंखि गंजे गहर।
वड बळ जीपवा वीर-धीराधिवर, तो संखधर, संखधर संखधर संखधर ॥३॥

कूड़ संसार विख सिंधु भरियो कहर, लोभ री लहर अजाद सुकृत लहर।
नयणसी भज सोइ नाथ करिवा निजण, तो साच हरि साच हरि साच हरि साच हरि ॥४॥

करुणा से ओत-प्रोत भगवान श्रीकृष्ण से की गई प्रार्थना का गीत वास्तव में बंदी-जीवन के कष्टों के कारण ही निकले अंतर के निर्मल उद्गार हैं। इस गीत के भाव, भाषा-सौष्ठव, वयण-सगाई अलंकार और रचना शैली आदि से

लिये तो नैणसी नट गया सो नट ही गया। एक पैसा भी देने की उसने तलाक ले रखी है।'

ऐसा ही यह एक दोहा दोनों भाइयों के नाम से प्रसिद्ध है—

लेसो पीपळ लाख, लाख लखारां लावसो।
तांबो देण तलाक, नटिया सुंदर नैणसी ॥

१२. यह गीत राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ने भेजा है। लेखक इनकी सहृदयता के लिये आभारी है।

पता लगता है कि नैणसी एक उच्च कोटि के कवि थे और भक्त-कवि भी थे।

नैणसी और उनके भाई सुंदरसी को जेल में डालने, जेल से मुक्ति की एवज में एक लाख रुपये दंड किये जाने, किन्तु जीते जी दंड के रुपये नहीं भरने की नैणसी की कठोर प्रतिज्ञा और महाराजा जसवंतसिंह की ओर से दंड को माफ कर देने की, अथवा जेल में बंदी बना कर नहीं रखने की और कबूलात वसूल करने की ऐसी अनेक परस्पर-विरोधी इतिहास और लोक-विश्रुत बातों के अतिरिक्त एक यह भी आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण बात है कि महाराजा जसवंतसिंह ने इस दंड को माफ नहीं किया था और नैणसी और सुंदरसी के साथ उनके परिवार को भी कैद कर लिया था जिसे नागोर के सहदेव सुराना के द्वारा दंड वसूल करके छोड़ा था[१३]। इससे मालूम होता है कि नैणसी और सुंदरसी का अपराध कोई साधारण अपराध नहीं था। बाल-बच्चों और क़बीले को कैद में डाल देना किसी अवांछनीय असाधारण घटना या गंभीर अपराध का सूचक है। चाहे यह दोषारोपण ही हो, पर इसके मूल में कोई ऐसी आघातजनक बात जरूर होनी चाहिये, जिसे असत्य सिद्ध करने की दलीलें किसी समय के अत्यन्त विश्वसनीय दीवान नैणसी के द्वारा महाराजा को संतोष नहीं करा सकी होंगी, जिससे वे लाख रुपये के दंड के अपने निर्णय को बदलने के लिये किसी भी प्रकार राजी नहीं हो सके। और उनके बाल-बच्चे और स्त्रीवर्ग को कैद में डाल कर के एक तीसरे व्यक्ति से ही सही, उनके ऊपर किया गया दंड वसूल कर लिया गया।

किन्तु ओझाजी ने तो इतना ही लिखा है कि नैणसी और सुंदरसी के आत्मघात कर लेने से महाराजा जसवंतसिंह ने नैणसी और सुंदरसी के पुत्रों को भी छोड़ दिया। दंड वसूल करने या नहीं करने का कोई उल्लेख उन्होंने नहीं किया है[१४]।

नैणसी के जीवन की ऐसी अनेक अनोखी घटनाओं में से एक घटना इनके एक विवाह के सम्बन्ध में भी कही जाती है। नैणसी जब जालोर पर अमल किए हुए थे तब इनकी सगाई बाड़मेर के कामदार कमा की बेटी कमळा (?)

---

१३. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित 'बांकीदास री ख्यात', बात सं० २१०६ (पृ० १७४)—

'नागोर रै सुराणै सहदेव चूहड़मलोत लाख रुपियां आपरा घर सूं राज में भर मुहणोत नैणसी सुंदरदास रा छोरू क़बीला कैद सूं कढाया।'

१४. द्रष्टव्य, रामनारायण दूगड़ द्वारा अनुवादित 'मुंहणोत नैणसी की ख्यात' द्वितीय खण्ड श्री ओझाजी द्वारा लिखित 'मुंहणोत नैणसी का वंश-परिचय' पृ० ३।

से हुई थी। उस समय के राजाओं और दीवानों के रिवाज के अनुसार इन्होंने भी अपने प्रतिनिधि के रूप में अपना खड्ग विवाह करने के लिए भेज दिया। नैणसी स्वयं बरात बनाकर विवाह करने को नहीं गये। इस बात को कामदार कमा ने अपना अपमान समझा। उसने खड्ग के साथ दुलहिन की बजाय मूसल को भेज कर खड्ग की बरात को अपमानित करके लौटा दिया। इस अविवेक का परिणाम जो होना था सो ही हुआ। नैणसी ने बाड़मेर पर आक्रमण कर दिया और लूट-खसोट करके उसको तहस-नहस कर दिया। बाड़मेर उजड़ गया[१५]।

नैणसी कलम और तलवार दोनों के धनी थे। उन्होंने एक ओर एक वीर की भाँति अनेक विकट घटनाओं और युद्धों में सरदारी की, दीवान बन कर मुसाहिबी की; तो दूसरी ओर इतिहास की घटनाओं और तथ्यों का संकलन कर 'ख्यात' और 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' (गजेटियर या सर्व-संग्रह) जैसे वृहत् और महत्वपूर्ण ग्रन्थों को लिख कर इतिहासकार के रूप में इतिहास और साहित्य दोनों क्षेत्रों में बड़ी भारी सेवाएँ कीं। इतिहासकार इनकी प्रशंसा ही नहीं करते, किन्तु इनसे प्रेरणा और आधार भी प्राप्त करते हैं। इनकी ख्यात इतिहास की दृष्टि से अन्य सभी ख्यात-ग्रन्थों से अधिक विश्वस्त और महत्व-पूर्ण है। यही कारण है कि राजस्थान के सभी ख्यात-ग्रंथों में इस ख्यात ने सब से अधिक ख्याति प्राप्त की है।

नैणसी का 'मारवाड़ रा परगनां री विगत'[१६] (सर्व-संग्रह) भी प्रायः ख्यात जितना ही बड़ा ग्रंथ है। यह मारवाड़ राज्य की सर्वेक्षण रिपोर्ट और गजेटियर है। उस काल का ऐसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ साहित्य-जगत् में अभी तक दृष्टिगत नहीं हुआ। इसमें उन्होंने मारवाड़ के सभी परगने, परगनों के गाँव, गाँवों की आमदनी, जागीरी ठिकाने, उनकी रेख-चाकरी, भूमि की किस्म, इक-साखिया,

---

१५. मुहणोत नैणसी जाळोर आमल जद बाड़मेर रो कामदार कुमो जिणरी बेटी री सगाई नैणसीजी सूं कीवी। नैणसी परणीजण नै गयो, ('परणीजण न गयो' होना चाहिये) खांडो बाड़मेर मेलियो। कमो मूसळ खड़ग सामो मेलियो। डावड़ी और ठं परणायी। जिण कारण सूं नैणसी बाड़मेर हदवाट मेलियो। ('दहवाट मेळियो' होना चाहिये)। बाड़मेर प्रोळ रै कगार रै काठरा किंवाड़ हुता जिके आण जाळोर गढ री पोळ चढाया।
सायद— 'बाहड़मेर जुगां लग डूबो कमळा तणी कमाई।'
—बांकीदास री ख्यात : बात सं० २१२५, पृ० १७६

१६. इस वृहत् ग्रंथ का सम्पादन राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर के विद्वान् डाइरेक्टर डॉ० नारायणसिंह भाटी कर रहे हैं। पुस्तक मुद्रणाधीन है।

दु-साखिया फसलों का हाल, तालाब, कुएँ, कोसीटे, अरहट, गाँवों के जातिवार घरों की संख्या और उनकी आबादी और कृषक आदि जातियों की स्थिति का विस्तृत विवरण दिया है। आधुनिक जन-गणना में भी गाँवों की सभी प्रकार की स्थिति का इतना विस्तृत विवरण नहीं दिया जाता।[१७]

नैणसी के भाई सुंदरसी और आसकरण[१८] भी बड़े वीर हुए हैं। सुंदरसी प्रायः नैणसी के साथ ही रहा करते थे। वह महाराजा जसवन्तसिंह (सं० १७११ से सं० १७२३) के तन-दीवान (निजी मंत्री) भी रहे थे और कई लड़ाइयों में भाग लिया था।

नैणसी ने दो विवाह किए थे। पहला विवाह भंडारी नारायणदास की

---

१७ "......मध्ययुग में मुणोत नैणसी के द्वारा इस प्रथा (मर्दुमशुमारी) का आविष्कार देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। आपने एक पंचवर्षीय रिपोर्ट लिखी थी। हमने इसकी हस्तलिपि आपके वंशज जोधपुर निवासी श्री वृध्दराजजी मुणोत के पास देखी थी। इसमें उन्होंने मारवाड़ के परगने, ग्राम, ग्रामों की आमदनी, भूमि की किस्म, साखों का हाल, तालाब, कुएँ, विभिन्न जातियों के वृत्तान्त आदि अनेक विषयों का बड़ा ही सुंदर विवेचन किया है।......संवत् १७२१ में सीवाणा की मर्दुमशुमारी हुई......महाजन ८१, ब्राह्मण २५, सुनार १०, कुम्हार २, भोजग ४, सुतार ४, तुर्क ४०, पिंजारा १, छीपे २, नाई १, ढेड १६, थोरी २, जागरी १; राजपूत ९५, कुल २८३ घर आबाद थे। ......संवत् १७२१ में जोधपुर के हाट की दुकानें ८१५ थीं।......संवत् १७२१ आश्विन कृष्णपक्ष दशमी को परगनों की मर्दुमशुमारी की गई।...—

नाम परगना	कुल ग्राम	आबाद	वीरान	सांसण
१. जोधपुर परगना	११६७	८०२¼	२२०¾	१४४
२. सोजत परगना	२४४	१७९	३२	३३
३. जैतारण परगना	१५२	१०५	२९	१८
४. फलोधी परगना	६८	४९	१०	९
५. मेड़ता परगना	३८४	२९८½	४०	४५½
६. सीवाणा परगना	१४४	९४	२०	३०
७. पोकरण परगना	८५	४१	२८	१६
	२२४४	१५६८¾	३७९¾	२९५½

.........आपकी हस्तलिखित पंचवर्षीय रिपोर्ट से यह भी प्रतीत होता है कि उन्होंने मारवाड़ से संबंध रखने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का भी विवेचन किया है। वह रिपोर्ट क्या है, तत्कालीन मारवाड़ का जीता-जागता चित्र है।"

—ओसवाल जाति का इतिहास : 'मुणोत नैणसी और मर्दुमशुमारी' प्रकरण, पृ. ४७-५०

१८ 'ओफ फैमिली हिस्ट्री आफ मोहनोत्स' में उदयकरण नाम लिखा है।

पुत्री से और दूसरा मेहता भीमराज की पुत्री से हुआ था। दूसरी पत्नी से करमसी, वैरसी और समरसी नामक तीन पुत्र हुए थे। बड़ा पुत्र करमसी अपने पिता के समान ही वीर था। औरंगजेब के साथ महाराजा जसवंतसिंह और रतनसिंह की उज्जैन के निकट चोरनारायण की लड़ाई में वह बड़ी वीरता से लड़ कर घायल हो गया था[१९]।

नैणसी और सुंदरसी के आत्मघात कर लेने के बाद जब इनका परिवार (नैणसी और सुंदरसी के पुत्रों आदि को) जेल मुक्त किया गया तो करमसी ने ऐसी उपेक्षित और अपमानित दशा में जोधपुर राज्य में रहना उचित नहीं समझा। वे राव अमरसिंह के पुत्र राव रामसिंह के पास नागोर चले गये। किन्तु दुर्भाग्य ने वहां भी इनका पीछा नहीं छोड़ा। कुछ समय बाद जब करमसी आदि रामसिंह के साथ शोलापुर गये हुए थे वहां रामसिंह की अकस्मात् मृत्यु हो गई। इनके सेवकों ने यह झूठी अफवाह फैला दी कि करमसी ने इनको विष दे दिया है। रामसिंह के पुत्र इन्द्रसिंह ने करमसी को इस पर जीवित ही दीवाल में चुनवा दिया और इनके पुत्र आदि को बड़ी बेरहमी से मरवा डाला। यह घटना सं. १७३२ की कही जाती है। उस समय करमसी के दो पुत्र संग्रामसी और सामंतसी वहां से भाग कर किशनगढ़ आ गये और वहां से बीकानेर जा बसे[२०]। लेकिन महाराजा जसवंतसिंह के बाद जब महाराजा अजीतसिंह ने मारवाड़ राज्य पर अधिकार कर लिया तो उन्होंने संग्रामसी आदि को बीकानेर से बुलाकर हाकिम जैसी राज्य की उच्च सेवाओं में नियुक्त कर दिया[२१]।

इस प्रकार नैणसी के पूर्वजों और वंशजों ने अनेक संघर्ष और संकटों को सहन करते हुए राज्य की जो सेवाएँ की हैं वे बड़ी महत्वपूर्ण हैं और इतिहास की उल्लेखनीय घटनाएँ हैं। इन सेवाओं के बदले में इन्हें समय-समय पर जागीरें, जमीन, बाग, हवेलियां, पद, उपाधियां, खास रुक्के और रिआयतें इनायत होती रही हैं[२२] और मुसाहिब व मुतसद्दी वर्ग में उच्च स्थान प्राप्त किये हुए हैं। इन सभी

---

१९ (अ) Brief family history of Mohnots (unpublished).

(आ) चोरनारायण का युद्ध ही संभवतः धर्मत का प्रसिद्ध युद्ध है। मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृ. ३९८, पं० रामकर्ण आसोपा ने धर्मतपुर की टिप्पणी में लिखा है कि मारवाड़ की ख्यातों में चोरनराणा नाम लिखा है और कोई फतियाबाद बतलाते हैं।

२०. श्री ओझाजी, 'मुंहणोत नैणसी की ख्यात' द्वि० खंड नैणसी का वंश परिचय पृ० ३-४

२१-२२. उपरोक्त और 'ब्रीफ फैमिली हिस्ट्री आफ मोहणोत्स' (अप्रकाशित)

सम्मानों को प्राप्त करने का कारण इनकी वफादारी तो है ही, पर नैणसी और उसके पुत्र करमसी का बलिदान भी मुख्य कारण है।

जोधपुर राज्य और महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम के समय की बहियें, खरीते, फरमान, पट्टे, परवाने आदि रिकार्डों की जाँच से अथवा तत्कालीन गीत आदि साहित्य से तथा नैणसी के वंशज मोहणोत परिवार के पट्टे-परवानों आदि से नैणसी और उनके परिवार के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त होना संभव है। 'ब्रोफ फैमिली हिस्ट्री आफ मोहनोत्स' (अप्रकाशित) में नैणसी और सुंदरसी एवं नैणसी के पुत्र करमसी के सम्बन्ध में कुछ विस्तार से जरूर लिखा है फिर भी अपूर्ण ही है।

नैणसी के वंशज जोधपुर के अतिरिक्त जालोर, किशनगढ़ और मालवा आदि स्थानों में भी स्थित हैं और वे अच्छी स्थिति में हैं।

[१]

गीत सांणोर ठाकुरां नैणसीजी रो

सझि दळां कीध नैसणसी सुंदर,
दळे वडा-वड मांझी दोय।
किरमर-हथा न पूजै कळहर,
कलम-हथा नह पूजै कोय ॥१॥
जुव जांणग मांणग जैमलका,
मुणसां गुर-सदतारां मीढ।
ईढ नको असमर-झल आवै,
आवै लेखण-झला न ईढ ॥२॥
भीच बिनै राजेरा भारी,
गहण उधारी घड़ ग्रहै।
जोड़ नको विणियांणी-जाया,
रांणी-जाया उरै रहै ॥३॥

[२]

गीत सांणोर नैणसीजी रो

विषेय कवी

सझि दळां कीध नैणसी सुंदर,
लाखां जिसा कहै जुग लोय।
जणणी हेकण किणी न जाया,
दोय बांधव सारीसा दोय ॥१॥
बीजो नको वीकपुर बूंदी,
ढाल-उथाळ नको ढूंढाड़।
जैमल-रां सारीसा जोड़ो,
मारू नको, नको मेवाड़ ॥२॥
मेवासियां आसियां माथै,
जैत्राई कसिया जरद।
तढमल नको हिंदवै तुरकै,
मोहणोतां सारीसा मरद ॥३॥

दळ दिखणाध काछ धर उत्तर,
सह पूरब जोवतां सहोध।
दूजी धरा न दीठा दूजा,
जेसाहरा सरीसा जोध ॥४॥

[३]

गीत सांणोर मुंहणोत नैणसीजी रो

गड़ाबोड़ गजराज घँट-रोळ पाखर गरर,
भँवरपत चमर छत्र आप भावी।
मारिया महण फोजां पखै महपती,
आवसै चीत गज फोज आवी ॥१॥

सोह दरबार री (दरबारी) दानि ऋन सरीखा,
लोंह-रा-भँवर गज-फोज रा लाडा।
मालहरा बिनै चीतारसी मुरधरा,
आवती धीम नै हूंत आडा ॥२॥

जन मंत्री लालच बँधै गाजिया,
घणा दिन लगै चित घाट घड़सी।
घगड़ घड़ भाजण मंडोवर से-धणी,
चरड़ अचलाहरा चीत चढसी ॥३॥

त्रिविध घड़ भांजण जोध जैमलतरा,
सांइयरै वाग गैणाग सारे।
कायथां बांभणां तणो कहियो करे,
मछर-गुर नैणसी सूर मारे ॥४॥

छत्रपती आय वणियो इसो आज छक,
औरंग तोट पड़ ओतड़ै ऊर।
महाराजा जैसा इसा क्यु मारिजें,
सूरवर - आभरण नैणसी सूर ॥५॥

मुंहता नैणसी के सम्बन्ध के ये अज्ञात गीत और कवित्त बड़े महत्व के हैं। इन गीतों में नैणसी की वीरता, विद्वता आदि कई विशेषताओं के साथ अनेक युद्धों का संचालन करने, युद्धों में लड़ने और उनके स्वयं के मारे जाने के कारणों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। इन गीतों से नैणसी के सम्बन्ध में नये दृष्टिकोण उपस्थित होते हैं।

[४]

कवत मुहणोत नैणसीजी रा

थह सूतो भर निसह घोर करतो सादूळो ,
ओनींदो ऊठियो वडा रावतां सभूलो ।
पोहतो तीजी फाळ अजड़ हाथळ तोलतो ,
मेछ दळां मूगलां घात सीकार रमतो ।
मारियो सिरोही मुगल मिळ, खडग डसण धड़चं खळै ,
गड़ड़ियो सीह जैमाल रो, नैणसीह भरियो नळै ॥१॥
दांण भरै घरहरै भावां वाकां अस मिलसी ,
मुलक चूंथ मुलतांन सिसे मूळी गिलसी ।
किरसी कूजात जात जत लगा कवाई ,
वूंब करै बीबजी भजो बे भजो भाई ।
पंचनद परै अनहद वजै, असुरापण गमसी अलंग ,
नैणसी कसै जैमाल रो, पिछम धर ऊपर पमंग ॥२॥

नैणसी महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम के दीवान और ख्यात जैसे इतिहास-ग्रंथों के लेखक के रूप में तथा 'नटिया मूंतो नैणसी' की लोकोक्ति को जन्म देने वाले के रूप में लोक में प्रसिद्ध हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त उनकी अद्भुत साहसिकता और वीरता की कई अज्ञात घटनाओं पर भी ये गीत प्रकाश डालते हैं। नैणसी एक उच्च कोटि के कवि और श्रीनाथजी (श्रीबालकृष्ण) के भक्त थे । उनके स्वयं के रचे हुए बंदी-जीवन के करुणापूर्ण गीत से यह स्पष्ट है। यह गीत काव्य और भाषा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है जो यथाप्रसंग दिया हुआ है । उपरोक्त गीतों में 'जोड़ नको विणियांणी-जाया, रांणी-जाया उरै रहे' के विरुद वाला नैणसी एक ओर 'किरमर-हथा, असमर-झल, मछर-गुर, उधारी-धड़-गहण और सूरवर-आभरण' जैसा अद्वितीय खड्गधारी योद्धा है तो दूसरी ओर 'कलम-हथा, लेखण-झल, जांणग, मांणग और गुर-सवतारां' आदि विशेषणों वाला लेखन-धारी इतिहास-लेखक. बहुज्ञ, बहुतश्रुत, ऐश्वर्य और अधिकारों का उपभोग करने वाला और दातारों का गुरु है । इन सभी विशेषताओं वाला नैणसी वास्तव में एक युग-पुरुष था । 'जणणी हेकण किणी न जाया, वोय बांधव सारीसा वोय' नैणसी का भाई सुंदरसी भी इन्हीं के समान शूरवीर और कवि था ।

ये गीत हमें श्री नाथूरामजी खड़गावत, डाइरेक्टर, राजस्थान स्टेट आर्काइव्ज, बीकानेर से प्राप्त हुए हैं, अतः इनका बहुत आभारी हूं । सूचना के लिये श्री सौभाग्य-सिंहजी शेखावत का आभारी हूं ।

नैणसी के जीवन-प्रसंगों की प्रेस-कॉपी भेज देने के बाद ये गीत हमें प्राप्त हुए हैं । अतः यथाप्रसंग नहीं दिए जाकर यहाँ दिये जा रहे हैं । —मा. बदरीप्रसाद साकरिया

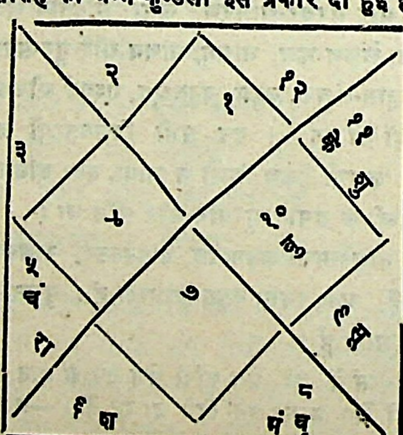
महाराजा जसवंतसिंह - प्रथम

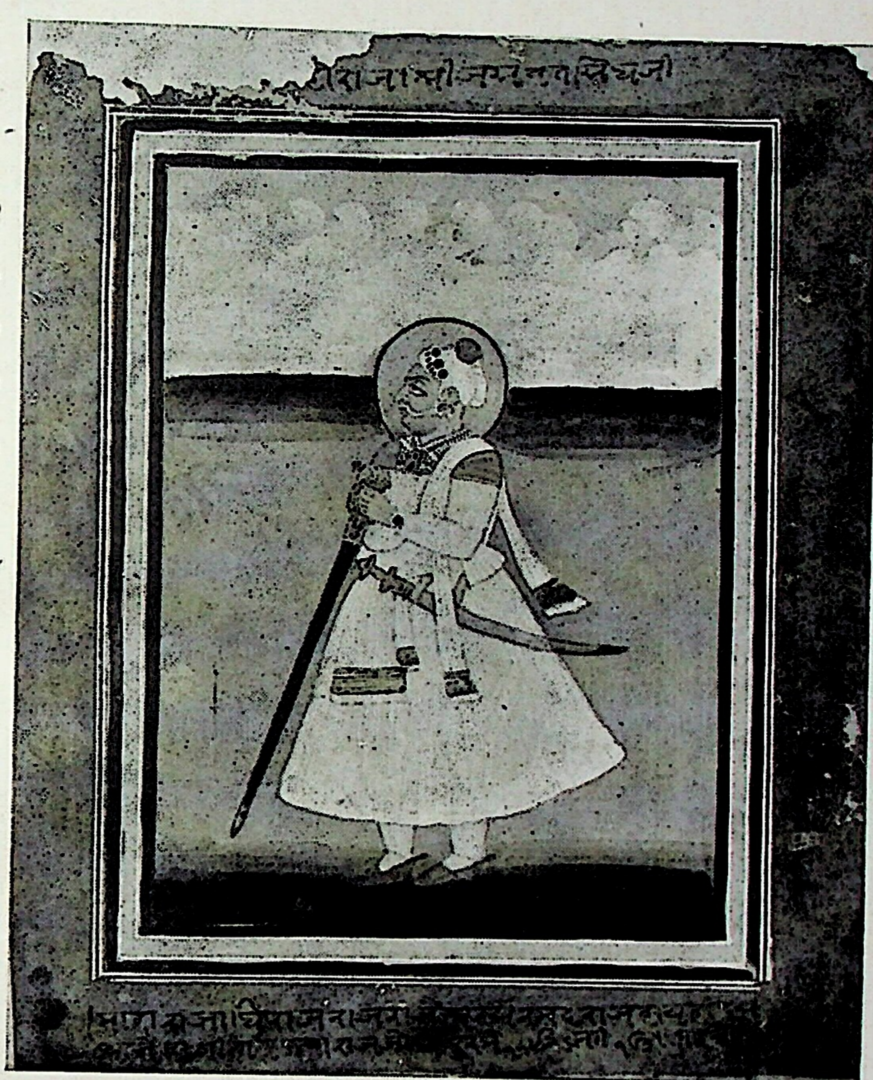
महाराजा जसवंतसिंह-प्रथम (वि. सं. १६८३-१७३५) के जीवनकाल में रचा गया यह महत्वपूर्ण ख्यात ग्रंथ और ख्यात-लेखक मुंहता नैणसी का इन महाराजा के साथ राज-कारणों के ऊंचे-नीचे और पारस्परिक संबंध ऐसे रहे हैं जिनसे महाराजा जसवंतसिंह के राज्य-काल में नैणसी के पूर्व और पश्चात् जितने भी राज्य के दीवान रहे हैं, उन सब में जितनी ख्याति नैणसी ने प्राप्त की है, उतनी किसी ने प्राप्त नहीं की। इसका कारण नैणसी की विद्वता, वीरता और योग्यता आदि तो है ही; किन्तु महाराजा जसवंतसिंह भी परोक्ष और अपरोक्ष रूप से एक कारण अवश्य हैं। नैणसी के जीवन के साथ इन महाराजा का मिष्ट और कटु उथल-पुथलों का इतना गहरा संबंध रहा है जितना अन्य किसी दीवान या राज-कर्मचारी के साथ कदाचित् ही रहा हो। इन संबंधों के विषय में अधिकांश बातें नैणसी की जीवनी के साथ उल्लिखित हो गई हैं। इसलिए उनके संबंध में यहाँ कुछ नहीं लिखा जा रहा है। नैणसी महाराजा के दीवान थे, इस पृष्ठिका को लक्ष्य में रख कर इनके संबंध में परिचय स्वरूप दो शब्द लिखना आवश्यक हो जाता है।

महाराजा जसवंतसिंह, महाराजा गजसिंह के दूसरे पुत्र थे; प्रसिद्ध वीर राव अमरसिंह प्रथम पुत्र थे जिनको नागोर की जागीरी मिली थी। महाराजा जसवंतसिंह का जन्म वि. सं. १६८३ माघ वदि ४ मंगलवार को बुरहानपुर में हुआ था।[1] बादशाह शाहजहां ने वि. सं. १६९५ को आषाढ़ कृ० ७ शुक्रवार

---

१. पं० रामकर्ण आसोपा द्वारा लिखित 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, द्वि० खंड पृ० ३८५ में महाराजा जसवंतसिंह की जन्म-कुण्डली इस प्रकार दी हुई है—





जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह - प्रथम

(वि० सं० १६८३ – १७३५)

[राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के सौजन्य से प्राप्त]

को इनका राज्यतिलक आगरा में किया। महाराजा जब दूसरी बार (सं० १७००) बादशाह की चाकरी में से मारवाड़ आये तो राड़धरा (राष्ट्रधरा) के महेशदास के उत्पातों को शान्त करने के लिये नैणसी के पिता मोहणोत जयमल को भेजा था। जयमल ने महेशदास से लड़ाई करके राड़धरा छीन लिया और उस पर महाराजा का अधिकार करके उसे मेहवे के रावल जगमाल को दे दिया था।

चांदपोल के बाहर जोधपुर का प्रसिद्ध श्री रामेश्वर महादेव का मंदिर इन्हीं महाराजा ने सं. १७०८ में बनवाया था।

सं. १७०९ में महाराजा के पृथ्वीसिंह प्रथम पुत्र हुआ। जो जबरदस्त वीर था। इसी ने बादशाह के सिंह से कुश्ती करके बिना शस्त्र के उसको चीर डाला था। कहा जाता है कि बादशाह की ओर से इनायत की हुई विषाक्त पोशाक पहिनने से इसकी मृत्यु हुई थी। कोई कहते हैं कि शीतला रोग के कारण इनकी मृत्यु हुई थी।

सं. १७१४ में प्रसिद्ध धर्मंत (चोरनारायण) में महाराजा जसवतसिंह और रतलाम के रतनसिंह के साथ औरंगजेब का भयंकर युद्ध हुआ था। महाराजा जसवंतसिंह घायल होकर जोधपुर को लौट आये थे। इसमें रतनसिंह और अनेक वीर योद्धा काम आये थे। इसी युद्ध में नैणसी का पुत्र करमसी भी घायल हुआ था। इसी वर्ष नैणसी महाराजा का दीवान बना था।

सं. १७२५ में महाराजा के प्रयत्न से शिवाजी के पुत्र शंभाजी और शाहजादा में संधि होकर शान्ति स्थापित हो गई थी। इसी वर्ष नैणसी और सुंदरसी आत्मघात करके (दो वर्ष के) बंदी जीवन से मुक्त हुए थे।

सं. १७२७ में महाराजा को बादशाह ने गुजरात के धंधुका और पेटलाद के परगने जागीर में दिये थे।

सं. १७२८ में जब औरंगजेब ने गोवर्धन पर्वत के श्रीनाथजी के मंदिर को गिराने की आज्ञा दी तो गुसांई दामोदरलालजी श्रीनाथजी के विग्रह को लेकर जोधपुर आये थे, उन्हें चौपासनी के पास कदमखंडो में रहने को स्थान दिया था।

सं. १७३५ की पौष वदि १० को जमरूद में महाराजा का देहान्त हुआ।

यह महाराजा संस्कृत, व्रज और मारवाड़ी के बड़े विद्वान और कवि थे और वेदान्त के अच्छे पंडित थे। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। जिनमें आनन्द-विलास, सिद्धान्त-बोध, अनुभव-प्रकाश, अपरोक्ष सिद्धान्त, सिद्धान्तसार,

ये पांचों ग्रंथ वेदान्त के हैं। आनंद-विलास संस्कृत रचना है। भाषा-भूषण साहित्य का अपूर्व ग्रंथ है।

जोधपुर के अनार इन्हीं महाराजा के कारण प्रसिद्ध हैं। इन्होंने काबुल से अनार, मिट्टी और बागवानों को लाकर कागा के बाग में अनारों के पेड़ों का रोपण करवाया था। कहते हैं कि जोधपुर के प्रसिद्ध कागजी नींबूओं का बीज भी इन्हीं महाराजा ने कहीं से मंगवा कर उनके पेड़ लगवाये थे।

महाराजा के पृथ्वीसिंह के अतिरिक्त तीन पुत्र और हुए थे। जगतसिंह, दलथंभन और अजीतसिंह। जगतसिंह भी दस वर्ष की ऊमर में ही चल बसा। दलथंभन और अजीतसिंह महाराजा के देहान्त के बाद जब रानियां जमरूद से दिल्ली आ रही थीं लाहोर में एक ही दिन में सं. १७३५ की चैत्र सुदि ४ को उत्पन्न हुए थे। दलथंभन भी रास्ते में ही चल बसा। दिल्ली आने पर औरंगजेब ने अजीतसिंह को मुसलमान बनाने या मार डालने की गरज से रानियों को नजरबंद कर दिया था और मारवाड़ पर बादशाही हुकूमत जमा दी थी। बालक अजीतसिंह को बड़ी मुश्किल से औरंगजेब की कैद से गुप्त रीति से दुर्गादास और मुकुन्ददास ने निकाल कर युवा होने तक सुरक्षित स्थानों में छिपा कर रखा था। मारवाड़ को बादशाही हुकूमत से मुक्त करा कर महाराजा अजीतसिंह को राज्य सिंहासन पर बिठाने के लिये वीर दुर्गादास के संचालन में मारवाड़ के राजपूत सरदारों को अनेक वर्षों तक संघर्षों का सामना करना पड़ा था। स्वामीभक्ति के ऐसे उदाहरण इतिहास में विरल ही मिलते हैं।

—प्रा० बदरीप्रसाद साकरिया

मुंहता नैणसीरी ख्यात

परिशिष्ट १

तीनों भागों की नामानुक्रमणिका

(१) वैयक्तिक (जीवधारी) – पुरुष, स्त्री व पशुनामावली
(२) भौगोलिक – ग्राम, देश, पर्वत, जलाशयादि नामावली
(३) सांस्कृतिक – ग्रंथ, संस्था, देवी, देवतादि नामावली

१. संकेत परिचय–

प० पहला भाग
दू० दूसरा भाग
ती० तीसरा भाग
दे० देखो

२. कुछ वर्णों के सम्बन्ध में–

(१) ल और ळ वर्णों का अनुक्रम एक वर्ण के समान और उसी प्रकार
(२) ड और ड़ वर्णों का अनुक्रम एक वर्ण के समान किया गया है।
(३) ळ वर्ण का प्रयोग शब्द के आदि में नहीं होता।
(४) शब्द के मध्य और अंत में ल वर्ण का उच्चारण प्रायः ळ हो जाता है। कई जगहों में अपने सही रूप में भी उच्चारण किया जाता है; किन्तु वहां अर्थान्तर हो जाता है।
(५) हिन्दी के आकारान्त शब्द (नाम) राजस्थानी में प्रायः ओकारान्त होते हैं।

[१] पुरुष नामावली

ख

झ

ट

ठ

थ

द

न

फ

म

य

र

श

ष

स

[२] स्त्री - नामावली

[स्त्री नामावली में पुल्लिग-रूप स्त्री नाम तथा स्त्री नामों के साथ पुल्लिग जैसे विशेषण रूप, मध्यकालीन राजस्थानी संस्कृति और स्त्री-समाज की प्रतिष्ठा के प्रतीक रहे हैं। उनकी स्त्रीलिंग-रूप विलक्षण व्यंजना के, राजस्थानी भाषा के कुछ स्त्री-परक प्रत्ययादि और कुछ अन्य विशिष्ट शब्द, नाम ढूंढने के पूर्व सहज परिचय के लिये, अर्थ सहित यहां दिये जारहे हैं।]

आंणी – कतिपय प्रदेश और जाति आदि नामों के अन्त में लगने से स्त्री नाम बनाने वाला एक प्रत्यय। जैसे—खाबड़ियांणी, जोईयांणी इत्यादि। पुरुश नामों के अंत में यह प्रत्यय 'आत्मज' अर्थ में बदल जाता हैं। जैसे लाखो फूलांणी।

ओळगण, ओळगांणी – १. गायिका। यह प्राय: ढाढ़ी जाति की होती हैं। राजस्थान के साचोरी प्रदेश में और उत्तर गुजरात में महतरानी को 'ओळगाणी' और महतर को 'ओळगाणो' कहते हैं।

कंवरांणी – कुंवरानी।

कंवर, कुंवर – कुंवरि, कुंवरी। जैसे—आसकंवरबाई, उमेदकुंवर इत्यादि।

खवास – १. राजा की दासी. २. रखेल. ३. सेविका।

खवास-विणियांणी – वनिया जाति की स्त्री जो खवास वन गई हो।

खालसा – १. राजा की एक विशेष दासी. २. एक रखेल।

खीचण – खीची-क्षत्री वंश में उत्पन्न स्त्री।

चहुआंण, चहुवांण (–जी) – चौहान-क्षत्री कुल में उत्पन्न कन्या के ससुराल का उपनाम तथा संबोधन।

चारन – चारण-स्त्री, चारण जाति की स्त्री। चारणी भी कहा जाता है।

ची – कतिपय नगर या प्रदेश नामों के अंत में लगने से स्त्री नाम बनाने वाली एक विभक्ति। जैसे—ईडरची, कोटेची इत्यादि।

चूंडावत (–जी) – चूंडा के वंश में उत्पन्न कन्या के ससुराल का उपनाम और संबोधन।

छोकरी – दासी।

जोगण, जोगणी – १. योगिनी. २. योगी (जोगी) की स्त्री।

ठकरांणी – ठाकुरानी।

डूंमणी – ढाढ़िन, गायिका।

दे – देवी का संक्षिप्त रूप। जैसे—अंतरंगदे, उछरंगदे इत्यादि में। पुरुष नामों के अंत में यह 'देव' शब्द के संक्षिप्त रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे—कांन्हड़दे, गोगादे इत्यादि में।

नाचण – नाचने वाली, नृत्यकी।

पंवार (–जी) – पंवार (परमार) क्षत्री कुल में उत्पन्न कन्या के ससुराल का उपनाम या संबोधन ।

पासवांन – राजा की एक पदायित दासी ।

पूतळ छोकरी (–छोरी) – दासी ।

बा – १. माता. २. राजरानी. ३. राजमाता ।

बाई – १. स्त्री नामान्त प्रत्यय रूप एक शब्द । जैसे—इंद्रावतीबाई, रांमीबाई इत्यादि । २. पुत्री. ३. बहिन. ४. बच्ची, कन्या ।

बैर – १. पत्नी. २. स्त्री ।

भुआ (–वा) – फूफी ।

माजी – १. राजमाता. २. माता. ३. वृद्धा । (प्रायः विधवा स्त्री)

राठोड़ (–जी) – राठौड़ क्षत्री कुलोत्पन्न कन्या का ससुराल पक्षीय संबोधन और उपनाम । राठोड़णजी, राठोड़ांणीजी, राठोड़णीजी (राठौड़िनजी) नाम भी कहे जाते हैं ।

राय – १. स्त्री नामान्त एक प्रत्यय रूप शब्द । जैसे—गुमांनराय पातर, गुलावराय खवास इत्यादि । पुरुष नामों के अंत में भी इसका प्रयोग होता है । जैसे—चामुंडराय, रामराय इत्यादि ।

वजीरण – १. वजीर (गोले) की स्त्री । २. ठाकुर की दासी । राजस्थान में जागीरदार के दास को वजीर भी कहते हैं ।

वडारण – ठाकुर की एक दासी ।

सगत, सगती – १. शक्ति, देवी. २. देव्यांशी स्त्री. ३. करामात वाली स्त्री. ४. भोपी ।

सहेली – १. साथिन. २. दासी ।

सेखावत (–जी) – १. शेखावत कुलोत्पन्न क्षत्री कन्या का ससुराल पक्षीय उपनाम तथा संबोधन ।

स्त्री - नामानुक्रमणिका

ज

झ

ड

त

द

ध

न

ह

[३] अश्वादि पशु नाम

२. भौगोलिक नामावली

[१] ग्राम, नगर, देश, आदि

ख

घ

झ

थ

द

ल

श

२. भौगोलिक नामावली

[२] पर्वत जलाशयादि नामावली

[नामों को ढूंढ निकालने की सुविधा के लिये राजस्थानी भाषा के कुछ शब्दों के अर्थ]

अरहट – रहँट ।
आडावळो – अरवली पर्वत ।
उनाव – १. जलाशय । २. नीची भूमि ।
कुवो – कुँआँ ।
कूओ – कुँआँ ।
कोहर – कुँआँ ।
खांभ – १. तलहटी । २ पहाड़ी ढलाव । ३. पहाड़ का भीतर घुसा हुआ भाग ।
गिर – गिरि । पर्वत ।
घाटावळ – १. बड़ी घाटी । २. विकट पहाड़ का बड़ा मार्ग । ३. एक ही जगह के लिये एक से अधिक पहाड़ी मार्ग ।
घाटी – पहाड़ी मार्ग ।
घाटो – बड़ी घाटी ।
जाळ – पीलू वृक्ष ।
झालरो – चारों ओर सीढ़ियों वाला कुँआ अथवा बड़ा कुंड ।
टूंक – शिखर ।
टोभो – १. छोटा तालाब । २. बड़ा कुँआँ ।
डूंगर – पर्वत
डूंगरी – पहाड़ी

तळाई – छोटा तालाब
तळाव – तालाब
तळो – कुँआ ।
द्रह – १. पानी से भरा रहने वाला गहरा और बड़ा खड्डा । २. बिना बंधा हुआ कुँआ ।
नळो – पर्वत ।
नाळ – घाटी । पहाड़ी मार्ग ।
नाळो – नाला ।
पार – १. कुँआँ । २. छोटा तालाब । ३. गाँव ।
भाखर – पर्वत ।
भाखरी – पहाड़ी ।
मगरी – पहाड़ी ।
मगरो – पर्वत ।
वळो – पर्वत ।
वाय – वापी । बावली ।
वावड़ी – वापी । बावली ।
वाहळो – नाला ।
वेरो – कुँआँ ।
समंद – १. तालाब । २. झील ।
समुद्र – १. तालाब । २. झील ।
सर – १. तालाब । २. कुँआँ ।
सागर – १. तालाब । २. झील ।

पर्वत-जलाशयादि नामानुक्रमणिका

३. सांस्कृतिक नामावली

[१] ग्रंथ, संस्था, कर, मापादि नामावली

[ग्रंथ, संस्था, कर, मुद्रा, नाप, माप, तोल, उत्सव सामाजिक-प्रथाएँ इत्यादि के नाम]

ह

[२] देवी, देवता, लोक-देवता, तीर्थ, धर्म-सम्प्रदाय इत्यादि

क

ख

ग

ध

न

प

र

ल

व

श

सम्पूर्त्ति

छूटे हुए नाम अथवा पृष्ठ-संख्या

[नाम की पंक्ति संख्या उस नाम का उस पंक्ति में होना चाहिये बताता है]

पृ.	कॉ.	पं.	पुरुष नाम
२	२	२२	१३६, १४१
३	१	९	अखो प. ३६३
५	२	२०	३१, ३६१
७	२	२	आलमसाह प. ५९
८	१	४	३६१
८	१	१०	३६२
९	१	२	३६१
९	२	९	३२०
१२	१	७	कंथड़ वू. २१४
१२	१	८	कंथड़नाथ योगी वू. २१४
१३	१	११	५, ६, १३, १५, १९, ७०
१३	२	१०	करमचंद पंवार प. १२२
१४	१	३	१६६
१४	१	२७	१९५
१५	१	३	१५६
१६	२	२	काबो गढो प. १३६
१९	२	१३	३१५
२०	२	५	३६३
२१	१	२४	३६१
२१	२	११	खीमो संकरोत वू. ८४
२२	२	४	गंगस घोघो प. ५
२२	२	१३	३३८
२३	१	३	गढो काबो प. १३६
२३	१	१६	३६३
२३	१	३४	३५९
२४	१	१२	गोकळ प. ३६१
२७	१	३६	चवंडो दे० चूंडो ।

पृ.	कॉ.	पं.	पुरुष नाम
३२	१	१४	३१८
३३	२	२८	३१०
३५	१	१३	४३, ४५, ४७, ४८, ५३, ५४. ५५, ६६, ६७, ६८
३९	२	११	१६४
४१	२	३१	३१७, ३१८
४४	२	१४	१९८, १९९
४७	१	२१	१८३
५८	२	६	१९९
४८	२	७	१९८
४८	२	अंतिम	१६१
५०	१	२६	३५२
५०	२	३	११९
५४	२	३१	६७, १११, १६५, ३१२
५५	१	२६	१७
५५	१	अंतिम	प्रथीराव प. २४३
५७	१	२१	बहन्नाल प. १८६
५७	२	५	९७, ९८
५७	२	२४	बालरथ प. २८८
६५	२	२५	३४५, ३४६
६६	२	२७	२९४, २९५. २९७
७२	२	९	यशवंतसिंह रावल दे० पताई रावल
७६	१	अंतिम	३१९
७७	१	३५	१८९, १९०
८१	२	२६	लसकरी कंमरो प. ३००
८९	१	४	१०१

पृ.	कॉ.	पं.	पुरुष नाम
९८	१	३	साह आलम प. ५९
१०१	२	२९	२८३
१०२	२	२३	१०२ से ११०
			भौगोलिक
१२०	२	९	२३६
१२८	२	१९	४१
१३२	२	१७	जांझोरो सीयळां रो दू० ६
१४३	२	३	पूंछणो दू. १६४ दे० पूछणो
			सांस्कृतिक
१७२	१	१९	अमल रो पोतो प. १०२
१७२	१	२४	अलाइ-बलाइ प. १००
१७२	२	६	आहुखांनो प. ८६
१७२	२	१३	१३४, २०६

पृ.	कॉ.	पं.	सांस्कृतिक
१७	१	३१	किरियांणो (प्रसूता को पौष्टिक खाद्य-सामग्री दू. २८०
१७३	२	६	कोड़दांन दू. २२३
१७३	२	२५	गोडो वाळणो दू. ११६
१७४	१	७	३३९
१७५	२	७	दांन-पुन्य प. १३६. २६६
१७५	२	१३	दायजो प. ७६
१७५	२	२५	दुहागण दू, १०
१७६	२	९	पाणी देणो दू. ३३७
१७६	२	११	पाघड़ी-भाई दू. ६६
१७६	२	३७	पोतो प. १०२
१७६	२	अंतिम	अळैदातार दू. १९०

परिशिष्ट २

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की मुंहता नैणसी री हस्तलिखित ख्यात-प्रति में दी हुई विशिष्ट पुरुषों की जन्मकुंडलियां

नैणसी ने अनेक प्रसिद्ध पुरुषों की जन्म कुंडलियां भी ख्यात में उनके वर्णन प्रसंगों के साथ दी हैं, जिनसे उनके जन्म समय और जीवन की स्थिति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। ये कुंडलियां ज्योतिष-शास्त्र में रुचि रखने वालों के लिए बहुत महत्व और शोध की वस्तु हैं। ऐतिहासिकों के लिए भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। ये जन्म कुंडलियां केवल अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर की नैणसीरी ख्यात (पुस्तक सं० २०२/२४) में ही दी हुई है। अन्य किन्हीं भी प्रतिलिपियों में नहीं होने से और यह प्रति ख्यात का प्रथम भाग मुद्रित हो जाने के बाद देखने को मिलने कारण यथास्थान दी नहीं जा सकी थीं; अतः यहां दी जा रही हैं—

रांणा सांगा री जन्मकुंडली

संमत १५३९ रा वैसाख वद ९ सांगा रो जनम। संमत १५६६ जेठ सुद ५ रांणो सांगो पाट बैठो। (ख्यात पत्र ५ सूं उद्धृत)

३	२ शु बु रा	१
४ वृ		१२ र
५	श्री।।	११ चं
६	८ के	१०
७ मं. श.		९

रांणा उदैसिंघ री जन्मपत्री

रांणो उदैसिंघ, संमत १५७९ भादवा सुद ११ जनम। सं० १६२९ रा फागुण सुद १५ रांणो उदैसिंघ काळ प्राप्त हुओ। (ख्यात पत्र ६ सूं उद्धृत)

६ शु के	५ र बु	४ मं
७		३
८ चं.	श्री।।	२
९	११ श	१
१० वृ.		१२ रा

जगमाल सीसोदिया री जनमपत्री

सं० १६११ असाढ वदी ५ रविवार रो जनम (ख्यात पत्र ६ सूं)

४	३ सू रा	२ बु
५ मं		१ शु
६	श्री।।	१२ श गु
७	९ के	११ च
८		१०

सगर रो जन्म

सं० १६१३ भादवा वदी ३ रो सगर रो जन्म (ख्यात पत्र ६)

३ मं	२ रा	१ श
४ र		१२
५ बु	श्री।।	११ चं
६ शु	८ वृ के	१०
७		९

महारारांणा प्रताप री जन्मकुंडळी

सं० १५९६ जेठ सुद ३ रविवार रो रांणा प्रताप रो जन्म (ख्यात पत्र ७)

११	१०	९
१२ रा		८
१	श्री।।	७
२ र	४ वृ	६ मं श के
३ शु. बु. चं.		५

रांणा करन री जन्मकुंडळी

जन्म सं० १६४० सावण सुदि १२, मृत्यु १६६४ फागुण (ख्यात पत्र ८)

३ के	२	१
४ र		१२ वृ.श.
५ शु. बु	श्री।।	११
६ मं	८	१०
७		९ रा. च.

रांणा जगतसिंघ री जन्मकुंडळी

जन्म सं० १६६४ रा भादवा सुद १२, संमत १७१४ रा जेठ मांहे धवळपुर री लड़ाई कांम आयो ।

६ शु ब चं	५ र मं रा	४
७		३
८		२
९ श	११ के	१
१०		१२ वृ

परिशिष्ट ३

ख्यात में प्रयुक्त पद, उपाधि और विरुदादि विशिष्ट संज्ञाओं या शब्दों की अर्थ सहित नामावली

संकेताक्षर

सं०	— संज्ञा	प.	— नैणसी री ख्यात का पहला भाग
ब.व.	— बहु वचन	दू.	— ,, ,, दूसरा भाग
दे०	देखिये	ती.	— ,, ,, तीसरा भाग

अखैसाही नांणो—जैसलमेर के रावल अखैराज द्वारा प्रवर्त्तित एक रौप्य मुद्रा।

अनवी—परबतसर और महारोठ के अनम्र वीर रावत उद्धरण दहियै का विरुद।

अभंगनाथ—विजयी वीरों में श्रेष्ठ वीर।

अमल-रो-पोतो—अफीमची लोगों के अफीम रखने का वस्त्र का बना एक प्रकार का बटुआ।

असंख प्रवाड़ै-जैतवादी—चित्तौड़ के राना रायमल के अत्यन्त बलशाली और असंख्य युद्धों में विजय प्राप्त करने वाले पुत्र पृथ्वीराज का विरुद।

असत धांन—१. हल्की किस्म का अनाज २. नहीं खाने योग्य (सड़ा-गला) अनाज।

असुख—१. शत्रुता २. रोग।

असुर—आसुरी प्रकृति के कारण 'मुसलमान' का लक्षणार्थ पर्याय।
(ब. व.—असुरां, असुरांण, असुरायण, असराळ, असुराळ, असुाळ)

आऊठ कोड़ बंभणवाड़, आऊठ कोड़ सांमई—नवलखी सिंध का बंभणवाड़ प्रदेश और उसका सामई नगर। (कहा जाता है कि सिंध, कच्छ और सोरठ के अमुक भाग नवलखी सिंध के नाम से प्रसिद्ध थे। बंभणवाड़ आठ करोड़ की आय का प्रदेश कहा जाता है।)

आखाड़सिद्ध—१. रणकुशल। २. विजयराव चूड़ाळै का विरुद।

आगू—१. यात्रा में आगे चलने वाला और भय स्थानों एवं शत्रुओं की सूचना देनेवाला व्यक्ति। २. मार्गदर्शक।

आदित, आदित्य—दे. वीत-ब्राह्मण।

आयस, आयसजी—राजस्थान के नाथ सन्यासियों का विरुद या उपाधि।

आरंभरांम—('आरंभ+आरांण' का अपभ्रंश रूप) वह शक्तिमान राजा या बादशाह जो किसी भी शत्रु के ऊपर किसी भी समय भारी सेना के साथ आक्रमण करने के लिये तैयार रहता है।

आलमगीर—बादशाह औरंगजेब रा विरुद।

आसा—गर्भ।

आहाड़ा—'आहाड़ा' नामक गांव में बसने के कारण मेवाड़ के शिशोदियों (शासकों) का एक विरुद।

आहूठमा-नरेश—चित्तौड़ के शिशोदिया नरेशों का एक विरुद।

इद्र—राजस्थानी साहित्य की सोलह दिशाओं में से एक।

इक्को—दे० एको।

उडणो-प्रणो—दे० उडणो-प्रथीराज।

उडणो-प्रथीराज—एक ही दिन के अंदर टोडा और जालोर को विजय कर लेने के कारण राना रायमल के पुत्र पृथ्वीराज को बादशाह की ओर से दी हुई उपाधि।

उड़दावो—कई धान्यों को मिला कर घोड़ों के लिये बनाया जाने वाला एक खाद्य।

उपाधियो—वेद-वेदांग पढ़ाने वाले अध्यापक की एक उपाधि।

उमराव—बादशाहों के दरबारी हिन्दू-नरेशों की उपाधि।

(बादशाही दरबारों में उमरावों की संख्या मुसलमान खानों की अपेक्षा दो अधिक होती थीं और वह ७२ थीं। हिन्दू उमराव युद्धों में सिर कट जाने पर धड़ से लड़ते थे और धड़ के शान्त हो जाने पर उनकी पत्नियाँ उनके साथ सती हो जाती थीं। इसीलिये कहा जाता है कि इन दो विशेषताओं के कारण उमरावों की दो संख्यायें शाही-दरबारों में प्रतिष्ठा स्वरूप हिन्दुओं को प्राप्त थीं।

'उमराव' अमीर शब्द का बहुवचन रूप है।

'उमराव' और 'उमराव बनो' राजस्थान के वैवाहिक-लोक-गीतों में एक नायक के रूप से भी प्रसिद्ध है।

उवही—समुद्र।

ऋषि, ऋषीश्वर—१. वेद-मंत्रों का प्रकाशक, मंत्र-द्रष्टा। २. आध्यात्मिक और भौतिक तत्वों का ज्ञाता।

एको—अनेक योद्धाओं से अकेला लड़ने वाला शक्तिमान बादशाह का अंग-रक्षक।

एवाळियो—भेड़-बकरी चराने वाला व्यक्ति। गड़रिया।

ओकर—१. दुर्वचन, गाली। २. विष्टा।

ओठी—ऊंट सवार (१. ऊंट। २. ऊंट से सम्बन्धित।)

ओढो-रांवण—रावण के समान भयंकर महाबली दोदा सूमरे का विरद। (विकट महाबली)

ओळ—१. वह बंधक-नियम जिसमें मनुष्य को गिरवी रखना पड़ता था। २. मनुष्य को गिरवी रखने की प्रथा।

ओळगण—गानेवाली ढाढिन नोकरानी। (१. वियोगिनी, २. पत्नी. ३. महतरानी)

ओळगू—गाने बजाने वाला ढाढ़ी नौकर।

कँवर—१. राजा या जागीरदार का लड़का। २. राजकुंवरी। ३. पुत्र।

कँवरांणी—कुंवर की पत्नी।

कँवारमग, क्वारमग—आकाश गंगा।

कणवारियो—खेतों में से कूंता किया हुआ नाज इकट्ठा करने वाला सरकारी अनुचर।

कनवजियो, कनवजो—कन्नौज से मारवाड़ में आये हुए राठौड़ क्षत्री का विरुद।

कपूर वासियो पांणी—कपूर-वासित पानी।

कमंध, कमध, कमधज, कमधजियो—राठौड़ क्षत्रियों का विरुद।

करहीरो—ऊंट सवार, करभारोही।

करोड़ी, किरोड़ी—मुसलमानी राज्यकाल में बादशाह की ओर से कर वसूल करने वाला एक अधिकारी।

कर्नल—१. राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड की सैनिक उपाधि। ३. कर्नल टॉड (Col. Tod.)

कव, कवराज, कवि, कवीसर, कवेसर—१. काव्यकर्त्ता चारण २. कवि ३. भाट-कवि।

कसतूरियो मिरघ—१. विलासिता की एक उपाधि। २. कस्तूरीमृग।

कलावंत—१. संगीतज्ञों की एक उपाधि। ३. एक संगीतज्ञ जाति। ३ एक क्षत्रिय जाति। ४. संगीतज्ञ।

कांचळी—पुत्री नेग

कांठळियो—१. सीमा रक्षक। २. पड़ोसी राज्य का लुटेरा। ३. लूटखसोट करने वाला पहाड़ी लुटेरा।

कांनूंगो—बादशाही समय का एक कर्मचारी, कानूनगो।

कांमदार—जागीरदार की जागीरी का मुख्य प्रबन्ध-अधिकारी।

कांमेती—दे० कामदार।

काछ पंचाळ—कच्छ और पांचाल देश की एक देवी।

काछरख्य—सैणी नाम की कच्छ देश की एक देवी।

कारण—१. गर्भ। २. प्रतिष्ठा। ३. मान-मर्यादा। ४. कृपा।

कारणीक—१. योग्य। २. प्रामाणिक। ३. ज्ञाता, जानकार। ४. परोपकारी। ५. विवेकी। ६. दरमियानगिरी करने वाला।

काळ-भुजाळ—काल से भी युद्ध करने में समर्थ।

काळो तारो—१. पिता को मारने वाले शत्रु का बदला नहीं लेने वाले पुत्र की कलंक रूप उपाधि। २. युद्ध से भाग जाने वाले व्यक्ति का कलंककारी नाम।

किलंब, किलम—कलमा पढ़ने के कारण मुसलमान का लाक्षणिक नाम। (ब. व.—किलंबां, किलंबांण, किलमां, किलमांण, किलमायण)

किलेदार—१. दुर्गरक्षक। २. दुर्गरक्षक का पद।

कुंवर-मांणो—
कुंवर पछेवड़ो—
कुंवर पांमरी—
कुंवर सूंखड़ी—
} कुंवर के नाम पर जागीरी प्रजा से लिया जाने वाला एक कर।

कुतबसाही-नांणो—सुलतान कुतुबुद्दीन द्वारा प्रवर्तित कुतुबशाही मुद्रा।

कूरबांण—मांस-खाद्य रखने का एक पात्र।

कृत—मृतक-संस्कार।

केसरिया—विवाहार्थ व युद्धार्थ पहिनी जाने वाली केशर रंग की पोशाक।

कैलपुरो—कैलवा नाम के गांव में बसने के कारण शिशोदियों का एक विरुद।

कोटवाळ—१. शासनाधिकारी का एक पद। २. दुर्गरक्षक और उसका पद।

खटायत—सहन करने वाला वीर पुरुष।

खबरदार—संदेश-वाहक अनुचर।

खरक कूंण—वायव्य और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।

खवास—१. राजा की खवासी करने वाला नौकर। २. नाई। ३. दासी। ४. रखेल स्त्री।

खांगड़ो—१. राठौड़ राजपूत। २. राठौड़ों का एक विरुद। ३. वीर।

खांगीबंध—राठौड़ों का एक विरुद।

खांट जात—भील, नायक, मेर आदि जातियों की समष्टि।

खांन—१. बादशाह की सभा के मुसलमान दरबारी। खानों की संख्या बादशाही दरबारों में ७० होती थी। इनके मुकाबिले उमराव ७२ होते थे। 'सत्तर खान और बहत्तर उमराव' की लोकोक्ति प्रसिद्ध है।
२. पठानों की एक उपाधि। ३. मुसलमान।

खाड़ेती—बैलगाड़ी आदि वाहन चलाने वाला व्यक्ति। २. हल चलाने वाला व्यक्ति।

खालसा—१. राजाओं की उप-पत्नियों का एक प्रकार। २. रखेल। ३. दासी।

खिलहरो, खिलहोरा, खिलोरा, खिलोहरी—१. जंगली मनुष्य। २. भेड़-बकरी चराने वाला व्यक्ति।

खुरसांण—लक्षणार्थ में मुसलमान का पर्याय (ब. व. खुरसाणां, खुरासाणां)

खूंदालम—बादशाह।

खून—१. अपराध। २. हत्या।

खूंमांणो—रावळ खूमाण के वंशज शिशोदिया क्षत्रियों का विरुद।

खूर—लाक्षणिक अर्थ में मुसलमान व्यक्ति।

खेड़ा री वाघण—शिकार का एक प्रकार।

खेड़ेचा—मारवाड़ में राठौड़ क्षत्रियों का खेड़-पाटण में सर्व प्रथम राज्य स्थापित होने के कारण उनका ऐतिहासिक विरुद ।

खेड़ायत—१. एक गांव का धनी । २. जमीन जोत करके गुजरान करने वाला व्यक्ति ।

गंग—१. राना घणसूर मोहिल का विरुद । २. राव गांगा की ऊन संज्ञा ।

गजधर—भवन निर्माण करने वाला शिल्पी ।

गढपति—दुर्गपति, राजा ।

गायणी—१. गाने वाली । २. वेश्या ।

गुढो—रक्षा-स्थान ।

गूल़-लाग—विवाह आदि में गुड़ के रूप में दिया जाने वाला एक कर ।

गेहलो—अणहिलपुर-पाटण के शासक कर्ण (की मूर्खता) का विरुद ।

गोडो वाल़णो—मृतक की सम्वेदना प्रकट करने को जाना ।

गोत्र-कदंब—स्वगोत्री (कुटुम्बी) जनों की हत्या ।

ग्रासियो—१. ग्रास (गुजारा) के लिये मिली हुई जमीन का मालिक । २. विद्रोही, बागी । ३, लूट-खसोट करने वाला व्यक्ति ।

घणदेवजी-रोटा—१. बड़ी बाटी का भोजन । ३. देवी-देवता के निमित्त बनाया हुआ बाटी का भोजन ।

घरवास, घरवासो—पत्नी रूप में पर-पुरुष के घर में रहना ।

घावड़ियो—हानि पहुंचाने या मारने के लिये ताक में रहने या पीछा करने वाला व्यक्ति ।

घोरंधार—कोळू के शासक पमे का विरुद ।

चकवै—चक्रवर्ती राजा, सम्राट ।

चरवैदार—१. घोड़ों की देखभाल करने वाला नौकर, सईस । २. घोड़ों को जंगल में ले जाकर चराने-फिराने वाला नौकर ।

चवरासियो—चोरासी गांवों का स्वामी । २. राजस्थानी लोकगीतों का एक नायक ।

चामरियाल़—लक्षणार्थ में मुसलमान का पर्याय ।

चींधड़—१. आवश्यक समय के लिये चुनिंदा वीर योद्धा । २. अधिक अफीम खाने के कारण सुध-बुध रहित व गंदा रहने वाला व्यक्ति ।

चूड़ाल़ो—प्रसिद्ध वीर भाटी विजयराव का विरुद ।

चोटी-वढियो—जागीरदार की प्रजा का वह कर-मुक्त मनुष्य जिसको अपनी चोटी कटाई हुई रखनी पड़ती थी ।

चोधरी—१. गांव की चोधराई का पद । २. जाति या समाज का मुखिया ।

चोरासिया-ठाकर—१. चौरासी गांवों का जागीरदार । २. बड़ा जागीरदार ।

छकड़—एक प्राचीन सिक्का ।

छठी—१. मृत्यु । २. युद्ध ।

छड़ीदार—छड़ीबरदार, चोबदार ।

छत्तीस पवन—१. चारों वर्ण और उनके अंतर्गत आने वाली समस्त जातियाँ। २. संसार की समस्त जातियाँ ।

छत्रपति—१. मरहटों का राज्य स्थापित करने वाले वीरवर शिवाजी की उपाधि और विरुद। २. छत्रधारी राजा या महाराजा ।

छात्राळा—जैसलमेर के भाटी शासकों का विरुद।

जबादि जळहर—१ वह जलागार जिसके जल में क्रीड़ा या मंजन करने के लिए कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थ मिलाये गये हों । ३ सुगंधित किये हुए जलागार में की जाने वाली स्नान-क्रीड़ा ।

जमीदार—जमीन का स्वामी ।

जय-जंगळधर—१. बीकानेर के राठौड़ राजाओं की उपाधि और विरुद । २. बीकानेर राज्य का आदर्श वाक्य ।

जलालस्याही, जलाला नांणो—जलालशाही रुपया ।

जवन—मुसलमान का पर्यायवाची ।

जांगड़—ढोली ।

जांणाऊ—१. भेदिया, गुप्तचर । २. चतुर, विज्ञ ।

जांम—सौराष्ट्र के नवानगर (जामनगर) के शासकों की उपाधि ।

जागीरदार—जागीर का स्वामी, जागीर-प्राप्त व्यक्ति ।

जोगणी—१. रण-पिशाचिनी । २. योग साधन करने वाली स्त्री । ३. जोगी जाति के पुरुष की स्त्री ।

जोगी—१. योगी, योग साधन करने वाला तपस्वी । २. आत्मज्ञानी ।

जोगी-रावळ—१. बड़ा योगी, योगीश्वर । २. राज्य-सम्मानित योगी ।

जोगेश्वर, जोगेसर—योगीश्वर ।

जोसी—ज्योतिषी, राज्य-ज्योतिषी ।

झींटोळियो—१. एक प्रकार का भूत । २. साधारण भूत ।

झोटिंग—१. घने बालों वाला और काले रंग का एक बड़ा भूत । २. महिषाकृति व काल रंग का एक बड़ा भूत ।

टका—१. रुपया । २. दो पैसे (रु० $\frac{1}{32}$) का सिक्का, रुपये के ३२वें भाग का एक सिक्का ।

टीकायत—१. राजा का उत्तराधिकारी पुत्र, युवराज । २. मुखिया, अधिष्ठाता ।

ठकरांणी—१. ठाकुर की पत्नी । २. कुलवान क्षत्राणी ।

ठकराळा, ठकुराळा—१. ठाकुर के लिए आदर-सूचक संबोधन । २. ठाकुर ।

ठाकर—१. ठाकुर, जागीरदार। २. कुलवान क्षत्री।

ठाकुर—१. श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण (की मूर्ति) २. श्रीकृष्ण। ३. दे० ठाकर।

ठाकुरजी—१. श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण (की मूर्ति)। २. श्रीकृष्ण।

डावड़ी—१. जागीरदार की एक दासी। २. पुत्री।

डोळी—ब्राह्मण-साधु आदि को दान में दी हुई कर-मुक्त भूमि।

ढोल दिरावणो—आक्रमण के समय सूचना देने और संगठित होने के लिये विशेष प्रकार से ढोल का बजवाना।

डावी-पाघ—राठौड़ों की पगड़ी का एक पेच।

तपसी—तपस्वी साधु।

तहड़-कूंण—सोलह दिशाओं में की एक दिशा का नाम।

तुरक—मुसलमान व्यक्ति का लक्षणार्थ नाम।

तुरकांणी—१ तुर्क राज्य, मुसलमानों का राज्य। २ मुसलमान स्त्री।

थाळी-लाग—१. प्रति व्यक्ति कर। २. विवाहादि में थाली भर कर भोजन रूप में लिया जाने वाला कर।

दळथंभण—जोधपुर के महाराजा गजसिंह का विरुद।

दसमों साळगरांम-गोकुळीनाथ—जालोर के प्रख्यात वीर राव कान्हड़दे सोनगरे का विरुद।

दानेसर, दानेसवर—प्रभात नाम महादानी कुन्ती पुत्र कर्ण (वसुषेण) का विरुद।

दांम—पैसे के २५ वें भाग का एक सिक्का (६४ पैसे के रु० १ के १६०० दाम होते थे)।

दीत—दे० दीत-ब्राह्मण।

दीत-ब्राह्मण—चित्तौड़ के शासक सीसोदियों के पूर्वजों (वन शर्मा के बाद गोवसीदित्य से भोगादित्य तक ५५ पीढ़ियों) की 'आदित्य-ब्राह्मण' उपाधि या अल्ल।

दीवांण—१. मेवाड़ के सीसोदिया शासकों (महारानाओं) का पद और एक विरुद। (मेवाड़ राज्य के स्वामी श्रीइकलिंगजी और महाराना उनके दीवान हैं) २. राज्य का प्रधान मंत्री, दीवान।

दुगांणी—१. रुपये के सौवें भाग का एक पुराना सिक्का।

२, व्याज की फलावट में गणित का एक साधन, दुगाणी।

दुगापचा (दुगाय माता)—ईंदावाटी में दुगाय पर्वत पर की दुगर माता देवी। दुर्गा-पंचा नाम भी प्रसिद्ध है।

देसोत—१. देशपति, राजा। २. जागीरदार।

देवचो, देवाचो—प्रतिज्ञा।

धाड़वी, धाड़ायत, धाड़ायती, धाड़ेत, धाड़ेती—डाका डालकर धन लूटने वाला व्यक्ति।

धाय-भाई—धा-भाई, दूध-भाई। स्तनपान कराने वाली धाय का पुत्र। २. धाय-भाई के वंशजों की उपाधि।

धारेचो—विधवा का परपुरुष की पत्नी होकर रहना।

नकीब—राजा-बादशाहों के पट्टाभिषेक होने, उनके राज-सभा में आने तथा उनकी सवारी के समय विरुद-गान करने वाला सेवक।

नगारो दिराणो—आक्रमण के समय सूचना देने और वीरों का संगठित होने के लिये विशेष प्रकार से नगाड़े का बजवाना।

नबाव—मुसलमान शासक या रईसों की एक उपाधि। २. किसी सूबे का मुसलमान राज्याधिकारी या शासक।

नव कोटी-मारवाड़—नौ प्रसिद्ध दुर्गों वाला विशाल मारवाड़ राज्य।

नव-सहसो—१. मारवाड़ राज्य के प्रसिद्ध राव मालदेव का विरुद। २. वीर राठौड़ क्षत्री।

नागदहा—नागदहा गांव में बसने के कारण मेवाड़ के सीसोदिया-शासकों का एक विरुद।

नादेत-नीसाणेत—चाचग के वंशज रूणवाय के सांखलों का विरुद।

नेगी—नेग लेने वाला व्यक्ति।

न्याळां—१. प्राखेट-गोष्ठी। शिकारियों की भोजन-गोष्ठी।

पंचाध कूंण—उत्तर और वायव्य के बीच की दिशा का नाम।

पटू—प्रतिभू, जामिन।

पड़दाइत, पड़दायत—राजा की वह रखेल जिसे पत्नी (रानी) के समान पर्दे में रहने का सम्मान मिला हो।

पताई-रावळ—पावागढ़ (गुजरात) के वीर रावल यशवंतसिंह का विरुद।

परत-री-वेढ—शर्त की लड़ाई।

परधांन—१. राज्य का प्रमुख पदाधिकारी, प्रधान मंत्री। २. किन्हीं दो पक्ष, ठिकाने या राज्यों में पड़े हुए झगड़े-टंटे या मतभेद को मिटाने या समाधान के लिए नियुक्त किया गया प्रतिष्ठित व्यक्ति।

पांडव—घोड़े का सईस।

पाइक—१. पैदल सैनिक। २. हर समय पास रहने वाला विश्वास-पात्र सेवक, सच्चा सेवक।

पाखा-देवळी—१. राजा का परिजन या परिग्रह। २. राज्य के समस्त स्त्री-पुरुष सेवक-जन।

पाटवी—१. पट्टाधिकारी राजकुमार, युवराज। २. जागीर का अधिकारी।

पाटोधर—पट्टाधिकारी, राजा।

पात—१. (दान दिये जाने के पात्र) चारण भाट आदि। २. चारण।

पातर—१. राजाओं की गायिका। २. लंपटों की भोग-पात्र नारी, वेश्या।

पातळ—जग-विख्यात महाराना वीरशिरोमणि प्रताप का साहित्यिक नाम।

पातसाह—बादशाह ।

पासवांन—१. राजा का खास सेवक । २ राजा की एक रखेल स्त्री और उसका दर्जा ।

पिथोरो—१. अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज का साहित्यिक नाम । २. पृथ्वीराज के कुछ वंशजों की उपाधि ।

पिरोजसाही, पिरोजा—फिरोजशाही रुपया ।

पीथल—'क्रिसन रुकमणी री वेलि' के रचयिता प्रसिद्ध भक्त बीकानेर के राठौड़ पृथ्वीराज का साहित्यिक नाम ।

पीर—मुसलमानों का धर्म-गुरु ।

पीरोजी नांणो—दे० पिरोजसाही ।

पूण-जात—द्विजों के अतिरिक्त समस्त जाति समुदाय ।

पूतल-छोकरी—दासी ।

पृथ्वीराज-उडणो—दे० उडणो-प्रथीराज

पेरोजी नांणो—दे० पिरोजसाही ।

प्रवाड़मल—१. अनेक युद्धों में विजयी होकर कीर्त्ति प्राप्त करने वाला वीर योद्धा । २. दे० असंख प्रवाड़े-जैतवादी ।

प्रोलियो—द्वारपाल ।

प्रोहित—१. पुरोहित । राजगुरु । ३. कुलगुरु ।

फदियो—एक पुराना सिक्का ।

फरास—फर्राश ।

फरीधर, फरसीधर—परशुधर ।

फोजदार—सेना का अधिकारी, सेनापति ।

बंधांणी—नियमित समय और मात्रा में नशा करने वाला नशाबाज व्यक्ति ।

बगसी—वेतन बाँटने वाला अधिकारी, बक्षी ।

बलबंड—सुल्तान गयासुद्दीन की उपाधि ।

बहुली-जोगणी—एक योगिनी ।

बा—१. सौराष्ट्र और गुजरात के रजवाड़ों की राजमाताओं के नामों के साथ लगने वाला मातृपद-सूचक एक प्रत्यय । २. माता ।

बाजरियो—१. एक मांस भोजन । २. बरात का एक विशेष भोजन-समारोह ।

बादशाह—हिंदेतर सार्वभौम राजा का पद । बड़ा राजा ।

बायड़—नशा करने की तीव्र इच्छा ।

बायड़ियो—नशा करने की आदत वाला, नशा करने की तीव्र इच्छा वाला ।

बारोटियो—१. लुटेरा । २. विद्रोही, बलवाखोर ।

बीबो—बीबी (मुसलमान कुलीन स्त्री) का खाविन्द या फरजंद होने के नाते लाक्षणिक अर्थ में मुसलमान शब्द का पर्याय।

बेगम—नवाब या बादशाह की पत्नी।

ब्रह्मरिख, ब्रह्मरिष—ब्रह्मर्षि।

भड़-किमाड़, भड़-किंवाड़—कपाट की भांति अवरोध बनकर शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देकर देश की रक्षा करने वाले वीर योद्धाओं का विरुद।

भड़-लखमसी—चित्तौड़ के राना रतनसी के भाई लखमणसी का विरुद।

भरहेर कूंण—पूर्व और ईशान के बीच की दिशा।

भांग-रा-हिमायचा—१. भांग से बना एक नशीला पदार्थ। २. भांग पीने की आदत वाला।

भूंछ लोग—१. धर्मनीति और राजरीति से अनभिज्ञ लोग। २. असभ्य लोग।

भोमियो—१. थोड़ी भूमि (खेतों) का स्वामी, जमींदार। २. बहुज्ञ।

मंडळीक—१. देरावर के देहड़, बूहड़ और गुणरंग का विरुद व उनकी उपाधि। २. मंडलीक राजा, मंडलपति।

मऊ—१. दुकालग्रस्त गरीब प्रजा जो (अगले वर्ष सुकाल हो जाने पर वापिस लौट आने के इरादे से) अपने भरण-पोषण के लिये सामूहिक रूप से स्वदेश छोड़कर किसी सुकाल वाले स्थान को जा रही हो। २. गरीब प्रजा।

मनसबदार—बादशाही राजत्वकाल का मनसब प्राप्त अधिकारी।

मलेछ, मळेछ—१. लाक्षणिक अर्थ में मुसलमान व्यक्ति। २. विधर्मी।

महमूंदी—एक मोहम्मदी सिक्का।

महाजन—१. वैश्य, वणिक। २. धनी व्यक्ति। ३. श्रेष्ठ-पुरुष।

महारांणा—मेवाड़ के शासकों की उपाधि।

महाराज—१. ब्राह्मण और साधुओं का सम्मान-सूचक नाम। २. राजा।

महाराज कँवार—युवराज।

महाराजा—बड़े राजाओं की उपाधि।

महाराजाधिराज—अनेक राजाओं में प्रधान राजा, सम्राट।

महावत—फीलवान।

मारवण, मारवणी—१. साहित्य-प्रसिद्ध पूगल की राजकुमारी और नरवर के ढोला की पत्नी। २. मारवाड़ देश की स्त्री। ३. एक लोक-नायिका, राजस्थानी लोक-गीतों की नायिका।

मारुवा-राव—मारवाड़ में से सौराष्ट्र को गये हुए गोहिल क्षत्रियों का विरुद।

मारू—१. मारवाड़ देश। २. मारवाड़ देश का निवासी (ब. व. मारुवां, मारुआं) ३. एक लोक-नायक, राजस्थानी लोक-गीतों का एक नायक। ४. दे० मारवणी।

मालाणा—१. मारवाड़ के मालानी प्रदेश के क्षत्री के लिये सम्बोधन। २. मालानी प्रदेश का क्षत्री।

माहिलवाड़ियो लोक—राजा के अंतरंग लोग।

मिरजा—१. मुगलों की एक उपाधि २. मीरज़ा।

मिलक—१. मुसलमान सरदारों की मलिक उपाधि। २. लक्षणार्थ में मुसलमान का पर्याय।

मीर—१. मुसलमान सरदारों की एक उपाधि। २. अमीर।

मुंहणोत—राव सीहा के वंशज खेड़-पाटण के राठोड़ राव रायपाल के पुत्र मोहण के जैन धर्म स्वीकार कर लेने पर उनके वंशजों की ओसवालों में प्रसिद्ध हुई 'मोहणोत' शाखा।

मुंहता—१. 'मुंहणोत' का अपभ्रंश रूप। २. मोहताई या मुंहताई का पद। ३. ब्राह्मण और वैश्य आदि जातियों की एक अल्ल।

मुसद्दी—राजकार्य में कुशल व्यक्ति का पद।

मूंछाळो-मालदे—जालोर के राव कान्हड़दे सोनगरा का भाई वीर मालदेव सांवतसीओत का विरुद।

मूळा-री-सिकार—१. वृक्ष पर बंधे हुए ऊंचे मचान पर बैठ कर किया जाने वाला शिकार, ओदी की शिकार। २. किसी झाड़ी, खड्डे या वृक्ष पर बैठ कर की जाने वाली रात की शिकार।

मेछ—दे० मलेछ। ('म्लेच्छ' का अपभ्रंश रूप। ब. व. मेछां, मेछाण, मेछाइण, मेछायण)

मेळग—चारण।

मेवाड़ो—१. लाक्षणिक अर्थ में मेवाड़ के महाराना का पर्याय। २. मेवाड़ का निवासी।

मेवासी—विद्रोही बन कर लूट-मार करने वाला।

मेवासो—मेवासियों का दुर्गम व छिपा स्थान।

मोटा-राजा—जोधपुर के राजा उदैसिंह की उपाधि या उपनाम। (शरीर में बहुत भारी और मोटे होने के कारण इस नाम से प्रसिद्ध होना कहा जाता है।)

मोदी—१. भोजनशाला की सामग्री के अधिकारी का पद। २. आटा दाल आदि बेचने वाला बनिया।

रढ-रांवण—१. राना इन्द्रवीर मोहिल का विरुद। २. रावण के समान दृढ़ और हठी वीर का विशेषण। ('रढरांण' इसका छोटा रूप है)

रवद—रौद्र लक्षणार्थ में मुसलमान का पर्याय। (ब. व. रवदां, रवदांण, रवदाइण, रवदायण, रवदायत, रवदाळ)

रसोईदार—रसोइया।

रांणा—१. करण रावल के पुत्र राना राहप से चली आ रही मेवाड़ के सीसोदियों की उपाधि। २. मारवाड़ के मालानी प्रान्त के गुढ़ा और नगर के जागीरदारों की

उपाधि। ३. छापर-द्रोणपुर के मोहिल शासकों को उपाधि। ४. राना. राजा। (सं० रांणाई)

रांणी—१. रानी, राज्ञी, राजा की पत्नी। २. राज्य की स्वामिनी।

रा—कच्छ और सोरठ के शासकों की उपाधि। (पूर्व समय में राजस्थान के जागीरदारों की भी 'रा' उपाधि होती थी। दे० अणखीसर कूप की देवली का शिलालेख, सं० १३४० वि.)

राईतन—१. अनेक राज्यों के राजा लोग। २. राज्य वर्ग।

राउ—दे० राव।

राजलोक—१. अंतःपुर, रनिवास। २. रानी। ३. रानियां।

राजवी—१. राजघराने के व्यक्तियों की उपाधि। २. राजघराने का व्यक्ति।

राजा—राज्य के स्वामी की उपाधि। २. नृपति। (सं. राजाई)

राठी—एक जाति जो राज्य की बेगार निकालती है। बेगारी।

रायजादो—१. राजपुत्र, राजकुंवर। २. विवाहादि लोक गीतों का एक नायक।

राव—१. मारवाड़ के शुरू के कुछ राठोड़ शासकों की उपाधि। २ भाटों की उपाधि। ३. राजा। ४. सरदार। (सं० रावाई)

रावत—१. छोटे राजाओं की उपाधि। (सं० रावताई) २, भील जाति।

रावळ—१. जैसलमेर के राजाओं की उपाधि। २. रावल बापा के पिता भोजादित्य से रावल करन की २९ पीढ़ी तक चित्तौड़ के शासकों की उपाधि। ३. मारवाड़ के जसोल और सिणधरी आदि मालानी के कुछ ठिकानों के जागीरदारों की उपाधि। ४. डूंगरपुर और वांसवाहला (बासवाड़ा) के रावल माहप से शासकों की उपाधि।

राहवेधी—दूरंवेश।

राहावणो—१. राजाओं और ठाकुरों की रखेलियों की संतान, रावणा लोग। (उसी राजा या ठाकुर के द्वारा भरण-पोषण पाने और उसके यहां ही रहने के अधिकार के कारण यह संज्ञा दी गई कहा जाता है)

रिख, रिखी, रिखीस्वर, रिष—१. हारीत ऋषि। २ ऋषि।

रूठी-रांणी—१. राव मालदेव की रानी उमादे भटियानी का स्वाभिमानी नाम।

रूपारास—पूर्व और आग्नेय के बीच की दिशा का नाम।

रौद—दे० रवद। (ब. व. रोदां, रोदांण, रोदाइळ, रोदायळ, रोदाळ)

रौद्र—दे० रवद। (ब. व. रोद्रां, रोद्राइण, रोद्रायण, रोद्राळ)

लंजो, लांजो—१. जैसलमेर के रावल विजयराव का विरुद।

२. राजस्थानी लोक-गीतों का एक नायक। ३. बहुत शौकीन।

लसकरी—कामरां की उपाधि।

लांघां-वलाय—राना रायमल के पुत्र पृथ्वीराज की अद्भुत वीरता का और एक ही दिन में टोडा (जयपुर) और जालोर (मारवाड़) जीत लेने के कारण एक विरुद अथवा विशेषण।

लागदार—कर वसूल करने वाला अधिकारी।

लूंटेरू—लूट-खसोट करने वाला व्यक्ति, लुटेरा।

वजीर—१. दासी पुत्र, गोला। २. राज्य का प्रधान पदाधिकारी।

वड कँवार—पूर्ण यौवनवती कुमारी।

वडारण—ऊंचे वर्ग वाली दासी।

वरतियो—१. तांत्रिक। २. जैन जती।

वसी, वसीवांन (वसी रो लोग)—१. जागीरदार की प्रजा के वे लोग जो कर-मुक्त होते हैं और जिन्हें विशेष सेवाएं देनी होती हैं। २. वे लोग जो अपनी सुरक्षा के लिये जागीरदार को कुछ विशेष कर देते हैं। ३. किसी जागीरदार की जागीरी या गांव में बसने वाली प्रजा।

वांकड़ो—राजा पृथ्वीराज कछवाहे के बेटे बलिभद्र का विरुद।

वातपोस—राजाओं के मनोरंजनार्थ कहानियें और ख्यात-बातें सुनाने वाला अथवा हांफारा देने वाला व्यक्ति।

वावसू—१. गुप्तचर। २ वायुवेग के समान भाग कर खबर लाने वाला व्यक्ति।

वाहग—१. गुप्तचर। २. दौड़ा करने वाला।

वाहरू—पीछा करने वाला व्यक्ति।

वाहाऊ—दे० वाहरू।

विचित्र—मुसलमान का लाक्षणिक पर्याय।

विजयशाही रुपया—जोधपुर के महाराजा विजयसिंह द्वारा प्रवर्त्तित एक रौप्य मुद्रा।

वैरागी—वैष्णव साधुओं का एक भेद।

वैरायत—१. वैर का बदला लेने वाला व्यक्ति। २. बदला लेने की खोज में रहने वाला व्यक्ति।

वोढो-रांवण—दे० ओढो रांवण।

वोहरो—१. ब्याज पर रुपये उधार देने वाला वणिक। २. एक मुसलमान जाति।

षोडश-महादान—भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, तांबूल, छत्र, गंध, माला, फल, शय्या, पादुका, गौ, सुवर्ण और चांदी—इन सोलह वस्तुओं का दान षोडश-महादान कहलाता है।

श्रीठाकुरजी गोकळीनाथ—दे० वसमों साळगराम गोकळीनाथ।

सगत, सगती—वह स्त्री जिसके शरीर में भटियाणी आदि किसी लोकदेवी का आवेश

होता हो। २. देव्यांशी स्त्री। ३. जोगिनी।

सतवादी—दे० सत्यव्रत।

सती—१. दानी। २. सत्यवादी। ३. पतिव्रता। ४. मृत पति की चिता के साथ जलने वाली स्त्री। ५. जौहर द्वारा जलकर प्राण त्यागने वाली स्त्री।

सत्यव्रत—सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का विरुद।

सर्मा—चित्तौड़ के शासकों के आदि पूर्वज विजयपाल शर्मा से वन शर्मा की ५८ पीढ़ियों को शर्मा उपाधि।

सवणी—शकुनी, शकुन-शास्त्री।

सहेली—१. दासी का एक प्रकार। २. साथिन।

सांमधरमी—दे० सांमभगत।

सांमभगत—स्वामीभक्त।

सांवत—१. वीरों में प्रधान वीर. सामंत। २. ठाकुर, सरदार।

सापुरस—भला आदमी।

साह—१. प्रतिष्ठित व्यक्ति। २. बादशाह.। ३. बुंदेलों के कुछ पूर्वजों की उपाधि।

साहणी—घोड़ों के तबेले का दरोगा।

साहिजादी—शाहजादी।

साहिजादो—शाहजादा।

सिद्ध—सिद्धि प्राप्त योगी।

सिद्धराव, सिधराव—अणहिलवाड़ा-पाटण के शासक सोलंकी जयसिंहदेव का विरुद।

सिरदार—१. राजपूत। २. जागीरदार, सरदार।

सीसोदिया—सीसोदा गांव में बसने के कारण मेवाड़ के रानाओं की उपाधि।

सुख—१. प्रेम, २. मेल-मिलाप, ३. नैरोग्य।

सुलतांण—१. बादशाह या नवाब की सुल्तान पदवी। २. बादशाह।

सूत्रधार—वास्तु शिल्प का विशेषज्ञ, वास्तुकर्मज्ञ।

सेठ—धनी या प्रतिष्ठित व्यक्ति की एक उपाधि।

सेलहथ—१ वीर पुरुषों की एक उपाधि। २. भालाधारी वीर पुरुष।

सेसू—गुप्तचर।

सोदागर—घोड़ों का व्यापारी।

सोनइया, सोनैया—स्वर्ण मुद्रा, सोने का सिक्का।

हलालखोर-खासो—१. बादशाह का खास एतबारी नोकर।

हांमूं—महाराना हमीर का साहित्यिक नाम।

हाकम—बादशाही जमाने का एक राज्य अधिकारी ।

हाळी—कृषक के यहां हल चलाने वाला नौकर, कृषि का काम करने वाला नौकर ।

हिंदवांणी—हिन्दू राज्य ।

हुजदार—१. बादशाही जमाने का एक प्रमुख राज्य कर्मचारी, उजदार ।

हुड—मैंढ़ा, घेटा ।

हुरड़वनो—विजयराव चूड़ाले के पुत्र देवराज का विरुद ग्रौर उपनाम ।

हेठवांणी, हेठवांणियो—१. अधीन कर्मचारी । २. अधीन पुरुष, परवश पुरुष ।

हेरू—खोज करने वाला कर्मचारी ।

परिशिष्ट ४

ख्यात में प्रयुक्त पुत्र शब्द के पर्याय व अपत्य प्रत्ययादि शब्द

अंग
अंगज
अंगोभव
अंगोभ्रम
अंसी
अभिनमो
आंणी
आतमज
उत
ऊत
ओत
कँवर
कळोधर
कुंवर
कुळचंद
कुळदीप
कुळदीपक
कुळधर
कुळधारक
कुळभांण
कुळमंड
कुळमंडण
छावड़ो
छावो
जायो
जोध
जोधार
डावड़ो
डीकरो
तण
तणै
तणो
दीकरो
धन
पाटोधर
पुत्त
पूंगड़ो
पूत
पेठ
बेटो
भ्रम
रो
लाडो
वंसधर
वत
वाळो
संभ्रम
साव
हुजाव
सुत
सुतण
सुध
सुवण

—•—

परिशिष्ट ५

ख्यात में प्रयुक्त पौत्र या वंशज के पर्याय व प्रत्ययादि शब्द

अभनमी
अभिनमो
कळोधर
कुळज
दुवो
पेट
पोतरो
पोतो
पोत्रो
बीजो
बीयो
वंसज
वंसोधर
संभ्रम
समोभ्रम
हर
हरो

परिशिष्ट ६

शुद्धि पत्र

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१		१	॥ दं० ॥	एक अक्षर-ब्रह्मवाची अपभ्रंश-परंपरा का मंगल-चिन्ह, जो मारवाड़ी भाषा का बिलीटो (वर्णमाला) के आदि में लिखा-पढ़ाया जाता है।
१		७	इछना	इंछना
१		२६	ब्राह्मण	ब्राह्मणों के
२		३	बलियां	बळियां
२		५	रहि नैं	रहिनै
२		६	पटोला	पटोळा
२		११	बेटो[22] हूं	बेटो हूं[22]
३		१८	चीतोड़	चीतोड़
४		३०	म	मैं
५		३	तयण	नयण
५		६	झालांवळी	झालांवाळी
६		६	जसक	जसकर
६		१५	चीरसर्मा	वीरसर्मा
१०		२०	पीढां	पीढयां
११		२०	देव राठासण	देवी राठासण
१२		२	अविचल	अविचळ
१२		७	वधियो	वधियो[7]
१३		६	महापनुं	माहप नूं
१३		६	घरांरी	घरां री
			पृ० १४ और १५ में उल्लिखित 'अजैसी' के स्थान 'जैसीह' होना चाहिये।	
१४		६	डेरांसूं	डेरां सूं
१४		६	गढ-रोहै	गढरोहै
१५		१७	खभणोर	खमणोर
१६		१	महियो	महिपो
१६		२	डूगररा	डूंगर रा
१६		२३	वहती	बस्ती
१६		२५	ी	ली

पृ. कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१७	२८	'असंख प्रवाड़ं-जैतवादी' (असंख्य युद्धों में विजयी) का विरुद प्राप्त करने वाला पृथ्वीराज, उसके बाप राना रायमल के जीवन-काल में ही मर गया ।	
१८	७	पारवतीरे	पाखती रै
१८	९	'सुणियो छै' के बाद पूर्ण-विराम नहीं है ।	
१८	२७	अक्रमण	आक्रमण
१९	२	धर	घर
१९	२९	राज्यधिकारी	राज्याधिकारी
२२		पंक्ति १२ 'महेस' और पंक्ति १३ 'जगमाल' के बीच '९ सगर' जोड़िये ।	
२२	२८	इस प्रकार सुधारिये और जोड़िये— 17. आधा दिया । 18. जिससे । 19. अपनी । 20. सहायता की ।	
२३	१७	दोहोतो	दोहीतो
२३	२१	ऊपर करै छै[19],	ऊपर करै छै,
२३	२७	१७ जैता का पुत्र	१७ रूपसिंह, जैता के पुत्र देवीदास का दोहिता ।
२४	२८	१६२९	१६३९
२५	१५	९ सबलसिंघ	१० सबळसिंघ
२५	१६	गांव ४ जालोररा कुरड़ासूं । दीया ।'''दीवो वस ।	गांव ४ जाळोर रा कुरड़ा सूं दिया ।
२५	२७	घास के निमित्त जो गांव थे उनमें से चार उसे दिये ।	कुरड़ा सहित जालोर के ४ गांव दिये ।
२७	३२१	सेंव मांखन	सैंव मांखण
२८	१३	काल	काळ
२९	४	मिलीयो	मिळियो
२९	११	जागीर कीयो	जागीर कियो
२९	१२	नीमच	मीमच
२९	१३	देवलियारो गड़ासिंघ	देवळिया री गड़ासंघ
२९	२२	गांउ	गाउ
२९	२६	10 जब्त	10 देवलिया के निकट
३०	७	मिलीया	मिळिया
३०	१२	काल कीयो	काळ कियो
३२	२३	पाल	पाळ
३४	२९	वरी	वर्रा ।
३५	३६	जावद	जावर

पृ.	कॉ. पं.	अशुद्ध	शुद्ध
३६	१३	उदैपुर कोस छपनिया-राठोड़ांरो उतन छै	उदैपुर सूं कोस''' छपनिया-राठोड़ांरो उतन छै
४०	२	दुरदास	दुरसवास (दुरगदास)
४०	१०	मार लांछां	मारलां छां
४०	१८	वाघोरा	वाघोर
४०	२०	भोरड़ा	भोरड़
४१	५	वरदाड़ो	वरवाड़ो
४३	१८	सारंग दे प्रोतांरो	सारंगदेश्रोतां रो
४३	२८	महल में	महल
४७	१	वलोल-कलोस	वलोल-कलोल
४७	६	खभणोर	खमणोर
४७	११/१२	मीरमी पहु नै	मीरमीपहुवै
५०	१६	रतसीरो	रतनसी रो
५०	२८	जगमाल कां पुत्र	जगमाल के पुत्र कला की बेटी हाडी
५३	३१	दुहरै	देहुरै
५२	२२	कोसाथळ	कोसीथल
५३	२६	रावघदे	राघवदे
५४	२२	ऊपर^{25} डाय	ऊपरड़ाय^{25}
५४	३०	ऊपर दाव=आक्रमण. करने वालों से	ऊपर वालों से
५६	१	तेरे	तरै
५६	१०	चढती ही नै	नै चढतां ही
५६	१९	वृढ़	हठ
५७	१	चावडांरा	चावंड रा
५७	३	चावडांरा	चावंड रा
५७	२१	छट	छूट
५९	२	थाप लियो	थापलियो
५९	१०	खूमांण	खूमांणै
५९	२६	हड़ो	हाडा
६१	१६	वेढ नै कीजं	वेढ न कीजै
६१	१९	आग	आगै
६२	४	बालीसा	बालीसो
६३	४	वे घमरी	वेघम री
६३	७	वाघारो	बाघारो
६४	१	विसेरिया-चाकर	विसोरियो-चाकर

पृ.	कॉ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
६४		१५	पीथा वाळो बाळियो	पीथा वाळो गांम बाळियो
६४		१८	म्हां मांरे	म्हां मांहै
६५		१८	फिर संका	फिर सकां
६७		२१	पंचाइण। रूपसीरो	पंचाइण रूपसीं रो
७०		१६	पछ सं	पछै सै[4]
७०		१७	रजूग्रात[4]	रजुग्रात
७१		२५	2 सत्कार	2 सत्कार होगा
७१		२८	टिप्पणी सं० 8 और 10 के बीच में सं० 9 इस प्रकार जोड़िये—'9 हम तुमको दोनों बासों में (जगहों में) नहीं रखेंगे।'	
७१		२९	शपथ	शपथ करके
७३		२५	4. प्रताप की घर में रक्खी हुई बनिये के स्त्री के गर्भ से	4. रावल प्रताप की खवास पद्मां बनियाइन के गर्भ से
७४		६	वांसवारलारो	वांसवाहळा रो
७४		९	'मांहो-माह' के ऊपर सं० 9 लगाकर आगे की सभी संख्याओं को एक-एक बढ़ाकर पंक्ति २३ में 'हासल' पर लगी अंतिम संख्या 18 को 19 समझें और टिप्पणी की अंतिम पंक्ति में 'गद्दी पर स्थापन कर' के पहले सं० 16 लगाकर '16 ननिहाल' को '17 ननिहाल', '17 महल' को '18 महलों'. और '18 राज-करा' को 19. राज-कर पढ़िये।	
७६		१८	मेळ दीनो	मेलदीन्हो
७६		१९	डीळ	डील
७७		६	ऊभो मेळनै	ऊभो मेलनै
७९		१३	तेतसी	तेजसी
८०		२६	चोरासीमालिक	चोरासी मलिक
८०		२७	चोरासी मालिक	चोरासी मलिक
८१		१८	वीठ	वीठो
८१		१९	डगरपुर	डूंगरपुर
८१		२३	कहेक	केहेक
८२		१०	डूंगरसूंघणी	डूंगर सूं घणी
८३		६	घरा	घरां
८३		२०	दया	दिया
८४		८	उवेचकिया	उवे चकिया
८४		२३	घर	घर
८५		१९	तासु	ता सु
८६		५	ठाड़	ठोड़

पृ.	कॉ.	प.	अशुद्ध	शुद्ध
८७		१४	कुळसिंघ	कुसळसिंघशु
८७		१८	भळेरो	भलेरो
८७		२५	पोन	पौन कोस में
८७		२७	की ओर	पूर्व दिशा की ओर
८७		२४	गड़ा	गड़ासंघ
८८		१	संघ	
८८		६	बड़ो इतवाय	वडो इतवार
९१		४	तठ	तठै
९२		४	ईणांरै	इणांरै
७५		१	वळायां	बलायां
९६		८	नाहररो	नरहर रो
९९		२१	दशहरा	दशहरा को
९९		२५	तव रहने के लिये	जहां रहने के लिये
९९		२५	भविष्य	भविष्य की
९९		२९	अरबी घोड़े	ऐराकी घोड़े
१००		६	घोड़ा	घोड़ा
१०१		१७	६ जव	६ जवहू
१०३		१३	कह्यो	कह्यो
१०३		२९	सो वरस पोहँचे मर जाना	सो वरस पोंहचे=मर जाय
१०४		१३	भावै नहीं	मावै नहीं
१०४		२८	करमेती तो भेजने के लिये तैयार है परंतु सूरजमल आने नहीं देता	वे तो बहुत ही (खुशी से) आ जावें परंतु सूरजमल आने नहीं देता
१०५		५	मोड़ारो वारहठ	गोड़ां रो वारहठ
१०६		२	लाख दे विदा कियो	लाख पसाव दे विदा कियो
१०६		८	'सुहांणो नहीं' पर सं० 7 पढ़िये। पंक्ति ९ में 'कुमया करै छै' पद 8 और 'कासूं वीठो ?' 9. इसी प्रकार सब में एक-एक बढ़ाकर पं० २२ में 'पात' पर लगी सं० 15 को 16 पढ़िये। पंक्ति २९ में '16 चारण' जोड़िये।	
१०६		१६	लखपसाव	लाख पसाव
१०७		२७	13 ऊंचे वृक्ष पर मचान बांधकर किया जाने वाला शिकार।	
१०८		६	रांणो कह्यो	रांणै कह्यो
११०		२०	आंरतवो	आंतरवो
११३		२	भाखरके	भाखर रै
११३		३	भाखरवाळारो	भाखर वळा रो
११३		६	वाघ-वाड़ी	वाग-वाड़ी

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
११३		१६	खीचियांरो । उतन	खीचियां रो उतन
११३		१८	घुंडवांणरा	गुंडवांण रो
११३		२६	19 मऊसै । 20 कोस पर घूलकोट	19 मऊ से ७ कोस पर घूलकोट...
११३		२८	21 गुंडगांव ।	20 गुंडवान ।
११३		२९	22 यही ।	21 यही । 22 नीचे ।
११४		१३	नांन	नांम
११४		२६	सेवज	सेंवज
११५		१५	खातखेड़ी	खाताखेड़ी
११५		१५	भील चक्रसेणी	भील चक्रसेण
११५		१७	वाघरो	वाघ री
११५		२६	11 जिसको भील'''करलिया	11 'मारली' एक गांव का नाम है ।
११५		२७	वाघकी	वाघ की
११५		२८	13 दोनों	13 'बेहु' एक गांव का नाम है ।
११६		१०	जीलवाढ़ो	जीलवाड़ो
११८		५	वीठ्ठ पना	वीठू पना
११९		२१	घावें	घावै
१२०		२	तापिया	तपिया
१२२			शीर्षक अत	अथ
१२२		३	सुणियो छैं । विखणनूं	सुणियो छै दिखण नूं
१२२		१५	पित्रावरण	मित्रावरण
१२३		१६	रोहड़ो	रोहड़ी
१२४		१९	कुंतरी	कुंतल री
१२४		२७	कुंतकी	कुंतल की
१२५		२२	'दुरात्मा बादशाह के' आगे की समस्त टिप्पणी का मैटर पृ. १२६ की टिप्पणी है ।	
१२६		९	दूह	दूठ
१२७		४	जगहरो	जतहर रो
१२७		९	राड	राठ
१३१		२४	चंपराय	चंपतराय
१३४		१५	बळाई	बलाइ
१३५	२	७	१४ कीतू	१४ कीतू[5]
१३५		२५	1 सोभा और सरणुवा दोनों पहाड़ों के बीच में ।	1 शोभा के पुत्र सहसमल ने सरणुवा के पहाड़ की खंभ में आबू से १० कोस पर नया शहर बसाया ।
१३६		२१	बगतरी	बगतर री

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१३८		९	वडा	वडो
१३८		१५	दोठो	दीठो
१३९		२९	विनय	विनय से
१४१		१६	वरकसो	वरकसी
१४१		१९	सूळ	सूल
१४१		२१	सूळ	सूल
१४१		२९	दिया	दिलवाया
१४३		३	रणधीरोत	रणधीरोत
१४३		१२	वाहमेर	वाहड़मेर
१४४		२	कोई	काई
१४६		१६	कह्यो	कह्यो
१५०		१५	सीसोदिया	सीसोदियो
१५१		२	खिसांण	खिसांणो
१५५		११	रावळा-घरां मांहे	रावळा घरां मांहे
१५५		२२	लेकिन विन था	लेकिन ज़ीवन के दिन शेष थे
१५८		९	ऊदो लखारो	ऊदो लाखा रो
१५८		२८	रावल सेखावत	रावत सेखावत
१६०		२६	नवसरा	नवसरो
१६३		२१	कुळथांणे	कुळथांणो
१६४		२५	सिवांणरो	सिवांणा रो
१७०		९	चोवोळ एकलवा वर	चोवो एकल वाड़ वर
१७०		१०	छांळ	छड़ा
१७०		१	लूट	लूट
१७१		३	हा कलियो	हाकलियो
१७१			शुरू की चार पंक्तियों वाले गीत का अनुवाद पृ. १७० की टिप्पणी की अंतिम तीन पंक्तियां हैं।	
१७२		२३	वे ही राव	वे भी राव
१७३		१२	झोररा	झोरा रा
१७४		२१	सीधणोतो	सीधणोतो
१७५	१	३	उंडवायिड़ो	उंडवाड़ियो
१७६	१	१५	झोररा	झोरा रा
१७६	२	१४	अकेली	आकेली

पृ० सं० १७६ के आगे पहली सं० १८६ तक के पृष्ठों की पृष्ठ संख्याएं गलत हैं, अतः इन नौ पृष्ठों में लगी पृष्ठ संख्याओं को दो-दो कम करके ठीक करलें।

पृ.	कॉ.	पं	अशुद्ध	शुद्ध
			पृष्ठ सं० १७७ और १७८ नहीं छपी हैं और सं० १८५ और १८६ दुबारा हैं। दुबारा वाली १८५ और १८६ संख्याएं यथाक्रम हैं।	
१७८	१		१ वागड़ियो। देवड़ारो उतन	१ वागड़ियां-देवड़ां रो उतन
१७९	२	२२	आहिचावो	अहिचावो
१८०	१	४	अहिचावो खुरदा	अहिचावो खुरद
१८०	१	१३	ओडवाड़िया। चारणांरो	ओडवाड़ियो चारणां रो
१८०	१	१४-१५	कासधरा। धधवाड़िया। खींवराजनूं	कासधरा धधवाड़िया खींवराज नूं
१८२		२७	खोसने की जगहमें गुप्त रूप से रख दीं।	खोसने की जगह में कटारें गुप्त रूप से रख दीं।
१८४		२०	असंभव	असंभ
१८४		२८	टिप्पणी सं० १६ इस प्रकार पढ़िये— 'सिरोही के टीकायतों की वंशावली के कवित्त-छप्पय आसिया माला के कहे हुए।'	
१८६		२८	12 जोरावर।	12 १. जोरावर। २. चौहान-क्षत्री
१८७		२०	दूट	दूठ
१९०		१९	कीकम्म	वीकम्म
१९१		२५	महारोर वै	महा रोरव
१९२		१८	दरगहि	दरगह
१९२		२२	पनोसीह थळिरो	पनो सीहथळ रो
१९२		२७	विरुद्ध	विरुद
१९३		१४	धळी	बळी
१९३		२२	चांपा सीधली	चांपा सींधल
१९३		२७	सिवाने	सिवाना
१९४		१३	रेवड़े	रेवतड़े
१९८		५	छांडे नै	छाडनै
१९८		२६	नागा के	नगा के
१९९		२१	जोगोवास	जोगीवास
२०१		७	विसलरो	वीसळरो
२०४		९	गढरो है। जाळोर रै	गढरोहै जाळोर रै
२०५		२६	मेथो	मेघो
२१७		७	कहिया तासु	कहिया ता सु
२१७		१६	जै	जे
२१९		१४	मीरगभरू	मीर गाभरू
२२०		१	रावळीजी	रावळजी

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२२०		३	रावळीजी	रावळजी
२२०		८	सूळ	सूल
२२०		१९	आपें	आंपे
२२१		१०	बरबर	बराबर
२२२		१४	रांण	रांणं
२२४		१७	१ लिखमण सोमत	१ लिखमण सोभत
२२७		८	वढ़	वंढ
२२७		२१	मंहता	मुंहता
२३०		२१	मोहळ	मोहल
२३१		५	खि	रिख
२३१		१८	भारवर	भाखर
२३२		३	चंवरीको	चंवरी को
२३४		१४	विहानूं	विहारी नूं
२३७		२३	कान्हसिंघ ज्ञैतसीयोतरै	कांन्ह, सिंघ जैतसीओत रै
२४०		१	सझाड़ो	संझांणो
२४०		१९	अमो	अभो
२४०		२१	अमो	अखो
२४१		९	भारवर	भाखर
२४३		२३	भींवा का बेटा राणा का	भींवा का बेटा राणा
२४५		११	लोद्रां चीलू आंघ	लीद्रां ची लूआंघ
२४५		२२	टिप्पणी सं० 18 इस प्रकार पढ़िये— इनका निवास जालोर परगने का सेणा एक छोटा सा परगना है ।	
२४६		४	तासु	ता सु
२४६		७	निपठ	निपट
२४६		१३	बाहर	वाहर
२४७	२	१७	नवमण	नवघण
२४९		२७	जैतमाल की बेटी को	जैतमाल की बेटी पत्ती को
२५०		२	खेढ़ो	खेटो
२५०		१३	मांणकरा व	मांणकराव
२५१		१३	जाहल	जायल
२५३		६	वरि हा हा संकें	वरिहाहा संकै
२५६		१०	साथ रैनें खीचियां	साथरै नै खीचियां
२५६		१९	वारसां	वरसां
२५८		१०	गाडरने	गाडर नै

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२६०		६	तिांणनूं	तिणांनूं
२६१		२८	बीस वर्ष तक करण	बीस वर्ष तक लघु करण (करण-गैहलो)
२६५		८	वड़ो	वडी
२६५		१६	चूंक लियो	चूंकलियो
२७१		४	पाटख	पाटण
२७२		१	प्रिथीरो रूप	प्रिथी बैर रो रूप
२७२		१२	उमरणी	उमरणी
२७२		१७	ढांणियो	ठांणियो
२७३		२१	देवताए	देवताग्रां
२७५		४	पाछै	पछै
२७६		२२	वडा	वडो
२७७		२	मुगळे	मुगलै
२७७		६	सिघपुरथी कोस ११ बिंदसरोवर	सिघपुर थी कोस ॥० [आधो] बिंदसरोवर
२७९		६	वलूहुळ	वलू हुल
२८२		१७	गाडियो समूह	गाडियों का समूह
२८३		१७	तरै सो नाहरखांन	तरै सो॥ नाहरखांन
२८४		१७	इणेसो रायमल	इणे सो॥ रायमल
२८६		२१	राणो ग्राप पगे लागो	रांणो ग्राय पगे लागो
२८७	१	२४	सखासु	सरवासु
२८७	१	२५	व्रहदथ	वृहदश्व
२८८	१	१४	संघदीप	संघदीप
२८८	२	११	प्रछेमघन्वा	प्रछेनघन्वा
२८९	१	५	व्रयदर्थ	वृहवर्थ
२८९	१	१८	ग्रंतरिस्य	ग्रतरिष्य
२८९	१	२२	वरवी	बरही
२८९	१	२४	रांणजराय	रांणकराय
२८९	१	२५	सजोसराय	सुजसराय
२८९	२	२	सुघोन	सुघोन
२९०	२	२	जांनरदेव	जांनड़देव
२९०	२	३२	'चत्रभुज' ग्रौर 'भीखो' के बीच 'रांमसिंघ, कल्यांण, प्रतापसिंघ ग्रौर रूपसी' ये चार नाम ग्रौर हैं।	
२९०		२५	भींवसी, राजा वो मासरे हुवो	भींवसी, राजा मास २ हुवो,
२९०		२७	दूलहदेवने अपने तुंवरको ग्वालियर दे दिया।	दूलहदेव ने अपने भानजे तुंवर को ग्वालियर दे दिया।

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२६१	१	५	लल्हैदी	सल्हैदी
२६३		१८	भोजारी	भोज री
२६६		२५	सिवब्रह्मा	सिवब्रह्म
३००		११	हुंदायल	हुंदाळ
३०१		२१	राज जगनाथ	राजा जगनाथ
३०२		६	मुंवड़ा	मुंहडा
३०२		७	सलेहजी	सलेहदी
३०७	१	१५	लदांवण मांहै	लदांणा मांहै
३१०	२	२४	राजरै	राजा रै
३१३	१	१२	मोहारि	मोहारी
३१४		२७	रामके	राम ने
३१५	२	११	२३ वूहो ४। सुरजनरा।	२३ वूवो। २४ सुरजन राव।
३१६	१	१५	वाघवत	वाघावत
३१७	२	१० ११	मारियो २। रतने दासावतरा	मारियो। १८ रतनो दासावत।
३१८	२	१६	मनोहरपुर गांव	मनोहरपुर रै गांव
३१८		३०	तकिया मनोहरपुर के निकट पहाड़ी पर बना हुआ है।	तकिया मनोहरपुर के ताला गांव में पहाड़ी पर बना हुआ है।
३१९	१	१८	बंठास	वंगस
३१९		२४	अमरपुर	अमरसर
३२०	१	१४	जैतसिंघ अग्रसेणरो	जैतसिंघ उग्रसेण रो
३२०		२९	रसायलने	रायसल ने
३२३		२६	खोह	खोहरी
३२४	अंतिम		तब शाहपुरा पट्टे में दिया था। इसकी मा स्वालख की (नागौर परगना की) जाटनी था।	तब शाहपुरा पट्टे में दिया था। बलभद्र नारायणदासोत आया तब उसने मारा। इसकी मा स्वालख की (नागौर परगना की) जाटनी थी।
३२०	१	७	बटा	बेटा
३३५		८	मारवारो	मारवां रो
३३६		२६	थी	था
३४६	२	१७	घावै	घावै
३४९		३	घररा	घर रा
३४९		१८	आघीसर	साधीसर
३४९		२४	लना नहीं आता	लेना याब नहीं आता

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
३५०		१	मैराज	मेहराज
३५०		४	हूं मैराजनूं मराइस हेवै कटक खांचियो।	हूं मेहराज नूं मराइस। हेवैं कटक खांचियो।
३५०		९	बोलाऊ	वाहाऊ
३५०		९ १०	सोना- तरा दैणां कबूल किया।	सो नातरा देणा कबूल किया।
३५०		११	जांभवा घोड़ैरो गुढ़ो	जांभ वाघोड़ै रो गुढो
३५०		१६	सोवत	सोबत
३५१		१२	हरभमटी	हरभम ही
३५१		१३	गार	गोर
३५१		१९	विकूं कोहर करमसियोत मारियो	वीकूंकोहर केहर करमसीओत मारियो
३५२		८	राधो	राघो
३५३		१३	रूंणोचा	रूंणेचा
३५५	१	२२	चोप	चांपो
३५७		२०	तेगियां, तिलक	तेगियां-तिलक
३५९	२	१०	गांगारा	गांगा रो
३५९	२	१३	टोकं	टीकै
३५९	२	२०	दासात मारियो	दासोत मारियो
३६०	१	१३ १४	ऊदो हमीररो हमीर, थिरो अवतारदेरो।	ऊदो हमीर रो। हमीर थिरा रो। थिरो अवतारदे रो।
३६०		२७	हमीर और थिरा अवतार-देव के बेटे।	हमीर थिरा का और थिरा अवतारदे का।
३६५		६	पाकररी	पारकर री

भाग २

१		११	बैसणा	बैसण रा
१	२	२२	पीरोजशाह	पीरोसाह
२	२	७	रूपसी,जेसळमेर गांवका छे।	रूपसी, जेसळमेर रै गांव काछै।
२	२	१०	ऊरगो	ऊगो
२		२५	जैललमेर	जैसलमेर
३	२	२	रावळ राजरा पोतरा	रावळ मूळराज रा पोतरा
३		२०	तांणुकोट	तणूंकोट
४		२	खालनांरी	खालतां री

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
४		५	ऋरो	क्रूरो
४		११	वासणीपी	वासणपी
४		१७	मालगाडो	मालागड़ो (मालगड़ो)
४		१८	टीवरियाळो	टावरियाळो
४		२१	१ कीलो डूंगर। १ खवासरो	१ काळो डूंगर। १ खवास रो गांव
४		२२	१ गजिया गांव।	१ गजियो।
४		२४	उनावा	उनाव
५		११	थुळाया	थूळिया
५		१४	मुहारारै	मुहार रै
५		१६	भोग अवै	भोग आवै
६		१२	नेगरड़ो	तेगरड़ो
६		१३	आरम	आरंग
६		१७	भूण कांमळांरो	भुणकमळां रो
६		१७	वहोसतोय	वहो सत्तां रो (?)
६		२०	संमत १७००	संमत १७२०
७		८	रु० १५०००)	रु० १५००)
७		९	वावरा करी	वाव रा करि
७		२४	लिखी जाने वाली	ली जाने वाली
८		७	रु० ३१००)	रु० ३१०००) री ठोड़
८		९	म० २०००)	म० २००००)
८		१०	म० १०००)	म० १००००)
८		१५	मुंहारा	मुंहार
८		१६	खडाळा	खडाळ
८		१८	दिसै	विसी
८		२२	खांड़र	खाडाळ
१०	१	१५	अभाहरिया	अभोहरिया
१०		२८	वींहाड़ा	वींठाड़ा
११		१	चीभोतो	वींभोतो
११		२३	बाप	वाप
११		२६	नामोंकी शाखाएं	नामों की इतनी शाखाएं
१२		१	बापसूं	वाप सूं
१२		४	बाप। बावड़	वाप। वावड़ी
१२		१५	नीबलायां	नींबाळिया
१२		१६	भूका	भूखा
१२		१४	पोहड़रा	पोहड़ां रा

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१३		१	नाहवार	नहवर
१३		५	मालो	माळी
१३		१२	बोलायो छै	वाळियो छे (वळियो छै)
१४		१	मारण	मारणा
१५		२	जसल	जेसळ
१६		१०	भखछ	भरवछ
१७	२	३	लणोट	तणोट
१७		२९	हु ककर	कहु कर
१८		४	विजैरावनूं	विजैराव तूं
१८		६	वरहाहा	वरिहाहा
१९		१२	वरहाहांरा	वरिहाहां रा
१९		२८	वरहाहांरी	वरिहाहां री
१९		२६	भाइयों ने पंक्ति में से	भाइयों ने रत्न को पंक्ति में से
२५		२७	लांघ	लांप
२९		२४	तब अपनी अथसे इतितक	तब अपनी बात अथ से इति तक
३१		३	वावसूता	वावसू ता
३६		१०	ऊपाड़े	ऊ पाड़े
३७		५	सहस बीस हुण सुवग सद्द ढोलां सम चलत	सहस बीस साहण सुचंग सद्द ढोलां सम चालत
३७		८	खळ हुण	खळहळ
३८		१६ घणो, १७ सारव		घणी साख
३९	२	१४	तेजसी वडो	जैतसी वडो
३९		२१	राघळ लखसेन	राघळ लखणसेन
४१		१	निर्सींगड़ी गांवरै	सु तिसींगड़ी गांव रै
४१		२	नीसरियो	नीसरिया
४२		१३	मंडळ परै	मंडळप रै
४२		१७	सोनगरी सेझवाळो	सोनगरी रो सेझवाळो
४३		१६	घातण लागी	घातण लागा
४४		१३	कंवरो सत्र	कंवरां-सत्र
४६		१	सिघारै	सिधारै
४६		२	तरै कोड़ी	तेरै कोड़ी
४६		१७	रमण घणी	रमण री घणी
५१		१७	उबार राखो[1]	उबार राखो[२४]
५१		२३	खाट में लेकर निकल गया	खाट में डाल और लेकर निकल गया

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
५१		२७	तुम हमारे धर्म-भाई हुए थे	28 तुम हमारे धर्म-भाई हुए थे
५३		२७	धरतीको लोट आया	धरती को लोटा लाया
५४		२०	बांसाथी	बांसा थी
५४		२०	घोड़ांरो	घोड़ां रो
५६		२४	हाथीकी	हाथी का
५६		२५	होनेकी	सोने की
५८		१९	सातळ सोह हमीर दे	सातळ सोम हमीरदे
६७		१३	च्यारां हीरा	च्यारांही रा
६७		२९	घड़सीने नमाज पढते हुए	घड़सी, नमाज पढ़ते हुए
६७		३०	तलवार से सिर	तलवार से उसका सिर
६९		११	जुथांहरा	जु थांहरा
७०		३	लणग	लूंणग
७१		७	मुकालवै (बलै)	मुकालवै
७२		८	दरगाहस	दरगाह सूं
७४		१४	जोगी	जोगो
७६		१८	केहरो	केहर रो
८०		२९	बे ॥	बेटा
८१		१८	गांगारा	गागा रो
८७		१०	एकवर	एकर (एक वार)
८९		१९	साभ्रत	सोभ्रत
९२		१७	दोहोतो	वोहीतो
९४		४	पतियो	तपियो
९६	१	२५	पाखती	पारवती
९७	१	७	सळीवै	सीलवै
९७		२२	सोळवेकी	सीलवे की
९८	१	१३	रावळ कलारी बेटी	रांमकंवर रावळ कला री बेटी
९८		२५	बेटी भीमने	बेटी रामकुंवरि को भीम ने
१०३		२८	टोहिया	टेहिया
११६		१३	घणो	घणी
११७		१९	मची	मोच
१२९		३	सांमीदास	सांमदास
१३२		७	बल्	बलू
१३७		८	चाच	चाचो
१३९		२७	कान्ह मानसिंह का बेटा	मानसिंह कान्ह का बेटा
१४०		१७	बुधरो	बुधेरो

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१४०		२०	टोको	टीको
१४२		२२	मेलूरो	मेळू री
१४३		३	आको	अको
१४५		२	जोगी	जोगो
१४५		८	हमीरार	हमीर रा
१४८		१	रूपसोयात	रूपसीग्रोत
१५१		२०	रायमत रांणावत	रायमल रांणावत
१५६		२२	सिंघलोंके	सींघलों के
१५९		१०	अजळवास	अचळवास
१६३		२८	फलोधीम	फलोधी में
१७२		१५	बुखटो	बुरवटो
१७३		२८	गांव दे दिया था।	गांव दिया था
१७७		२६	चिह्न	चिह्न
२१३		६	म्हेजांमनूं	म्हे जांम नूं
२१५		१७	आहूर	आहूठ
२१५		१९	सुतन बंभ वंस सम मीढबं,	सुतन बंभ वंस सम मीढिजै माल सुत,
२१५		२३ २४	हेतुवां अलेखं खेंग देखं गहर वडो, लोहड़ां वडम आंक वळियो ।।४।।	हेतुवां अलेखे खेंग दे खेंग हुर, वडो लोहड़ां वडम आंक वळियो ।।४।।
२१६		१७	घाघांसूं	घोघां सूं
२१६		२०	भाद्रसर	भाद्रेसर
२१६		२५	20 नाम पर। भाद्रेसरको	10 नाम पर। 11 भाद्रेसर को
२१७		२२	चुजु जाइ (?)	जु जाइ,
२१०		१३	मांडो	माडां
२२०		२०	जेठवो, भीम, काठी, हा ज़ो, वाढेल, भांण	जेठवो भीम काठी हाजो, वाढेल भांण
२२१		१५	घोणोद	घीणोद
२२२		६	आयी	आयो
२३१		२३	टिप्पणी 6 इस प्रकार पढ़िये—	

जिस फूल से बाड़ी सुगन्धित थी, वह सिधा गया है। हे लाखा महराण! तेरे बिना अब वह सिंध सूनी है, तू लौट आ।

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२३५		८	बाळ	बाळ
२३६		२	तिण ऊनड़रे	तिण समै ऊनड़ रै
२३६		१३	तो सत बोलै छै	ऊ तो सत तोलै छै
२४१		१७	मांगी	मांग

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२४२		२०	सिंधुरी साईयां	सिंधु रीसाईयां
२४४		शीर्षक	जसा धवळोत	जसा हरधवळोत
२४८		१२	आणी	अणी
२५२		२६	शत्रदल	शत्रुदल
२५३		१९	आया। तळाव	आया तळाव
२६४	१	४	गोमळियावास	गैमळियावास
२७९		२७	मोहिलों को	गोहिलों को
२८५		१९-२१	टिप्पणी तनुकृत समझें पृ. २८४ में आ चुकी है।	
२९९		१२	जोयनै	जायनै
३०४		१९	वीरभजी	वीरमजी
३०८		३०	भारा=घासका बड़ा भार, बंडल	भारा=घास का एक परिमाण
३११		८	आयन	आयनै
३१५		१४	हुसो	हुसी
३१७		२७	ऐसी चली कि। उस स्त्रीको	ऐसी चली कि उस स्त्री को
३१९		१९	ढाढ	ढाढ़ी
३२३		५	ऊठे	उठे
३२३		१०	गोगाजीने	गोगादेजी ने
३२९		२६	बठलाया	बिठलाया
३२५		१२	धोड़ारी	घोड़ा री
३३६		२३	चंडाजीने	चूंडाजी ने
३४२		१७	जोध	जोधं

भाग ३

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	विचारयो	विचारियो
८	१४	विसिलि	दिसिली
११	७	पहोड़ो	पहोड़ो
१४	२५	दशमांस	दशमांश
३१	१५	बटी	बेटी
३३	१४	मात्रे हीसूं	मात्रेही सूं
३४	१०	देवरो	देवराज रो
३६	१६	काम्हां	कन्हां
५६	२९	।वशाह	बादशाह

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
६०		१०	आंनैर	आंनै रै
६०		१७	थोरो	थोरी
६१		११	पाबूजो	पाबूजी
६२		१३	संकळपो	संकळपी
६२		१६	तैरो	तैरी
६३		१७	आदमो	आदमी
६४		२०	लेणो	लेणी
७५		८	दीमाह	बीमाह
७६		११	जोवै	जीवै
८२		२	बोलाड़ै	बीलाड़ै
९२		१३	ससक	ससकै
९४		१७	कह्यी	कह्यो
१०३		२९	महने	हमने
१२१		२	भी हांडी चाटी	भली हांडी चाटी
१२१		१२	दीठो जाईयैरे जे	दीठो—जा ईयेरै, जे
१२१		१७	भोमता मांनो,……न छै	भो मतां मांनो,……न छै ?
१२१		१९	धिक्कार है रे भावेवाला !	धिक्कार रे भावेवाला !
१२१		२०	अच्छी हंडिया चाटी रे !	अच्छी हंडिया चाटी !
१२१		२४	लिकला	निकला
१३२		१	रिणधोरजी	रिणधीरजी
१३२		११	सोनगरान	सोनगरा नूं
१३५		६	तोमरे	तो मरै
१४४		१२	तहरां	ताहरां
१४४		१३, १४	आव, मांचें पण सूय ।	आव, मांचे सूय ।
१५६		५	इण सौंको	इणसौं को
१६९		७	रढवांवण	रढ रांवण
१७३		२३	खेड़चा	खेड़ेचा
१७८	१	२०	अजमंजस	असमंजस
१७९	१	२३	वूहववल	वूहवूवल
२०१		२८	दूट गये श्र राजा	दूट गये और राजा
२०७		३२	प्रकाशित ह	प्रकाशित हो
२०८	१	९	माहेणसिंघजी	मोहणसिंघजी
२२६		२५	कणाणा	काणाणा
२२९		१३	धांधूसर	धांधूसर

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
२३१		७	वैणारीतै	वैणातै री
२३३		१	पड़िहारांरी	पड़िहारा री
२३९		१४	सजन	साजन
२४१		७	विगावो	विगोवो
२४७		२६-२७	कुंवर पृथ्वीराजने ... लड़ाई लड़ी।	राणा रायमल के बेटे पृथ्वीराज से बड़ी लड़ाई लड़ी।
२४८		१५	दीघ	दीघी
२५५		१३	बहेलवो	बहेलवै
२५६		२०	गोयामणाके	गोयाणा के
२६५		४	मळैजीरै	मेळैजी रै
२७७		४	चत्र तीरथ	चक्र तीरथ
२७७		१२	चित्र (?) तीर्थं	चक्र तीर्थं
२८८		१०	रुपिय	रुपियों
२८८		२५	सगतावत	सांगावत
२९३		६	गोळिर्यैसं	गोळियै सूं

भाग ४

नामानुक्रमणिका

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
३	२	५	सांवत ओत	सांवतसीओत
४	१	२६	अड़माळ	अड़माल
४	२	२५	अनुरुघ	अनुरुध
५	१	१६	पियो रो	पियोरो
७	१	११	आंबा	आंबो
७	१	३०	आपमलसूरार	आपमल सूरा रो
१३	१	१६	त.	तीं.
१३	२	१६	करमसा	करमसी
१५	१	१५	कश्यप	कस्यप
१५	२	११	४०, ४१, ४२	कान्हड़दे रावळ ह्र. ४०, ४१, ४२
१९	१	२३	कल्हो	केल्हो
२०	२	२४	खांत खांनो	खांनखांनो
२४	२	२९	गोपादासळ	गोपाळदास
२५	१	२३	८८ के पहले 'ह्र.'	
३७	१	३४	चरड़ी	चरड़ो
२७	२	१४	चांवसे	चांवसेह

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
३५	२	८	जैब्रह्म	जैभ्रम
३६	२	२८	बूहा	बूवा
४१	१	२२	वळदत	वळपत
४६	१	२६	घुघळियो	घुंघळियो
५२	१	२४	गोवा रो	गोदारो
६३	१	१३	भोजा दत्य	भोजादित्य
६३	२	१	भोपन	भोपत
७७	२		अंतिम २०९ के पहले 'वू.'	
८१	२	१४	बोड़ो	बोड़ा रो
८४	१	२६	वतजांगदे	वरजांगदे
८५	२	११	वाघो	बाघो
८८	१	२८	वीदो राव	बीदो राव
८९	१	८	वीरमदे राय	वीरमदेव, राव
१०१	२	३५	सुरथ	सुरथ
१०२	२	२१	बालासो	बालीसो
१०३	१	१३	सूरसिंह	सूरसिंघ
१०९		७	पुरुश	पुरुष
११४	२	५	वीकानरी	वीकानेरी
११५	२	३	रांयकंवर	रांमकंवर
११५	२	१९	महासिंघ री रांण।	महासिंघ री रांणी
११७	१	६	सोढ	सोढी
१२०	१	८	त.	ती.
१२७	२	२२	खूहड़ा	खूहड़ी
१२९	२	३२	घणोल	घणोली
१३२	२	१५	जांझोरो	जांझोरो बाभणां रो
१३६	२	१३	तिलायला	तिलायली
१५२	१	७	मेरवाड़ो वड़	मेरवाड़ो वडो
२६७	२	७	घांणरा-रो-घाटो	घांणेरा-रो-घाटो
१६८	२	३२	मागरा	मगरा
१६८	२	३३	बींबलियो	नींबलियो
१७५	१	२१	थाळ लाग	थाळी-लाग
१७७	२	७	मऊ-दुष्काल (पीड़ित प्रजा)	मऊ (दुष्काल पीड़ित-प्रजा)
१८२	२	३२	गोगादेनी	गोगादेजी
१८३	१	१०	चं	चंद्र

पृ.	कॉ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
			पद विरुदादि	
१६५		१	ओरंगजेव रा विरुद	औरंगजेब का विरुद
१६५		६	इद्र	इंद्र
१६६		२७	काल	काले
२०७		३	जलन	जलने
			शुद्धि पत्र	
२१०	१	१	अभनमी	अभनमो
२११	२	२	मारवाड़ी भाषा का	मारवाड़ी भाषा की
२१५	१	७	बड़ो इतबाय	बड़ो इतबाव
२१५	२	१	कुसळसिघशु	कुसळसिंघ
२१७	२	१५	महा रोरव	महा रोरवं
२२४	२	२७	सेभ्रूवाळा	सेभ्रूवाळो
			भूमिका	
३		१	एतिहासिक ·····बहुत	ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत
५		१७	५'	५
१२		२२	यद्य	गद्य
१३		१३	जवादि; जल्हर (जलकीड़ा)	जवादि-जलहर (जलक्रीड़ा);
१३		२०	राजनै तक	राजनैतिक
१३		२१	दिभिन्न	विभिन्न
१६		७	वशावलियां	वंशावलियां
२०		१५	स्वासी । द्रोह	स्वामी-द्रोह
३९		२४	बहुतश्रुत	बहु-श्रुत